20 सितंबर, 2023 ✯ वर्ष 32, पृष्ठ संख्या 60, अंक-9

राजस्थान सुजस

गांधी दर्शन का मर्म

सेवा ही कर्म
सेवा ही धर्म

वीर तेजाजी पशु मेला

डीडवाना - कुचामन जिले के परबतसर में हाल में आयोजित वीर तेजाजी पशु मेले में प्रसिद्ध नागौरी नस्ल के बैल, मारवाड़ी ऊंट एवं घोड़ों के साथ भेड़-बकरी भी बड़ी संख्या में बिक्री के लिए आए। हर साल आयोजित होने वाले इस पशु मेले में राजस्थान के अलावा पड़ोसी राज्यों खासकर उत्तरप्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब से बड़ी संख्या में पशुपालक व व्यापारी आते हैं। मेले में प्रदर्शनियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम और पशु प्रतियोगिताएं भी आयोजित होती हैं।

आलेख : **राकेश कुमार ढाका**
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

छाया : **सुजीत पाल**

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान का मासिक

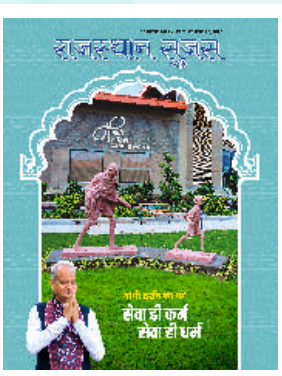

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तम शर्मा

संपादक
अलका सक्सेना

सह-संपादक
डॉ. रजनीश शर्मा

उप-संपादक
आशाराम खटीक

सहायक संपादक
महेश पारीक

आवरण छाया
राजेन्द्र शर्मा

राजस्थान सुजस में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने एवं आंकड़े परिवर्तनशील हैं। आवश्यक नहीं कि शासन उनसे सहमत हो। सुजस में प्रकाशित सामग्री का विभाग किसी भी रूप में उपयोग कर सकेगा।

ग्राफिक डिजाइनिंग
रेनबो ऑफसेट प्रिंटर्स

संपर्क
संपादक
राजस्थान सुजस (मासिक)
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग
सचिवालय, जयपुर-302005
मो. 94136-24352, 80940-88884
e-mail
editorsujas@gmail.com
publication.dipr@rajasthan.gov.in
Website
www.dipr.rajasthan.gov.in

वर्ष : 32 अंक 09

इस अंक में

सितंबर, 2023

05

साक्षात्कार

25

Gandhian Literature

30 चंबल रिवर फ्रंट

लोक जीवन	2
संपादकीय	4
चंपारण सत्याग्रह	8
महात्मा गांधी और पत्रकारिता	13
बातचीत	16
ट्रस्टीशिप का सिद्धांत	18
महात्मा गांधी का वैश्विक प्रभाव	20
राजस्थान की गौरवमयी गाथा	22
गांधीजी की वर्तमान प्रासंगिता	28
गांधी चिंतन के संस्थान	32
गांधी सद्भावना सम्मान	34
गांधी वाटिका	36
महात्मा गांधी सेवा प्रेरक	37
राजस्थान मिशन 2030	38
वंचित वर्गों का विकास	44
सामयिकी	46
पर्यटन दिवस	56
हिंदी दिवस	58
धरोहर	59
तब और अब	60

इन्दिरा रसोई योजना (ग्रामीण)

40

कामधेनु पशु बीमा योजना

42

राजस्थान सुजस के आगामी अंक के लिए मौलिक, अप्रकाशित सामग्री भिजवायें।
कृपया अपने आलेख एवं फोटोग्राफ सम्पादक को e-mail : editorsujas@gmail.com पर अथवा डाक से भेजें।

संपादकीय

प्रेरणापुंज हैं गांधी जी का दर्शन

महात्मा गांधी एक युगपुरुष थे। उनकी जीवन दृष्टि पूरी दुनिया के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। शांति और अहिंसा के साथ उनके सर्वधर्म समभाव, सर्वधर्म सद्भाव और वसुधैव कुटुम्बकम विचारों ने भारत के साथ पूरी दुनिया के लोगों को प्रभावित और प्रेरित किया है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दलाई लामा, नेल्सन मंडेला, अब्दुल गफ्फार खान, मदर टेरेसा, आंग सान सू की, पोलैंड के लेक वालेसा आदि ने अनेक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में महात्मा गांधी की विचारधारा का उपयोग किया है। उनके जीवन और कार्यों पर सैंकड़ों किताबें लिखी गई हैं और उनके लेखन का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनका जीवन और दर्शन आज भी अनगिनत सरोकारों को प्रेरित और प्रभावित कर रहा है।

एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में उनका मार्गदर्शन निरंतर हमारे साथ है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सोच के अनुरूप अंतिम व्यक्ति को ध्यान में रखकर राज्य सरकार अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रही है। प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम, राजस्थान न्यूनतम आय गारंटी अधिनियम, गिग वर्कर्स के कल्याण के लिए कानून, गांव और शहर के लिए इन्दिरा रसोई, सामाजिक सुरक्षा पेंशन जैसी अनेक पहल की हैं जो गांधी जी के समाज के पिछड़े वर्ग के लोगों के उत्थान के प्रयासों के अनुरूप हैं। शांति और अहिंसा विभाग के गठन के साथ गांधी वाटिका और महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंसेज की स्थापना महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन से परिचय के सांस्थानिक प्रयास हैं।

हाल में राज्य सरकार ने पशुपालकों के लिए मुख्यमंत्री कामधेनु पशु बीमा योजना के तहत प्रति परिवार दो दुधारू पशुओं का बीमा शुरू किया है। प्रदेश में स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की तलाश और निवेश के प्रोत्साहन के लिए राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति-2023 तैयार की गई है।

राजस्थान सुजस का सितंबर, 2023 का अंक महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन पर केंद्रित है। गांधी जी ने राजनीति, समाज, अर्थ, धर्म आदि क्षेत्रों में जो आदर्श स्थापित किए उन्हें अपने जीवन में भी उतारा। आशा है पाठक भी उनके विचारों और मूल्यों को आत्मसात करने की कोशिश करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

(पुरुषोत्तम शर्मा)
प्रधान संपादक

साक्षात्कार

मानवता के लिए गांधी जी के संदेशों का प्रसार जरूरी

राजस्थान सुजस के महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन पर केंद्रित विशेषांक के लिए
मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से
जनसंपर्क अधिकारी सुरेन्द्र कुमार सामरिया की
विशेष बातचीत के प्रमुख अंश ...

> परस्पर अविश्वास और तनावपूर्ण माहौल का समावेश सदियों से हर तरह की विश्व-व्यवस्था में रहा है। मौजूदा समय में भी विश्व के अनेक देशों में युद्ध, अशांति, आतंकवाद, हिंसा और कट्टरता की घटनाएं घटित हो रही हैं। हिंसा के नए रूपों और साधनों से पूरी मानवता के लिए खतरा पैदा हो गया है। ऐसे में केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अहिंसावादी दर्शन ही सर्वत्र शांति के आदर्श को स्थापित करने में मार्गदर्शन कर सकते हैं। राज्य सरकार भी इसी सोच के साथ प्रदेश के सर्वांगीण विकास और शांति कायम रखने के लिए प्रतिबद्धता से कदम बढ़ा रही है।

राजस्थान के चहुंमुखी विकास में गांधी दर्शन किस तरह अपनी भूमिका निभा रहा है?

शांति एवं अहिंसा की राह पर ही राजस्थान का चहुंमुखी विकास किया जा रहा है। अहिंसा के बल पर महात्मा गांधी ने देश में स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। गांधी जी के सिद्धांतों के केन्द्र में अंतिम छोर के व्यक्ति का विकास रहा है। इसी विचारधारा को अपनाते हुए प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा व जनहितैषी योजनाएं संचालित कर अंतिम व्यक्ति तक राहत पहुंचाना सुनिश्चित किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि राज्य में सभी जरूरतमंद वर्गों को सामाजिक सुरक्षा मिले और हमारे हर फैसले में गांधीवादी मूल्यों की छाया बनी रहे। भारतीय संविधान में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भावना निहित होने से भारत आज भी अखंड और मजबूत बना हुआ है, लेकिन आज संवैधानिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। हमें संविधान और लोकतंत्र के इन मूल्यों के प्रति सजग रहना होगा।

गांधी जी के विचारों को घर-घर पहुंचाने की दिशा में राजस्थान में शांति एवं अहिंसा विभाग का गठन पूरे देश में पहला और अनूठा प्रयोग है। इसके साथ ही राज्य सरकार ने महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन के आदर्श को जनमानस में स्थापित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। ये कदम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में कितने सफल रहे हैं?

राजस्थान के लोगों की खुशहाली राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और उनके चहुंमुखी विकास के लिए हर जरूरी कदम उठाने की कोशिश की जा रही है। साथ ही हमारी अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर और जनमानस के आंतरिक विकास के लिए भी राज्य सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए राज्य सरकार ने कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस दिशा में सबसे पहले वर्ष 2019-20 में शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। इसके बाद इसे अपग्रेड कर गांधी जी की 150वीं जयंती पर वर्ष 2021-22 में शांति एवं अहिंसा निदेशालय खोला गया, जिसे 1 अक्टूबर, 2022 में देश का पहला शांति एवं अहिंसा विभाग बनाया गया। अब महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंसेज शुरू किया गया है। प्रदेश में 21 मई, 2023 को जिलों में शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ कार्यालय खोले गए हैं। इससे लोगों को गांधी जी के जीवन और उनके कार्यों को जानने के अवसर मिलेंगे। अजमेर में गांधी स्मृति उद्यान को उत्कृष्ट रूप में तैयार किया गया है। देश में सबसे पहले राजस्थान में शांति एवं अहिंसा विभाग के गठन का बड़ा प्रभाव रहा कि युवा पीढ़ी सत्य, अहिंसा, शांति और खुशहाल वातावरण में प्रदेश की प्रगति में अहम भूमिका निभा रही है।

गांधी जी के सिद्धांतों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए राज्य सरकार कौनसे प्रमुख कदम उठा रही है?

शांति एवं अहिंसा विभाग द्वारा प्रचार-प्रसार के लिए कई कार्यक्रम कराए गए हैं। अभी तक करोड़ों रुपए स्वीकृत किए गए हैं। इनसे प्रदेश स्तरीय शांति सम्मेलन, संभाग स्तरीय अहिंसा सम्मेलन, सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजन, कस्तूरबा दर्शन, अस्पृश्यता निवारण, नशा मुक्ति, आर्थिक असमानता एवं धर्म तथा शांति विषय पर राष्ट्रीय कार्यक्रम, कौमी एकता कार्यक्रम, खादी एवं गांधीवादी संस्थाओं का सम्मेलन, ग्राम स्वराज विषय पर चिंतन शिविर तथा गांधी दर्शन अर्द्धकुंभ व कुंभ के आयोजन खास हैं।

युवाओं के जीवन में गांधी जी के सिद्धांतों को किस तरह पिरोया जा रहा है?

राज्य सरकार प्रदेश के महाविद्यालयों में संचालित गांधी अध्ययन केंद्र, नेहरू अध्ययन केंद्र, अंबेडकर अध्ययन केंद्र एवं महिला अध्ययन केंद्र आदि को आर्थिक सहायता दे रही है। गांधी जीवन एवं दर्शन पर डिजिटल प्रदर्शनी 'गांधी दर्शन आजादी से पूर्व और आजादी के पश्चात गौरवशाली यात्रा' के जरिए भी युवाओं को प्रोत्साहित किया गया। साथ ही, महात्मा गांधी पुस्तकालय एवं संविधान केंद्रों की स्थापना भी बड़ा कदम है। इससे आमजन को गांधीजी के विचारों से जुड़ने का अवसर मिलेगा। सर्वोदय विचार परीक्षा, खादी उत्पादों पर 50 प्रतिशत छूट जैसे महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए हैं। जिलों के अलावा स्थानीय निकायों में भी शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठों का गठन किया गया है।

गांधी वाटिका न्यास, जयपुर का उद्देश्य क्या है?

राजस्थान विधानसभा में गांधी वाटिका न्यास, जयपुर विधेयक-2023 पारित किया गया है। यह न्यास गांधीजी से संबंधित दुर्लभ पुस्तकों, साहित्य, फोटोग्राफ, फिल्मों और वस्तुओं के संग्रहालय, गांधी साहित्य पुस्तकालय एवं वाचनालय तथा कला एवं साहित्य के विभिन्न माध्यमों से गांधी के विचारों के प्रचार-प्रसार एवं जनमानस की जानकारी के लिए हाल में निर्मित गांधी वाटिका का संचालन एवं प्रबंधन का कार्य करेगा। महात्मा गांधी के विचारों व मूल्यों के प्रसार के लिए गांधी वाटिका एक खास पहल है।

राज्य सरकार के निर्णयों और कार्यशैली में महात्मा गांधी का आदर्श दिखाई देता है और प्रदेशवासी आपको 'राजस्थान का गांधी' कहते हैं। आप महात्मा गांधी के विचारों से किस तरह प्रेरित हुए?

ये तो प्रदेशवासियों के भाव हैं। वैसे वर्ष 1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान सीमा पर शिविरों में आए शरणार्थियों की सेवा करने की प्रेरणा गांधी जी के मूल्यों और दर्शन से ही मिली। गांधी जी की जीवनी से परपीड़ा को अपना समझने तथा इसके निवारण के लिए संकल्पित होकर कार्य करने की सीख प्राप्त हुई है। बाल्यकाल से

ही गांधी पीस फाउंडेशन से मेरा जुड़ाव रहा। शिविरों में अहिंसा, करुणा, दया व आपसी सद्भाव के सिद्धांतों को आत्मसात करने के अवसर मिले। गांधी जी ने जनभागीदारी के माध्यम से शांति और अहिंसा द्वारा बुराई का प्रतिकार करना सिखाया।

आप कहते हैं कि गांधी जी के देश से होने के कारण विदेशों में हमारे जनप्रतिनिधियों का सम्मान होता है। इसका क्या अभिप्राय है?

गांधी जी के द्वारा देश में सुदृढ़ की गई अहिंसावादी विचारधारा के कारण आज भारत का पूरे विश्व में सम्मान है। नेल्सन मंडेला एवं मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे महान नेताओं ने गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर वंचित वर्गों को अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। अनेक देशों में महात्मा गांधी की प्रतिमाएं स्थापित की जा रही हैं। जर्मनी के शिक्षा पाठ्यक्रम में गांधी जी के बारे में पढ़ाया जा रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने गांधी जी के जन्मदिवस को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र को भेजा, जिसका सभी देशों ने सर्वसम्मति से समर्थन किया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कहा था कि आने वाली पीढ़ियों को विश्वास नहीं होगा कि ऐसा कोई मानव कभी धरती पर आया था। हाल में आयोजित हुए जी-20 समिट के दौरान विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने राजघाट जाकर बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की। ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व हमारे देश में पैदा हुआ यह हमारे लिए सम्मान की बात है।

गांधी जयंती पर प्रदेश के युवाओं को आपका संदेश?

शांति और अहिंसा से ही समाज में आपसी प्रेम, सद्भाव और भाईचारा कायम रह सकता है। यही हमारी संस्कृति का मूल आधार भी है। बापू के सिद्धांतों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए राज्य सरकार समर्पित भाव से कार्य कर रही है। गांधी जी की जीवनी 'सत्य के प्रयोग' का अध्ययन हर व्यक्ति को करना चाहिए। गांधी जी को आवरण के रूप में नहीं अंतर्मन से आत्मसात करना चाहिए, तभी लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखा जा सकता है। युवाओं को पं. नेहरू, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, गोपाल कृष्ण गोखले, डॉ. अंबेडकर जैसे महान नेताओं एवं उनके जीवन आदर्शों के बारे में जरूर पढ़ना चाहिए। तभी वे इतिहास को जानेंगे और उन्हें कोई भ्रमित नहीं कर सकेगा। हमारा प्रयास है कि राजस्थान बापू के विचारों और जीवन दर्शन को आगे बढ़ाने की दिशा में देश का केंद्र-बिंदु बने।

महात्मा गांधी के आदर्शों के प्रसार के लिए

शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ की स्थापना : 2019-20

शांति एवं अहिंसा निदेशालय : 8 अक्टूबर, 2021

शांति एवं अहिंसा विभाग : 1 अक्टूबर, 2022

शांति एवं अहिंसा विभाग की वेबसाइट (peaceandnonviolence.rajasthan.gov.in) की लॉन्चिंग : 23 फरवरी, 2023

जिला शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ कार्यालयों का उद्घाटन : 21 मई, 2023

नगरीय निकायों, पंचायत समिति एवं ग्राम पंचायत स्तर पर शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ : 6 जून, 2023

चंपारण की प्रयोगशाला में महात्मा गांधी

कुमार प्रशांत
अध्यक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग से नेटाल तक का चौबीस घंटे का सफर बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी ने जिस किताब के संग पूरा किया था उसने उनका चोला ही नहीं बल्कि आत्मा भी बदल दी। उनके मित्र पोलक ने दार्शनिक रस्किन की वह किताब 'अन टू दिस लास्ट' उन्हें यह कह कर थमाई थी कि रास्ते में पढ़ जाइएगा, आपको पसंद आएगी। बैरिस्टर साहब ने उसे रास्ते में पढ़ा और उसने रास्ता ही बदल दिया। बैरिस्टर गांधी वह नहीं रहे जो बनने वे दक्षिण अफ्रीका आए थे। फिर वह पूरी कहानी शुरू होती है जिसे हम दक्षिण अफ्रीका में उनके करतबों की कहानी के रूप में जानते हैं। सबसे पहला और संभवत: सबसे बड़ा काम था वहां के विभिन्न भाषाई, जातीय, धार्मिक भारतीय-एशियाई लोगों को साथ ला कर, एक संगठन-सूत्र में बांधना। ऐसे किसी काम का न तो उन्हें अनुभव था और न वृत्ति थी। लेकिन इतिहास है कि वह पात्र खोज भी लेता है और गढ़ भी लेता है। बैरिस्टर गांधी इसी तरह चुने व गढ़े गए। उन्होंने असंगठित लोगों को नेटाल कांग्रेस के नाम से एक संगठन में बांधा, डरे लोगों को सिपाही बनाया और कदम-कदम इनके बल पर ब्रिटिश राज को चुनौती दी। सेना भी बन गई, लड़ाई का मैदान भी सज गया, ब्रिटिश राज अपने पूरे छल-बल के साथ सामने आ खड़ा हुआ लेकिन एक सवाल अभी अनुत्तरित ही था कि फौज के हाथ में हथियार क्या देंगे? लड़ाई बगैर हथियार कैसे लड़ी जा सकती है?

सत्याग्रह का शास्त्र

एक नया ही हथियार उनके मन में उमगा। मनुष्य-जाति ने अब तक कितने ही हथियारों से, कितनी ही लड़ाइयां लड़ी थीं। इस आदमी ने सोचा कि अब जब कि सारे हथियार आजमाए जा चुके हैं तब क्यों न कोई नया ही हथियार

खुद को जानने का सर्वश्रेष्ठ तरीका खुद को औरों की सेवा में लगा देना होता है।

महात्मा गांधी

गढ़ा जाए। क्यों न आदमी को ही हथियार बना दिया जाए? गांधी जी का सारा चमत्कार इसी में छिपा है कि वे न केवल ऐसा हथियार सोच व बना सके बल्कि उसके बारे में अपने लोगों के मन में विश्वास पैदा करने में भी सफल हुए। सत्याग्रह का शास्त्र व शस्त्र एक साथ ही बनने लगा। दक्षिण अफ्रीका की जनरल स्मट्स की सरकार इसे हर तरह से कुचलने में समर्थ थी और उसने हर बार हमला भी भीषण ही किया लेकिन जो बात उनकी समझ में नहीं आ रही थी वह यह थी कि जब सामने वाला हमला करने को तैयार ही न हो तब लड़ाई कैसे लड़ी जाए?

बैरिस्टर गांधी वहां कोई भी हथियार आजमाने से हिचकिचाते नहीं हैं और लड़ाई में पूरी तैयारी से उतरते हैं लेकिन इस बात की पूरी सावधानी रखते हैं कि सामने वाले को जरा खरोंच भी न आए। वे खुद से पूछते हैं कि जब मारना ही है प्रतिद्वंद्वी को, तब कम मारा कि ज्यादा, फर्क क्या रह जाता है? बात तो तब है जब मारने वाले के सामने मरने वालों की ऐसी दीवार खड़ी कर दी जाए कि वह मारने की कीमिया ही भूल जाए। वे बताते हैं कि ऐसी लड़ाई का मोर्चा बहुत बड़ा होता है यानी तन से मन तक व्यक्ति से समाज तक और सत्ता से सड़क तक। इसलिए वे इन सारे मोर्चों पर लड़ाई छेड़ते हैं और सरकार को सांस लेने का मौका भी नहीं देते हैं। लड़ते-लड़ते अचानक ही वे दक्षिण अफ्रीका छोड़ इंग्लैंड पहुंच जाते हैं और ब्रिटिश संसद को समझाने लगते हैं कि साम्राज्य अपने ही नागरिकों में भेदभाव कैसे कर सकता है? अब तक कितने ही लोगों ने इंग्लैंड पहुंच कर यह गुहार लगाई थी कि माई-बाप हमें इस अन्याय से बचाओ और महाराजा की सरकार ने कृपापूर्वक थोड़ी-बहुत राहत दिला भी दी थी, लेकिन यह पहला आदमी सामने आया जो राहत नहीं मांग रहा था, महाराजा की सरकार की हैसियत पर सवाल उठा रहा था। इस काम में उसने ब्रिटिश नागरिकों, चिंतकों, संगठनों, अखबारों, सांसदों सबको इस तरह समेट लिया कि वहां असहमति का एक बड़ा तूफान ही खड़ा हो गया।

इसी क्रम में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन सेनानियों से भी उनकी मुलाकात हुई जो ब्रिटिश धरती पर रह कर, अपने देश में हिंसक प्रतिरोध खड़ा करने में जुटे थे, बम-बंदूक की भाषा बोल रहे थे। बड़ी बहसें हुईं और गांधी जी उन्हें हर बार यह पूछ कर हतप्रभ कर जाते हैं कि वह लड़ाई कैसी जो अपने लोगों के बीच रह कर नहीं लड़ी जा सकती है? फिर उस लड़ाई को लोग अपनी लड़ाई कैसे मान लेंगे जिसकी बात भी उनसे नहीं की जाती है और जो विदेश से आयातित माल की तरह उन पर थोपी जाती है? हिंसा की व्यर्थता को इस तरह कभी किसी ने समझने की कोशिश नहीं की थी। इंग्लैंड पर अपनी गहरी छाप छोड़ने के बाद यह सहज ही होता कि बैरिस्टर गांधी अपने देश वापस लौट आते और इसकी आजादी की लड़ाई में शरीक हो जाते, लेकिन यह सहज रास्ता छोड़ कर बैरिस्टर साहब फिर दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई की तरफ ही लौटते हैं और लौटते हुए पानी के जहाज के डेक पर बैठकर कभी सीधे तो कभी उल्टे हाथ से, अपनी मातृभाषा गुजराती में वह किताब लिख डालते हैं जिसे आज सभी 'हिंद-स्वराज' के नाम से जानते हैं। यह किताब क्या है, विकल्प की एक तस्वीर है जिसे सिद्ध करने के प्रति गांधी खुद को समर्पित घोषित करते हैं। दक्षिण अफ्रीका का संघर्ष कितने ही मोड़ों से गुजरता है और फिर वहां पहुंचता है जिसे सफलता कहते हैं। ऐसी लड़ाई और ऐसी सफलता पहले कभी देखी नहीं गई थी जिसमें कोई हारा नहीं, विजेता और विजित दोनों एक-दूसरे के दोस्त बन कर सामने आए। जनरल स्मट्स की सत्ता को जिसने सबसे बड़ी चुनौती दी और उसे अपने दमनकारी कदम वापस लेने पर मजबूर कर दिया, उसी जनरल स्मट्स ने भारत में अंग्रेजों को चुनौती देते गांधी जी के लिए ब्रिटिश हुकूमत को लिखा कि यह आदमी हमसे अलग और हमसे ऊंची किसी आध्यात्मिक दुनिया का साधक है। इसे हराने या खत्म करने की कोशिश न करें। हमें इसके साथ चलने के रास्ते खोजने चाहिए।

गोपालकृष्ण गोखले से शुरुआती पाठ

इस लड़ाई में पहला बलिदान बैरिस्टर गांधी का खुद का ही हुआ। उनका चोला भी बदल गया और आत्मा भी। वे बैरिस्टरी वगैरह छोड़ कर, फीनिक्स में आश्रम बना कर जीवन जीने के नए प्रयोगों में जुट गए। उस आश्रम में देशी-विदेशी, भारतीय-अ-भारतीय, स्त्री-पुरुष दोनों आ जुटे और बैरिस्टर गांधी किसी के लिए मोहन, किसी के लिए मिस्टर गांधी बन कर अपने पूरे परिवार के साथ नया जीवन तलाशने और गढ़ने में जुट गए। फिर एक दिन वह भी आता है कि वे सपरिवार, अपना तंबू-खूंटा उखाड़ कर भारत लौटते हैं और फिर भारत को पहचाने में जुट जाते हैं जिसे वे प्यार तो बहुत करते हैं लेकिन जानते कम हैं। गोपाल कृष्ण गोखले भारतीय राजनीति के सिरमौरों में एक थे और इस नौजवान की कीमत भी उन्होंने ही सबसे पहले पहचानी थी। वे बैरिस्टर गांधी का संघर्ष देखने-समझने दक्षिण अफ्रीका भी गए थे। इसलिए भारत आए इस युवक को उन्होंने यह हुक्म दिया कि अब साल भर मुंह बंद और आंखें खुली रख कर भारत को देखो-समझो और फिर तय करो कि तुम्हें क्या और कहां करना है।

गांधी ने गोखले का मांगा यह वचन दिया और पूरी तरह निभाया।

राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर चंपारण आगमन

और वे अपना भारत खोजते, इससे पहले राजकुमार शुक्ल ने उन्हें खोज लिया। राजकुमार शुक्ल चंपारण के दीन-हीन किसानों के प्रतिनिधि थे और कांग्रेस के जलसों में बिना नागा शरीक होते थे और कोशिश में रहते थे कि बड़े नेताओं में कोई हो जो उनकी सुने। चंपारण के किसानों की व्यथा-कथा सुनने की नहीं, देखने की चीज है, ऐसा वे सबसे कहते फिरते थे। ऐसे में उन्हें गांधी जी मिले और राजकुमार शुक्ल को लगा कि यही आदमी है जिसकी उन्हें खोज थी। गांधी जी जहां पहुंचते, राजकुमार शुक्ल वहीं हाजिर मिलते और वही कातर प्रार्थना करते कि एक बार चंपारण चल कर देख तो लीजिए। आखिर गांधी जी ने हथियार डाल दिए और कहा कि कलकत्ता आ जाइए और मुझे ले चलिए अपने चंपारण।

इससे पहले गांधी जी न बिहार से परिचित थे, न चंपारण का नाम सुना था और न नील की खेती से उनका वास्ता था। वे हिंदी भी ऐसी बोलते थे जो आसानी से समझ में नहीं आती थी, बिहार की दूसरी किसी भाषा-बोली से उनका कतई परिचय नहीं था। बिहार में वे किसी को खास जानते भी नहीं थे। एक आचार्य कृपलानी थे जिनके साथ कांग्रेस के जलसों में उनकी देखा-देखी थी और उन्हें पता था कि वे बिहार के मुजफ्फरपुर नाम की जगह पर एक कॉलेज में इतिहास के प्रोफेसर हैं। उनकी डायरी में दूसरा नाम था मौलाना मजहरुल हक का जो लंदन के दिनों में उनके सहपाठी थे और अब मुस्लिम लीग के बड़े नेता थे।

10 अप्रैल, 1917 को सुबह के करीब 10 बजे हैं और एक रेलगाड़ी अभी-अभी पटना जंक्शन पर आ कर थमी है। एक नया आदमी स्टेशन पर उतरता है जिसे न पटना जानता है और न जिसने कभी पटना को जाना-देखा है। नाम है मोहनदास करमचंद गांधी। मोहनदास करमचंद गांधी नाम का यह आदमी राजकुमार शुक्ल नाम के उस आदमी को भी बहुत थोड़ा जानता है जो उसे कलकत्ता से साथ ले कर पटना आया है। राजकुमार शुक्ल भी इस मोहनदास करमचंद गांधी को बहुत थोड़ा जानते हैं। हां, वे इतना जरूर जानते हैं कि यह आदमी गुजराती है लेकिन देश में जो कुछ लोग उसे जानते हैं वह सुदूर के देश दक्षिण अफ्रीका के कारण जानते हैं जहां इस आदमी ने कुछ किया है? क्या किया, क्यों और कैसे किया? यह राजकुमार शुक्ल भी नहीं के बराबर ही जानते हैं। इसके अलावा दोनों यह भी नहीं जानते हैं कि पटना में उन्हें जाना कहां है। मोहनदास करमचंद गांधी को तो पटना कहां है यही नहीं मालूम था और राजकुमार शुक्ल को पटना में कौन, क्या है? यह नहीं मालूम था।

राजकुमार अपने मेहमान मोहनदास को ले कर पहुंचते हैं अपने बड़े वकील साहब के घर। घर के बाहर की तख्ती पर राजेंद्र प्रसाद का नाम लिखा है। राजेंद्र प्रसाद बहुत बड़े और बड़े कमाऊ वकील थे लेकिन देश जिस राजेंद्र प्रसाद को जानता है उसका अभी जन्म नहीं हुआ है। किस्सा यह कि वे राजेंद्र प्रसाद भी न तो घर पर थे, न पटना में थे। नौकरों ने बताया कि वकील साहब पुरी गए हुए हैं। एकदम अजनबी-से शहर में, एक अजनबी आदमी के घर के बरामदे में, दो अजनबी-से आदमी एक अजनबी-सी रात गुजारने को अभिशप्त थे।

पटना में मजहरुल हक से मुलाकात

अब तक मोहनदास समझ चुके थे कि राजकुमार भोले आदमी हैं जिनकी गठरी में व्यावहारिक बातें कम होती हैं। अपनी डायरी खंगाल कर मोहनदास ने एक नाम निकाला वे थे मजहरुल हक। पटना के नामी वकील और मुस्लिम लीग के राष्ट्रीय मंत्री। लेकिन मोहनदास के लिए उनका परिचय दूसरा भी था। वे कभी लंदन में मोहनदास के सहपाठी रहे थे। मोहनदास ने उनको खबर भिजवाई तो हक साहब अपनी मोटर में भागे आए और मोहनदास को अपने घर ले आए। घर तो क्या? कोठी कहें हम। मोहनदास कोठी से ही हिचक गए, जीवन-शैली की तड़क-भड़क ने और भी परेशान किया। जब बताया कि राजकुमार उन्हें चंपारण ले जा रहे हैं तो बारी हक साहब के बिदकने की थी - क्यों यह सारी मुसीबत मोल लेनी? जैसा कुछ कहा उन्होंने। वे अपने इंग्लैंड वाले दोस्त मोहनदास को इस परेशानी से बचाना चाहते थे। मोहनदास को उनका रवैया और उनकी जीवन-शैली पची नहीं और उन्होंने कुछ ऐसा कहा कि हक साहब कट कर रह गए।

मुजफ्फरपुर में आचार्य कृपलानी के मेहमान

आगे की कहानी जैसे चलती है, उसे वैसे ही चलने को छोड़ कर हम सीधे मुजफ्फरपुर पहुंचते हैं। यहां मोहनदास इतिहास के प्रोफेसर आचार्य कृपलानी के मेहमान हैं। सब कौतूहल से इस प्राणी को देख रहे हैं जिसने दक्षिण अफ्रीका में कुछ कमाल किया है लेकिन सामने देखने पर लगता नहीं है कि इसमें कुछ खास है। कृपलानी आदमी की तीखी कसौटी करते हैं। उनकी भेदी आंखें और उनका तलवार-सा तेज मस्तिष्क इस आदमी को आंकने में लगा है। मोहनदास को घेर कर बैठे हैं बिहार व देश के नामी वकील साहबान। बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद भी हैं, राजेंद्र प्रसाद भी हैं, रामनवमी प्रसाद भी हैं, सूरजबल प्रसाद, गया बाबू भी हैं। और भी कई लोग हैं। चंपारण में चल रही तिनकठिया प्रथा और उससे किसानों का हो रहे अकल्पनीय शोषण से सारे महानुभाव परिचित थे। कैसे परिचित नहीं होते? ये सभी इन्हीं शोषित-पीड़ित-वंचित किसानों के मुकदमे भी तो लड़ते थे। न्याय दिलाना इनका पेशा ही था। मोहनदास को बड़ी हैरानी हुई कि ऐसे मृतप्राय किसानों से ये सारे साहबान हजारों रुपयों की फीस वसूलते थे। वकील साहेबानों का तर्क सीधा था कि घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या।

लेकिन मोहनदास हमसे चाहते क्या हैं? यह सवाल था जो कहे-अनकहे सारे माहौल पर पसरा हुआ था। मोहनदास ने कहा कि हमें ये मुकदमे लड़ना ही बंद कर देने चाहिए। इनसे बहुत कम लाभ होता है। जब इतना भय हो, इतना

शोषण हो तो कचहरियां कितना काम कर सकती हैं? पहला काम है लोगों का भय दूर करना। दूसरी बात है यह संकल्प कि तिनकठिया बंद न हो तब तक चैन से नहीं बैठना है। इसलिए वहां चंपारण के किसानों के बीच लंबे समय तक रहना पड़ेगा और जब जरूरत पड़े तब जेल जाने की तैयारी रखनी पड़ेगी।

अपनी कह कर मोहनदास चुप हुए तो सारा माहौल चुप हो गया। चेहरे पर सबके एक ही बात लिखी थी कि यह तो अजीब ही तरह का आदमी है। हम इनका मुकदमा लड़ते हैं, यही क्या कम है। अब हम ही मुकदमा भी लड़ें, इनके बीच जा कर भी रहें, इनके लिए जेल भी जाएं। कोई खानदानी आदमी कभी जेल जाता है क्या?

सबकी तरफ से जवाब ब्रजकिशोर बाबू ने दिया कि हम आपके साथ रहेंगे, आपका बताया काम भी करेंगे। जिसके पास जितना समय है, वह भी देंगे। जेल जाने वाली बात एकदम नई है। हम उसकी हिम्मत बनाएंगे।

वे हिम्मत बनाते रहे और मोहनदास मुजफ्फरपुर से मोतिहारी तक बात बनाने निकल पड़े। जो जहां, जिस भी तरह चंपारण से जुड़ा था, वे उन सबसे मिलने, बात करने में लगे थे। और सबसे जरूरी था कमिश्नर साहब से यह अनुमति पाना कि मोहनदास चंपारण जा सकते हैं। मोहनदास को यह जितना जरूरी लग रहा था कमिश्नर उतना ही साफ था कि यह कतई जरूरी नहीं है कि एक बाहरी आदमी चंपारण की शांति-व्यवस्था भंग करने पहुंच जाए। दोनों की टेक साफ थी। आवेदन आदि की कोशिशों के बाद मोहनदास ने बड़ी मासूमियत से अपने वकील साहेबानों से कहा कि "कमिश्नर साहब जो भी कहें, मैं चंपारण जाऊंगा।"

सारे वकील साहेबान हैरानी से मोहनदास को देख रहे थे। मोहनदास ने कमिश्नर साहब के नाम एक पत्र लिखा कि चाहता तो था कि आपकी अनुमति ले कर जाऊं लेकिन अब बिना अनुमति जा रहा हूं। मोहनदास ने मन-ही-मन हिसाब लगाया कि क्या मेरे हिसाब से पहले ही मुझे जेल जाना होगा?

रात में आचार्य कृपलानी ने इतिहास के अपने छात्रों को भी इस आदमी से मिलने-बतियाने के लिए बुला लिया है। युवाओं से बात करने, उनके तर्कों का जवाब देने और उन्हें अपना कायल बनाने में गांधी जी को बड़ी सुगमता होती है, यह कृपलानी देख चुके हैं। बातें चलती हैं तो चलती चली जाती हैं, दुनिया के इतिहास, उसके प्रवाहों की बात होती है, हिंसा-अहिंसा के साथ दक्षिण अफ्रीका के उस सत्याग्रह की बात भी होती है जिसकी बात बहुत लोग जानते नहीं हैं। कृपलानी गांधीजी की सारी बातें सुनकर कहते हैं कि यह सब ठीक है गांधी जी लेकिन मैं सारी दुनिया का जो इतिहास पढ़ता-पढ़ाता हूं उस इतिहास में कहीं एक उदाहरण भी मिलता नहीं है कि ऐसी अहिंसा के, शांतिमय संघर्ष के और आप जिसे सत्याग्रह कह रहे हैं, उसके रास्ते से कोई मुल्क आजाद हुआ हो। इतिहासकार से ज्यादा इतिहास का प्रमाण कौन दे सकता था भला। सब लाजवाब हो गए तभी गांधी जी की अडिग-सी आवाज उठी कि प्रोफेसर, कुछ लोग इतिहास पढ़ते-पढ़ाते हैं, कुछ ऐसे भी होते हैं जो इतिहास बनाते हैं। और जब इतिहास बन जाता है तब तुम लोग उसे पढ़ाने लगते हो। बात कट गई। इतिहास बनाने और पढ़ाने के बीच की खाई कृपलानी जी के सामने उभर आई।

कृपलानी अंत-अंत तक गांधी जी की दो चीजें याद करते रहे, उनकी आंखें, जिनमें अपार गहराई थी, दृढ़ता थी और करुणा से लबालब भरी थीं वे आंखें। उनकी आवाज, जिसमें बला का बल था कि यह आदमी जो कह रहा है

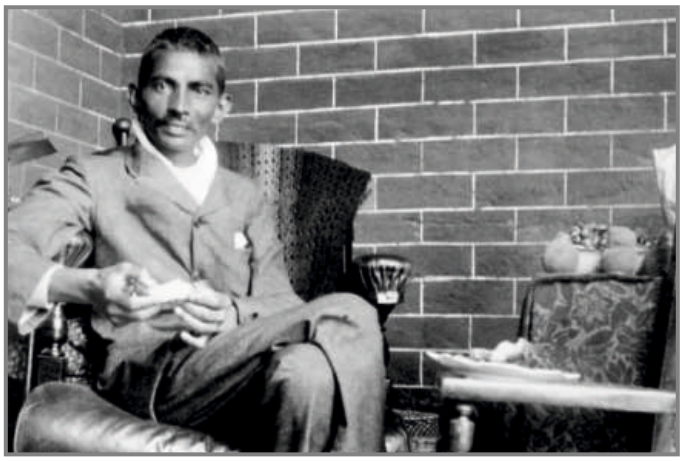

वह करने ही जा रहा है। उनकी आंखें सबको भेद कर वह सब देख लेती थीं, जो देखना चाहती थीं। उनकी आवाज उन सबको पुकार लेती थी, जोड़ लेती थी जो उनके साथ काम करने वाले होते थे। इसी आंख और आवाज ने कृपलानी जी को भी चंपारण बुला लिया और वे ताउम्र गांधीजी के पहरेदार बने रहे।

इतनी पृष्ठभूमि जरूरी थी ताकि हम यह समझ सकें कि जो आदमी राजकुमार शुक्ल के साथ चंपारण पहुंचा था वह अधपका फल नहीं था, एक परिपक्व विचारक व अपनी अनोखी लड़ाई का सिद्ध सेनापति था।

चंपारण में किसानों से मुलाकात

15 अप्रैल, 1917 की शाम के चार बजे राजकुमार शुक्ल अपने मोहनदास को लिए हुए मोतिहारी स्टेशन पहुंचे। यह मोतिहारी उनके लिए भी एकदम नया था। छोटा-सा मोतिहारी का रेलवे स्टेशन आज कितना विशाल लग रहा था। भाप छोड़ते इंजन की सूं-सूं, अटपटी और अजनबी-सी हालत में खड़े मोहनदास ये सब जैसे कहीं पार्श्व में छूट गए और राजकुमार शुक्ल आंखें फाड़े देखते रह गए मोतिहारी स्टेशन पर उमड़ आया अपार, अपार जन-समूह। मुझे मालूम नहीं कि इतिहास में कभी, कहीं ऐसी अटपटी स्थिति में कोई ऐसा नाटक खेला गया हो जिसने इतिहास को ही बदल डाला हो। लेकिन आज से एक सौ पांच साल पहले ऐसा हुआ था। इतिहास ने आगे बढ़कर मोहनदास करमचंद गांधी का हाथ थामा और बिहार के हाथ में धर दिया।

यहां से आगे बहुत कुछ बदला। मोहनदास करमचंद गांधी इतना बदले कि नाम, धाम, काम, वस्त्र, जीवन, बोली-बानी, साथी-संगाती सब बदलते गए। नाम भी कट-छंट कर रह गया सिर्फ गांधी। फिर वह भी नहीं रहा, सिर्फ बापू रहे गया। चंपारण मोहनदास का वाटरलू हो सकता था लेकिन गांधी जी ने उसे बना दिया अंग्रेजी साम्राज्यवाद का वाटरलू। जब पर्दा उठा था तब जो गांधी जी अकेले दिखे थे, वहां से सफर शुरू हुआ तो नापते-नापते गांधी जी ने इतना कुछ नाप लिया कि इतिहास का हर मंच छोटा पड़ने लगा। जिस यात्रा के प्रारंभ में वे अकेले थे, उसी यात्रा में वे अकेले-एकांत के एक पल के लिए तरसने लगे।

गांधी जी ने बिहार आ कर खुद को खोजा। बिहार ने गांधी जी को पा कर खुद को पहचाना। गांधी जी ने बिहार आ कर अपना वह हथियार मांजा-परखा जो दक्षिण अफ्रीका में तैयार हुआ था। बिहार ने गांधी जी को पा कर वह हथियार चलाना सीखा जिसे सत्याग्रह कहते हैं। बिहार के लोगों ने गांधी जी से पूछा था कि आप हमसे क्या चाहते हैं? गांधी जी ने बिहार से पूछा था कि आप क्या कर सकेंगे?

दोनों ने एक-दूसरे को जवाब दिया और एक इतिहास आकार लेने लगा।

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में जैसे एक नया संगठन खड़ा कर लिया था वैसे ही चंपारण पहुंचते ही उन्होंने अपनी सेना बना ली। इस सेना में बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद, राजेंद्र प्रसाद, मौलाना मजहरुल हक, धरणीधर बाबू, गया बाबू, अनुग्रह बाबू आदि शामिल थे। सभी खूब कमाऊ वकील हैं और इनमें से एक का भी इरादा किसी लड़ाई में लगने का नहीं है। जेल जाने का तो सवाल ही नहीं है। गांधी जी को मालूम है कि उनकी लड़ाई का सबसे पहला और सबसे स्वाभाविक परिणाम जेल जाना होगा। वे इसे छुपाते नहीं हैं। कह देते हैं कि आप सभी मेरे पीछे जेल आने को तैयार होंगे तब ही यह लड़ाई हम जीत सकते हैं। बिहार व देश के माने हुए ये वकील साहेबान हैरान रह जाते हैं लेकिन यह आदमी अगले कदम की तैयारी में जुट जाता है।

चंपारण में गांधीजी को निलहे अंग्रजों का वह अत्याचार तो दिखाई देता ही है जिसकी तरफ राजकुमार शुक्ल उनका ध्यान खींचते रहे हैं। लेकिन इससे भी अधिक उन्हें दिखाई देता है किसानों में फैला भय और सामर्थ्यवानों में फैली लाचारी। वे देख लेते हैं सर्वत्र फैली गंदगी, अशिक्षा, रग-रग में समाई जाति-प्रथा, छुआछूत आदि। यह समझना खासा दिलचस्प होगा कि जिस चंपारण सत्याग्रह की इतनी बातें होती हैं उसमें सत्याग्रह जैसा तो कुछ हुआ ही नहीं। गांधीजी ने अपनी सेना के वकील साहेबानों से सीधे ही कहा कि मुझे आपके कानूनी ज्ञान की और आपकी अदालती प्रतिभा की जरूरत नहीं है। मुझे आपकी क्लर्की प्रतिभा की जरूरत है। आप सब निलहों के अत्याचारों की कहानी कलमबंद करें, बस! गांधीजी ने सचाई को कलमबद्ध करने को हथियार बनाया और उसे ही आंदोलन की शक्ल दे दी। सैकड़ों से बात शुरू हुई और हजारों-हजार तक पहुंची। जथ-के-जथ किसान आने लगे और अपनी कहानी सुनाने लगे। 'उनको सुनो और उनका कहा लिखो' बस यही गांधी जी का चंपारण सत्याग्रह था। लेकिन गांधी जी ने बड़ी सहजता से सत्याग्रह का वह बुनियादी तत्व इसमें दाखिल कर दिया जिसके बगैर उनकी गाड़ी आगे बढ़ती नहीं थी। उन्होंने वकील साहेबानों से कहा कि ध्यान रहे कि किसानों के हर बयान की सत्यता की पूरी पड़ताल हमें करनी है। जहां उनके विवरण पर थोड़ा भी शक हो वहां मौके पर जा कर सत्य को खोजना है। ऐसे मामलों की जानकारी मुझे दें। मैं खुद गांवों में जा कर जांच करूंगा। सत्य के आग्रह की यह तलवार उन्होंने पहले दिन से ही लटका दी। वे देर-देर तक किसानों को बयान देते सुनते थे जिनमें से अधिकांश वे समझ भी नहीं पाते थे। भोजपुरी उनकी समझ में नहीं आती थी। किसानों के कागजात वे पढ़ नहीं पाते थे क्योंकि वे कैथी में लिखे होते थे। यह सब उन्हें अपने साथियों से समझनी पड़ती थी लेकिन सत्य की पुकार थी कि जो उनसे कभी चूकती नहीं थी।

अंग्रेज अधिकारी चकरा गए। वे चाहते थे कि यह न हो लेकिन कैसे कहते कि सत्य की कलमबंदी न हो? वे चाहते थे कि किसान डरें और बयान दर्ज कराने न आएं लेकिन किसानों का ऐसा स्वस्फूर्त आगमन था कि उसे रोकना उनके बस में नहीं था। उन्होंने फिर एक चाल चली। किसानों की गवाही चलती होती तो वे वहां अपना दारोगा खड़ा कर देते और वह दारोगा शिकायतकर्ता किसानों के नाम-पते सब नोट करता जाता। यह सीधे-सीधे किसानों को भयभीत करने की कोशिश थी लेकिन इस पर गांधी जी की फौज एतराज करती भी तो कैसे? गांधी जी ने कहा कि जो भी दारोगा आएं उन्हें आप बैठने की कुर्सी दें, पानी पिलाएं और इस काम में उनसे मदद मांगे। आप उनसे कहें कि किसानों के नाम-पता तो लिखे ही, उनका पूरा बयान भी दर्ज कर हमें दें तो काम जल्दी पूरा हो जाएगा। अधिकारियों ने दरोगाओं को इससे दूर ही रहने की सलाह दी।

सत्य को कलमबद्ध करने का यह अभियान ही ऐसी फिजां बना गया कि निलहों को सबने धीरे-धीरे अकेला छोड़ दिया। सरकारी अधिकारियों ने, अदालत ने, किसानों ने, नागरिकों ने सबने निलहों के साथ संपर्क-संवाद बंद कर दिया। कल तक जिनकी मुट्ठी में किसानों की किस्मत थी, वे ही आज किसी दूसरे की मुट्ठी में बंद हो गए। हम ध्यान दें कि चंपारण की पूरी लड़ाई में किसी पर हमला नहीं हुआ, गांधी समेत किसी को जेल नहीं जाना पड़ा, कोई जुलूस, धरना, अनशन नहीं हुआ। किसानों की कहानियों की सचाई परख कर उन्हें कलमबंद करने का काम ही आंदोलन की शक्ल में सामने आया। हजारों किसानों का इस तरह उमड़ कर सामने आना और अपने साथ हो रही ज्यादतियों का सप्रमाण विवरण देना चंपारण से पटना और दिल्ली तक अंग्रेजों को हतप्रभ करने लगा। सबसे ज्यादा बयान पिछड़ी जाति के किसानों के दर्ज हुए। गांधीजी ने मोतिहारी की अदालत में अपना कोई बचाव पेश ही नहीं किया बल्कि कह दिया कि जिला बदर करने के सरकारी आदेश का वे किसी भी तरह पालन नहीं करेंगे और इसके लिए अदालत मुझे जितनी कड़ी सजा दे सकती है, दे। अदालतों ने सजा कम करने की गुहार तो बार-बार सुनी थी, सजा मांगने की यह ललकार कभी सुनी नहीं थी। वह भी हतप्रभ रह गई। पीछा छुड़ाने के लिए अदालत ने कहा : "आप जिला छोड़ दें, हम दूसरी कोई कार्रवाई नहीं करेंगे।"

गांधीजी ने विनम्रता से कहा : "मैं जिला छोड़ कर नहीं जाऊंगा बल्कि आपकी सजा भुगतने के बाद मैं यही बस जाने की सोचता हूं।"

अदालत ने कहा : "आप जमानत की रकम जमा कर दें, हम आपको रिहा कर देंगे।"

गांधीजी ने उतनी ही विनम्रता से कहा : " मेरे पास जमानत देने के पैसे नहीं हैं। अतः मैं जमानत नहीं दे सकूंगा।"

अदालत ने कहा: " हम आपको बेशर्त रिहा करते हैं।"

व्यापक परिवर्तन का प्रतीक बना चंपारण

जीत तो यहीं हो गई थी। लेकिन चंपारण जहां हार रहा था गांधीजी को वहां पहुंचना था। उन्होंने कस्तूरबा को गांव की स्त्रियों को साफ-सफाई सिखाने के काम से जोड़ दिया, गुजरात से शिक्षक बुलाकर गांव में पढ़ाई की व्यवस्था शुरू करवाई। छुआछूत के मारे वकील साहबानों के अलग-अलग चूल्हे बंद करवाए, सामूहिक रसोई शुरू करवाई। उनके सारे-के-सारे नौकरों की विदाई करवा दी और सबको अपना काम खुद करने का सिलसिला शुरू करवाया। जेल जाने से हिचकिचाते वकील साहेबानों में ऐसी हिम्मत भरी कि जेल जाने वालों की टोलियां बन गईं।

निलहे अंग्रेज एकदम अकेले पड़ गए। प्रशासन भी और सरकार भी गांधी जी के साथ आ खड़ी हुई। तिनकठिया प्रथा को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। प्राकृतिक नील की जगह कृत्रिम नील बाजार में आने लगा था, इसलिए निलहे अपनी जमीनें बेच-बेच कर निकलने लगे। शोषण व अन्याय के चरम पर पहुंचा चंपारण अचानक व्यापक परिवर्तन का प्रतीक बन गया। हम कह सकते हैं कि चंपारण की नींव पर गांधीजी ने आजादी की लड़ाई की अपनी पूरी इमारत खड़ी की।

महात्मा गांधी

पत्रकारिता और जनसंवाद

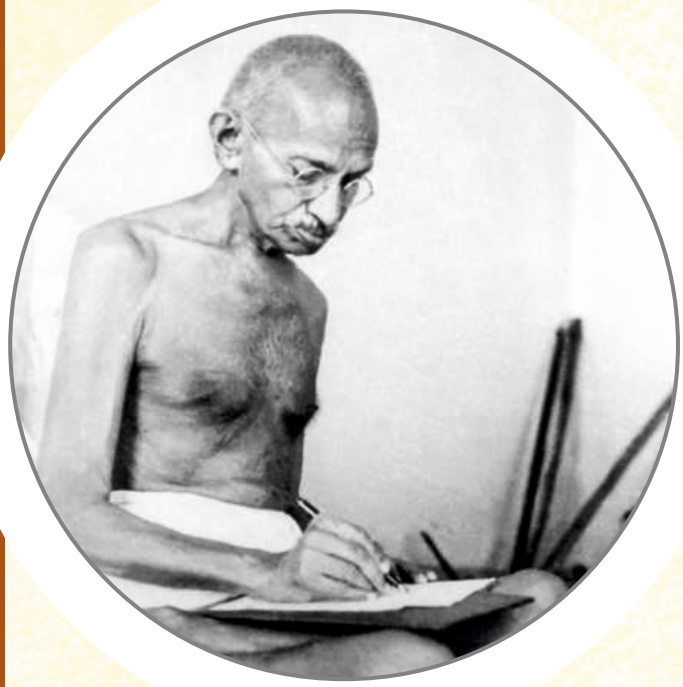

आशाराम खटीक, जनसंपर्क अधिकारी
प्रो. (डॉ.) सुबोध कुमार, आचार्य-वीएमओयू कोटा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन के दो अहम पड़ाव - एक उनका बैरिस्टर होना और दूसरा राष्ट्रीय नायक के रूप में योगदान हैं। इससे इतर तीसरा और महत्त्वपूर्ण योगदान पत्रकारिता और जनसंवाद कौशल है, जिसे प्राय: विस्मृत कर दिया जाता है। पेशेवर वकालत से शुरुआत कर उनके राजनीतिक व्यक्तित्व की इस यात्रा में प्रखर पत्रकार एवं संपादक के तौर पर उनकी भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता है। गांधीजी ने जीवन के अनेक वर्ष तथा मूल्यवान समय भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं की स्थापना, लेखन और संपादन को समर्पित किया। लक्ष्यबद्ध पत्रकारिता को सेवा का जरिया बनाकर इसे सामाजिक परिवर्तन व जन-चेतना जाग्रत करने का श्रेष्ठ माध्यम मानते हुए भारत और दक्षिण अफ्रीका दोनों देशों में कार्य करते हुए सर्वाधिक तवज्जो दी। वस्तुत: मोहन दास करमचन्द गांधी से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बनने तक की इस यात्रा में उनके पत्रकार के रुप में जीवन का अनूठा योगदान रहा है। पत्रकारिता के इसी कार्य ने उन्हें समाज को समझने की दृष्टि दी। पत्रकारिता के माध्यम से ही बापू ने लेखन, मनन, विश्लेषण, संपादन द्वारा विचार वैविध्य, मत-मतान्तर, असहमति का सम्मान, सत्य का शोधन आदि पहलुओं को मन-मस्तिष्क की कसौटी पर कसकर अपने शुद्ध अंतःकरण से साक्षात्कार करने का अवसर पाया।

गांधी जी की पत्रकारिता आज की पेशेवर पत्रकारिता से अलग, सामुदायिक पत्रकारिता थी। सर्वसाधारण का अभिष्ट सामाजिक हित संवर्धन इसमें निहित था। समुदाय के लिए लिखते हुए गांधीजी का सत्य से सामना, अहिंसा की शक्ति और स्वावलंबन के महत्त्व से परिचय हुआ। इन्हीं तत्त्वों ने उनके व्यक्तित्व निर्धारण और विचारों के प्रस्फुटन को संपुष्ट कर परिपक्व होने में सकारात्मक भूमिका निभाई। महात्मा गांधी ने खुद भी यह माना

कि बतौर पत्रकार या संपादक कार्य करते हुए मिले अनुभवों से उन्हें समाज को देखने, जानने, समझने का जो अवसर मिला, इससे नया दृष्टिकोण विकसित हुआ।

गांधी जी के बारे में यह भी जानना रुचिकर है कि उन्नीस वर्ष की आयु तक उन्होंने अपने जीवन में कोई भी अखबार पढ़ा या देखा नहीं था। लंदन में अपने अध्ययन काल में उनका सबसे पहले समाचार-पत्र से परिचय हुआ। समाचार-पत्र, पत्रिकाओं में उन्हें अपने सार्थक जीवन की कुंजी मिली और इसे अपनाकर वह उससे आजीवन बंधे रहे। अखबारों के नियमित अध्ययन से उन्हें अंग्रेजों की सत्ता, सभ्यता, संस्कार व संस्कृति को नजदीक से जानने का अवसर मिला। ब्रिटिशर्स की सामाजिक परम्पराओं, मूल्यों, नैतिकता आदि को जानकर वे ब्रिटिश सत्ता के क्रियाकलापों व कार्यप्रणाली को समझने में सक्षम बने। इसी से वे यह भी जान सके कि ब्रिटिश समाज में सत्ता को प्रभावित करने व उन पर दबाव बनाने के लिए समाचार-पत्र व लेखन महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। गांधीजी ने अपने विरोधियों से लड़ने के लिए उन्हीं के अहिंसक हथियारों को अपना लिया। पत्र-पत्रिकाओं को प्रसारित करने के पीछे भी उनका मकसद यही था कि ब्रिटिशर्स को व्यापक सामाजिक स्तर पर यह पता चले कि उनके हुक्मरान अपने अधीन देशों में जनता के साथ कितने निष्ठुर और बर्बर हैं। गांधी जी के लेखन का काफी अंश ब्रिटिश जनता को संबोधित होता था और यही कारण था कि ब्रिटेन में बहुत बड़ा वर्ग गांधी जी के साहस, नैतिकता, दृढ़ता और तार्किकता का सदैव समर्थन करता था।

गांधी जी का लेखकीय जीवन लंदन प्रवास के समय ही आरंभ हो गया था। लन्दन की वेजिटेरियन सोसायटी द्वारा प्रकाशित पत्र "वेजिटेरियन" में उन्होंने विभिन्न विषयों- भोजन, आहार, पोषण व उत्सव परम्पराओं पर नौ लेख लिखे। दक्षिण अफ्रीका आते ही वे दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रकाशित पत्र 'इण्डिया' में लिखने लगे और इस पत्र के स्थानीय संवाददाता बन गए। पत्रकार के रूप में गांधीजी का महत्त्वपूर्ण दौर बोअर युद्ध के समय आया। उस समय 1899 में वे टाइम्स ऑफ इण्डिया के लिए लिखा करते थे। इण्डियन एंबुलेंस कॉर्प्स के सदस्य के रूप में वे युद्ध में गये और सेवा कार्य करते हुए युद्ध संबंधित खबरें टाइम्स ऑफ इण्डिया को भेजने लगे। उनकी लिखी खबरें और घटना वृतान्त मानवीय संवेदनाओं से जुड़े होते थे। यह भी रोचक तथ्य है कि विंसेंट चर्चिल भी इसी युद्ध में पत्रकार के रूप में आए।

दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गांधी जी वहां के समुदाय से निकटता से जुड़े और सरकार द्वारा वहां के निवासियों, प्रवासी मजदूरों व गरीब वर्ग की दुर्दशा का ज्ञान भारतीय जनता तक पहुंचाने के लिए वे विभिन्न समाचार-पत्रों में कॉलम लिखने लगे। स्टेटसमेन, अमृत बाजार पत्रिका, हिंदू, पायनियर आदि में उन्होंने साक्षात्कार भी दिए और प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को बखूबी उभारा। अल्पकाल में वे महसूस करने लगे कि अलग-अलग अवसरों पर लिखने से बेहतर है कि एक समाचार-पत्र निकाला जाए जो कि अफ्रीका में रह रहे भारतीयों की समस्याओं पर एकाग्र हो और उनकी आवाज मुखर कर सके। इसी संकल्प को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ाते हुए 4 जून, 1930 के "इंडियन ऑपिनियन" नामक पत्र के प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रवासी भारतीय समुदाय के प्रारम्भिक विश्वास, मूल्यों, विचारों, समस्याओं तथा हितों को वाणी देना "इण्डियन ऑपिनियन" का प्रमुख लक्ष्य था। यह समाचार पत्र सामुदायिक पत्रकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण बना। सामुदायिक हितों की पैरवी के साथ-साथ समुदाय को शिक्षित-दीक्षित करने के लिए इसका बखूबी उपयोग किया गया। अथक परिश्रम व अनवरत प्रतिभा के दम पर ब्रिटिश सत्ता से लड़ते हुए कई कानूनों को हटवाकर या परिवर्तित करवाने में सफलता अर्जित करते हुए यह पत्र ग्यारह वर्ष तक चला। इसके जरिये गांधी जी ने पत्रकारिता की शक्ति को पहचाना तथा आजादी के संघर्ष में इसका प्रचुर सकारात्मक उपयोग किया।

1917 में चंपारण की यात्रा ने उनके जीवन को नया मोड़ दिया। यहां नील के मजदूरों पर ब्रिटिश शासन के अमानवीय अत्याचारों ने उन्हें झकझोर दिया और इसकी रिपोर्ट पत्रकार गांधी के जीवन का महत्त्वपूर्ण आयाम तथा उत्कृष्ट

अनमोल विचार

अहिंसा मानवता के लिए
सबसे बड़ी ताकत है,
यह मनुष्य द्वारा तैयार विनाश के
ताकतवर हथियार से ज्यादा ताकतवर है।

महात्मा गांधी

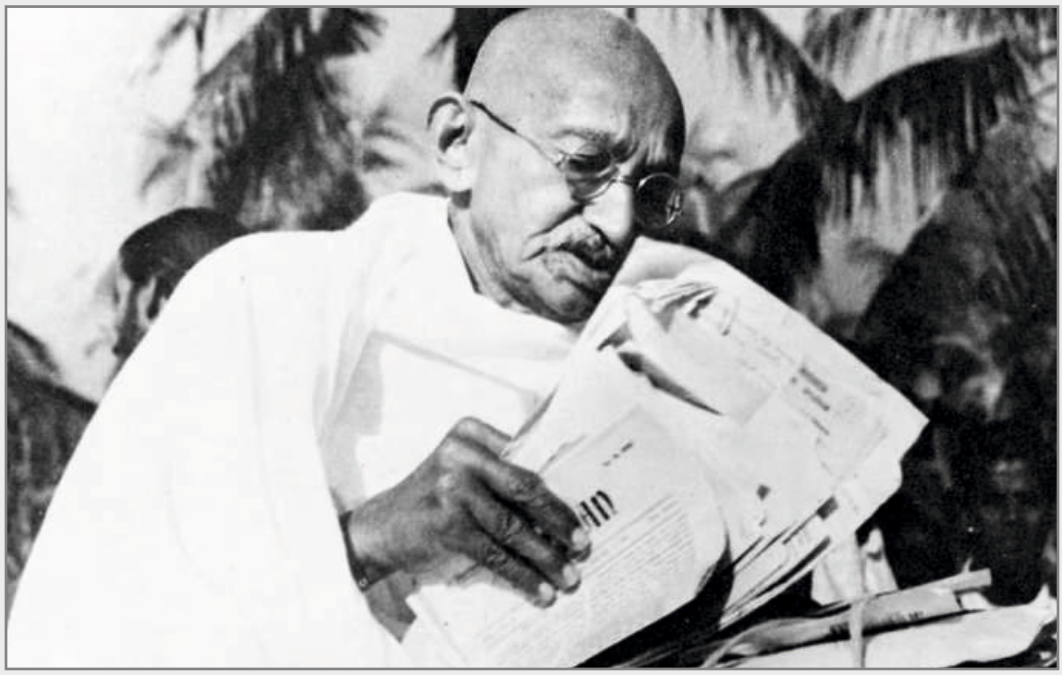

उदाहरण कही जा सकती है। इसी रिपोर्ट में उन्होंने सभी पक्षों से साक्ष्य लेकर सत्यान्वेषण करते हुए निष्कर्ष तक पहुंचे और यह विस्तृत प्रतिवेदन किसी भी पत्रकार को सीखने के लिए श्रेष्ठ उदाहरण कहा जा सकता है।

रोलेट एक्ट का विरोध करते हुए उन्होंने भारत में पहले पत्र सत्याग्रह का प्रकाशन किया और सविनय अवज्ञा आंदोलन की निरंतर खबरें छापकर भारतीय जनमानस में चेतना का संचार किया। इन्हीं दिनों बॉम्बे क्रॉनिकल द्वारा प्रकाशित यंग इण्डिया का संपादन किया और साथ में गुजराती मासिक पत्र नवजीवन का प्रकाशन-संपादन भी प्रारम्भ कर दिया जिसे शीघ्र ही हिंदी में भी प्रकाशित किया जाने लगा। ब्रिटिश सामंतवाद की असलियत सामने लाने में नवजीवन ने महत्ती भूमिका अदा की एवं इसी पत्र के माध्यम से प्रेस एक्ट 1910 का तार्किक विरोध गांधीजी की पत्रकारीय दृष्टि का सार्थक उदाहरण है। जहां स्वच्छता, वहां प्रभुता को अपनाकर उन्होंने साफ-सफाई करने वालों को ईश्वर का रूप माना। 1935 में एक साथ तीन पत्र 'हरिजन' अंग्रेजी, 'हरिजन बंधु' गुजराती और 'हरिजन सेवक' हिंदी भाषा में प्रकाशित किए।

गांधी जी किसी भी सूरत में सत्य, नैतिकता और जीवन-मूल्यों से समझौता करने को तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने पत्रों को विज्ञापनों के सहारे चलाने को सदैव अस्वीकार किया। दक्षिण अफ्रीका व भारत में उन्होंने अपने पत्र चंदे के आधार पर चलाये। उनकी मान्यता थी कि सदस्य संख्या का आधिक्य हो, पर सदस्यता शुल्क न्यून। क्योंकि उनका मानना था कि जो सदस्य शुल्क देगा वह अवश्य पढ़ेगा भी। सामुदायिक पत्रकारिता को नैतिक व मूल्य आधारित करने का उनका अभिनव प्रयास एक संपादक एवं पत्रकार के रूप में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि एक संपादक को धैर्यवान व सत्यान्वेषी रहते हुए केवल वही लिखना चाहिए जो सत्य तथ्य पर आधारित हो, परन्तु विनम्रता नहीं त्यागनी चाहिए और क्रोध को भी स्थान नही देना चाहिए।

भाषा विशेषज्ञ गणेश डैवी कहते है कि 'गांधी की भाषा बारिश की बूंदों की तरह है, उनकी बातों से भीगने का आनंद लिया जा सकता है किन्तु उनसे भीगने का कष्ट नहीं होता।' अपनी तार्किकता में भी गांधी जी आक्रामक नहीं होते थे। किसी के भी दृष्टिकोण को गांधी जी अहिंसा, सत्य, त्याग, नैतिकता व अपरिग्रह के समर्थन में मोड़ने में सफल दिखलाई देते हैं। हिटलर को लिखे पत्र में गांधी जी उन्हें 'प्रिय मित्र' संबोधित करते हुए लिखते हैं कि 'मैं आपको मित्र संबोधित कर रहा हूं तो यह कोई औपचारिकता नहीं है। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। मेरा मकसद पूरी मानवता से मैत्री कायम कर अपने मित्रों की संख्या बढ़ाना है।' इसी पत्र में युद्ध के औचित्य को निरर्थक बताते हुए वे कहते हैं कि 'आप जीत भी गए तो इसका यह अर्थ नहीं होगा कि आप सही थे। इस प्रकार अपनी भाषिक शक्ति द्वारा लड़ाई में जीतना सही मार्ग पर होने का परिचायक नहीं होना ऐसा कहकर मानो गांधी जी ने उसके महत्त्व को ही समाप्त कर दिया। एक पत्रकार, लेखक, संपादक या संवादकर्ता के रूप में गांधी जी ने सदैव अपने पाठकगण या श्रोताओं की नब्ज जानकर उनमें विश्वास कायम किया। सामुदायिक या जनपक्षधर पत्रकारिता के माध्यम से चिह्नित समुदाय के भीतर अपने विचारों को विश्वसनीयता से प्रस्तुत करते हुए उनकी चारित्रिक ईमानदारी ने उन्हें किसी का शत्रु नहीं बनने दिया। शुचिता के साथ तथ्यात्मक सत्यान्वेषण व मर्यादित, पारदर्शी भाषा आदि के प्रयोग द्वारा गांधी जी ने पत्रकारिता और जनसंवाद में सफलता अर्जित की।

बातचीत

शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना करने वाला राजस्थान पहला प्रदेश

श्री नरेश कुमार ठकराल
शासन सचिव

शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना करने वाला राजस्थान पहला प्रदेश है। इसका आविर्भाव किस तरह हुआ?

महात्मा गांधी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने और सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना की अपनी प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा बजट-घोषणा वर्ष 2019-20 में राज्य में शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के गठन की घोषणा की गई। इसके बाद बजट-घोषणा वर्ष 2021-22 में शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ को अपग्रेड कर इसे शांति एवं अहिंसा निदेशालय के रूप में स्थापित किया गया। राज्य में सौहार्द, भाईचारे की स्थापना एवं महात्मा गांधी के शांति एवं अहिंसा के सिद्धांतों, विचारों एवं दर्शन के प्रचार-प्रसार की महत्ता को ध्यान में रखकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म दिन पर आयोजित समारोह से पहले 1 अक्टूबर, 2022 को मुख्यमंत्री श्री गहलोत द्वारा राज्य में शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना की गई। ऐसा करने वाला राजस्थान पहला राज्य है।

महात्मा गांधी के विचारों, सिद्धांतों और दर्शन के प्रभावी प्रचार-प्रसार से जुड़ी निदेशालय की कार्ययोजना को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए जिलों और निकाय स्तर पर भी प्रयासों की जरूरत है। इसके लिए निदेशालय ने किस तरह की व्यवस्थाएं की हैं?

निदेशालय के कार्यों के लिए जिला स्तर पर जिला कलक्टर की अध्यक्षता में 33 जिलों में जिला शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठों का गठन किया गया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद् प्रकोष्ठ के सदस्य सचिव हैं। जिला स्तर के अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ- साथ संयोजक, तीन सह संयोजक तथा 50 गैर सरकारी सदस्यों को भी प्रकोष्ठ मे शामिल किया गया है। इसी तरह उपखंड स्तर पर उपखंड अधिकारी की अध्यक्षता में, नगरीय निकायों पर आयुक्त/ अधिशाषी अधिकारी की अध्यक्षता में, पंचायत समिति पर विकास अधिकारी की अध्यक्षता में एवं ग्राम पंचायत पर राजकीय विद्यालय के प्रधानाचार्य की अध्यक्षता में शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठों का गठन किया गया।

शांति एवं अहिंसा के विचारों के प्रचार पर आधारित विभिन्न क्रियाकलापों के प्रभावी आयोजन और विभाग में प्राप्त शांति और अहिंसा संबंधी विभिन्न प्रस्तावों पर कार्यवाही और उनके कार्यान्वयन के लिए समुचित मानव संसाधन की जरूरत है। इसे किस तरह पूरा किया जा रहा है?

विभिन्न तरह के कार्यों के प्रभावी संपादन के लिए निदेशालय ने मानव संसाधन बढ़ाने के लिए काम किए हैं। निदेशालय में वरिष्ठ सलाहकार (गांधी दर्शन विशेषज्ञ), पुस्तकालयाध्यक्ष, सहायक जनसंपर्क अधिकारी, कार्यक्रम समन्वयक (प्रशिक्षण), पुस्तकालय सहायक के पद स्वीकृत किए गए हैं। जिला शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के लिए

शांति एवं अहिंसा विभाग के उद्देश्यों, कार्ययोजना, कार्यों और हाल में अर्जित खास उपलब्धियों को लेकर शासन सचिव **श्री नरेश कुमार ठकराल** से **डॉ. लोकेश चंद्र शर्मा**, उपनिदेशक जनसंपर्क की बातचीत के प्रमुख अंश ...

सहायक लेखाधिकारी- प्रथम, गांधी दर्शन विशेषज्ञ, कार्यक्रम समन्वयक तथा गांधी दर्शन समन्वयक के पद स्वीकृत किए गए हैं। मुख्यमंत्री की बजट घोषणा वर्ष 2023-24 के तहत राज्य के प्रत्येक राजस्व गांव एवं शहरी वार्ड पर स्थानीय युवक-युवती की महात्मा गांधी सेवा प्रेरक के रुप में चयन प्रक्रियाधीन है। राज्य में 50 हजार महात्मा गांधी सेवा प्रेरकों का चयन किया जाना है। इसके अलावा राज्य स्तर, संभाग स्तर, जिला स्तर एवं उपखंड स्तर पर गांधी दर्शन पर आधारित प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर राज्य के लगभग 50 हजार युवा, महिला एवं समस्त वर्गो के व्यक्तियों को गांधी दर्शन एवं गांधी दर्शन पर आधारित जन कल्याणकारी योजनाओं पर प्रशिक्षण दिया गया है।

शांति और अहिंसा, सांप्रदायिक एकता, सामाजिक समता, सार्वभौम भ्रातृत्व, समरसता, अस्पृश्यता और सामाजिक सुधार में महात्मा गांधी का अतुलनीय योगदान है। गांधी जी के इन कार्यों और उनसे जुड़े साहित्य और प्रतीकों से आज की पीढ़ी को परिचित करवाने के लिए विभाग ने क्या खास कदम उठाए हैं?

राज्य सरकार द्वारा शांति एवं अहिंसा विभाग के तहत गांधी वाटिका ट्रस्ट, जयपुर अधिनियम, 2023 राज्य विधानसभा से पारित करवाया गया है। गांधी वाटिका ट्रस्ट जयपुर में महात्मा गांधी से संबंधित दुर्लभ पुस्तकों, साहित्य, फोटोग्राफ, फिल्मों और वस्तुओं के संग्रहालय, गांधी साहित्य पुस्तकालय एवं वाचनालय तथा कला एवं साहित्य के विभिन्न माध्यमों से महात्मा गांधी के विचारों के प्रचार-प्रसार एवं जनमानस की जानकारी हेतु निर्मित किए गए गांधी दर्शन म्यूजियम का संचालन एवं प्रबंध का कार्य करेगा। महात्मा गांधी के विचारों व मूल्यों से नई पीढ़ी को रूबरू करवाने के लिए जयपुर के सेंट्रल पार्क में बनी गांधी वाटिका एक अभिनव पहल है। इसके अलावा मुख्यमंत्री की बजट घोषणा वर्ष 2023-24 के अंतर्गत राज्य में 2,500 महात्मा गांधी पुस्तकालय एवं संविधान केंद्रों की स्थापना की जा रही है। महात्मा गांधी पुस्तकालय एवं संविधान केंद्रों का संचालन महात्मा गांधी सेवा प्रेरकों द्वारा किया जाएगा।

जनसमुदाय को गांधी दर्शन और महापुरुषों व स्वतंत्रता सेनानियों के महान विचारों के बारे में शिक्षित और प्रशिक्षित करने के लिए शांति एवं अहिंसा विभाग किस तरह के कार्यक्रम चला रहा है?

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, विभिन्न महापुरुषों, वीर शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों के महान विचारों और उनके माध्यम से शांति, समरसता, सामाजिक एकता और समता को बढ़ावा देने के लिए विभाग विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। इस संबंध में आयोजित कार्यक्रमों की सूची लंबी है। इनमें जयपुर में सभी संभागों के प्रशिक्षणार्थियों हेतु गांधी दर्शन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं स्वर्ण जयंती और स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ पर समस्त राजस्थान में दांडी यात्रा व शांति मार्च का आयोजन, भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की पुण्यतिथि पर राज्य के प्रत्येक जिला एवं उपखंड पर अहिंसा यात्रा एवं मौन श्रद्धांजलि कार्यक्रम, दांडी मार्च दिवस पर जनकल्याण यात्रा का आयोजन, भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगांठ पर प्रत्येक जिले में सर्व-धर्म प्रार्थना सभा तथा राष्ट्रीय ध्वज के साथ अहिंसा मार्च का आयोजन, राज्य स्तरीय महिला प्रतिभागियों का प्रशिक्षण शिविर, जिलों में जिला स्तरीय गांधी दर्शन प्रशिक्षिण शिविरों का आयोजन, राष्ट्र स्तरीय गांधीवादी संस्थाओं एवं एनजीओ का सम्मेलन, राष्ट्र स्तरीय कौमी एकता कार्यक्रम, राष्ट्र स्तरीय खादी संस्थाओं का सम्मेलन, कोटा में राष्ट्र स्तरीय श्रमिक विकास शिविर आदि प्रमुख हैं।

युवा पीढ़ी की चेतना में गांधी जी के विचारों के समावेश के लिए विभाग किस तरह की गतिविधियां चला रहा है?

युवाओं के लिए भी विभाग विभिन्न अवसरों पर शांति और समरसता से संबंधित विभिन्न प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन करता है। फरवरी, 2022 में राजस्थान युवा पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसके तहत राज्य के महाविद्यालयों व विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताएं और कार्यक्रम आयोजित किए गए। जून से अगस्त, 2022 तक संभाग स्तरीय गांधी दर्शन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया जिनमें लगभग 2,000 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। पाली के रोहट में जनवरी में राष्ट्र स्तरीय युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें तकरीबन 5,000 युवाओं, एनसीसी, स्काडट-गाइड, राष्ट्रीय युवा योजना के स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इसके अलावा विभाग द्वारा आयोजित अन्य प्रशिक्षण व चिंतन शिविरों और कार्यक्रमों में भी युवा बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

सार्वभौम व्यवस्था की तरह है

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत

श्याम सुंदर बिस्सा
आईएएस, सेवानिवृत्त

महात्मा गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत का मुख्य स्रोत उनका अपरिग्रह व्रत है जो उनके एकादश व्रतों में से एक है। ट्रस्टी को परिभाषित करते हुए वे कहते हैं कि संपत्ति के असली मालिक हम नहीं है। किसी के पास कोई वस्तु या संपत्ति है तो वह उसके पास जनहित के लिए न्यास रूप में अस्थाई रूप में रखी गई है। वह संपत्ति असल में लोक संपत्ति है और जिसके पास वह संपत्ति है वह महज उसकी सुरक्षा हेतु जिम्मेदार माना गया है। उसे रखने वाला उसका उपयोग अपने नैतिक कर्तव्यों की पूर्ति करते हुए विधिसम्मत जरूरत पूर्ण करने हेतु ही कर सकता है।

'मेरा है' के बजाय 'सबका है'

अपरिग्रह का पालन करने वाला अच्छा ट्रस्टी हो सकता है क्योंकि उसकी आवश्यकताएं सीमित होती हैं। परिग्रह प्रेरित कर सकता है कि जो कुछ हमारे पास है उसका अधिकतम उपयोग और उपभोग किया जाए क्योंकि उसमें "मेरा है" का भाव जुड़ा रहता है। ट्रस्टीशिप "मेरा है" के बजाय "सबका है" को लक्षित करता है। इसके मुताबिक मेरा उतना ही है जितना मैं एक अपरिग्रही के रूप में जीवन संचालन हेतु आवश्यक समझता हूं।

अनमोल विचार

पुस्तकों का मूल्य
रत्नों से भी अधिक है,
क्योंकि पुस्तकें अन्त:करण को
उज्ज्वल करती हैं।

महात्मा गांधी

प्रकृति के ट्रस्टी हैं हम

गांधी जी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत भौतिक संपत्ति ही नहीं, प्रकृति तक जाता है। हम सभी इस प्रकृति के ट्रस्टी हैं। अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी इन पंच महाभूतों को संरक्षित कर उन्हें जनहित के लिए सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है। उनके उतने ही दोहन का हमें अधिकार है जिससे जीवन संचालन हो सके। वायु, जल आदि का उतना ही उपयोग हो जिससे वे अन्य के लिए भी बचे रहें। इनके उपयोग में हम अपने ट्रस्टीशिप भाव को त्याग कर अति दोहन कर उपभोग करेंगे तो ये प्रदूषित होंगे और बचेंगे भी नहीं। हमें ऐसा करने का अधिकार नहीं है क्योंकि हम इसके न्यासी (Trustee) मात्र हैं, मालिक नहीं। महात्मा गांधी इस भाव से भी कई कदम आगे बढ़कर इसे स्वयं के शरीर तक ले आते हैं। यह शरीर भी चूंकि पंच महाभूतों अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी से ही निर्मित है, इसलिए इसका उपयोग व उपभोग भी उतना ही करें जो कर्तव्य पालन के लिए आवश्यक हो। शेष को जनहित एवं परोपकार हेतु समर्पित कर दें।

वस्तुओं के साथ सजीवों के भी न्यासी

गांधी जी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत पंच महाभूतों में सभी निर्जीव (Non-living) प्रकृति तत्वों एवं वस्तुओं के न्यासी होने के साथ समस्त सजीव (Living being) को भी ट्रस्टी मानता है। समस्त पशु-पक्षी की सुरक्षा और संरक्षा भी हमारे न्यास भाव के अंतर्गत है। ईश्वर ने इन सहजीवियों का न्यासी भी हमें बनाया है। हम इनके भी विधिसम्मत उपयोग और उपभोग के ही अधिकारी हैं।

इच्छाएं अनंत और संसाधन सीमित

जिस तरह गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत का स्रोत अपरिग्रह है। अपरिग्रह भाव का स्रोत ईशावास्योपनिषद का प्रथम मंत्र है, जहां "ईशा वास्यं इदं सर्वं यत् किंचित जगत्यां जगत, तेन त्यक्तेन भुंजीथा, मागृध: कस्य स्विद्धनम्" का कालजयी उद्घोष प्रकट हुआ है। यह मंत्र गांधी जी की दैनिक प्रार्थना का मुख्य मंत्र था। हम अपनी संपत्ति के मालिक नहीं हैं, इसलिए केवल त्याग कर भोगने (तेन त्यक्तेन भुंजीथा) के ही अधिकारी हैं। हमारे पास जो कुछ भी है उसका पहले जनहित में त्याग कर फिर शेष में से जितने की यह मंत्र अनुमति देता है उतना ही अपने जीवन संचालन हेतु अपरिग्रह पूर्वक उपयोग व उपभोग करना है:

यावत भ्रियेत जठरम तावत् सत्वं हि देहिनाम्
अधिकं योभि मन्येत स स्तेनो दण्डहर्मति

इस तरह जितने में आपका पेट भरता है या मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, बस उतना ही, अधिक किया तो वह चोरी है। यानी हम कहीं न कहीं किसी दूसरे का ले रहे हैं। जो गांधी जी के अस्तेय सिद्धांत के विरुद्ध है। गांधी जी कहते हैं प्रकृति जिसे पैदा करती है, उन सबकी आवश्यकता (Need) की पूर्ति की व्यवस्था करती है। लालच, इच्छा (Greed) किसी एक की भी पूर्ण नहीं कर सकती क्योंकि इच्छाएं अनंत हैं, साधन सीमित हैं। महाभारतकार ने पुनः युवावस्था प्राप्त कर उद्दाम भोग कर चुकने वाले सम्राट ययाति से कहलवाया है -

यत् पृथिव्यां ब्रीहियवौ हिरण्यं पशव: स्त्रिय:
नालमेकस्य पर्याप्तमिति पश्यन न मुह्यति

यदि मनुष्य के मन पर तृष्णा हावी रहे तो संसार का समस्त सोना, पशु, अनाज, पुरुष उसे संतुष्ट नहीं कर सकते। इस रहस्य को हृदयंगम कर मनुष्य को अंतत: वस्तु संग्रह में संतोष और भोग में संयम से काम लेना चाहिए।

साध्य साधन को न्यायोचित नहीं ठहरा सकता

इस तरह गांधी जी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत आर्थिक समानता की ओर अग्रसर होता है। यही गांधी जी का सामाजिक दायित्व बोध का सिद्धांत (Social Responsibility Investing Theory) है जो मौजूदा सीएसआर से मिलता है, लेकिन गांधी जी 'हरिजन' में यह लिखते हुए भी कि कई पूंजीवादी मेरे मित्र हैं, जिसकी मुझे शर्म आती है, यह भी लिखते हैं कि अर्थ कमाना तब तक बुरा नहीं है जब तक शुद्ध साधनों (Pure Means) से कमाया गया है। इसके साथ ही त्याग कर भोग का ध्यान रखा गया है। आखिर अर्थ भी हमारे पुरुषार्थ चतुष्टय का अंग है। शुद्ध साधनों की व्याख्या करते हुए वे कहते हैं साध्य की प्राप्ति साधन की पवित्रता का उद्घोष नहीं है। साध्य साधन को न्यायोचित नहीं ठहरा सकता। साधन अपवित्र है तो साध्य भी अपवित्र है। नीम की निंबोली से नीम ही लगेगा आम नहीं लग सकता है।

प्रशासन में न्यासिता

धन और प्रकृति के न्यासी के साथ गांधी जी का न्यासिता का सिद्धांत प्रशासनिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। प्रशासनिक कर्तव्यों के पालन में कोताही और प्रशासनिक तंत्र की जनहित से दूरी तभी होती है जब सत्ताधीश स्वयं को सत्ता का मालिक समझता है पर असल में वह उस सत्ता का, हुकुम का और कुर्सी का मालिक नहीं ट्रस्टी है। इस सिद्धांत के मुताबिक जो विश्वास जन-जन ने उसमें किया है जो न्यास उसे दिया है उसकी संरक्षा करना और उसके माध्यम से न्यासी बनाने वाले की सेवा संरक्षा करना उसका कार्य है। उसे समझना होगा कि उसके पास जो सत्ता है और हुकुम चलाने की ताकत है वह विशिष्ट उद्देश्य से सत्ता के वास्तविक मालिक यानी जनता द्वारा सौंपी गई है। उसे समझना होगा कि उसके पास जो हुकुम और सत्ता है उसकी काट का पत्ता मालिक के पास है।

इस तरह गांधी का ट्रस्टीशिप एकाकी न होकर सार्वजनिक सार्वभौम व्यवस्था की तरह है जो जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करते हुए हमें अपने व्यक्तिगत-सामाजिक कर्तव्यों का निरंतर एहसास करवाता है जो उत्तम सामाजिक आर्थिक प्रशासनिक व्यवस्था हेतु आवश्यक है।

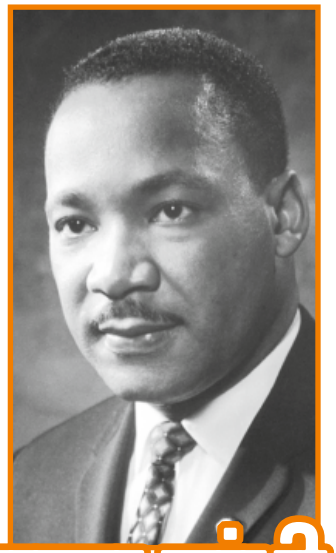

महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों से प्रेरित दुनिया

डॉ. आशीष खण्डेलवाल
सहायक निदेशक, जनसंपर्क

महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों ने दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रेरित किया है। इन सिद्धांतों ने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य किया है, और वे आज भी लोकतंत्र, मानवाधिकार और शांति के लिए संघर्ष में महत्वपूर्ण हैं।

महात्मा गांधी के सिद्धांतों ने दुनिया के कई देशों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दक्षिण अफ्रीका में, गांधी जी के सिद्धांतों ने रंगभेद के खिलाफ अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व किया, जो अंततः देश को रंगभेद के अंत की ओर ले गया। अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने गांधी जी के सिद्धांतों को अपने नागरिक अधिकार आंदोलन में अपनाया और उनके प्रयासों ने नस्लीय समानता के लिए महत्वपूर्ण जीत हासिल की। दक्षिण अमेरिका में गांधी जी के सिद्धांतों ने कई देशी आबादियों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया है।

गांधी जी के सिद्धांतों ने शांतिपूर्ण संघर्ष के लिए मॉडल प्रदान किया है। वे दिखाते हैं कि सचाई और अहिंसा का उपयोग सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को हासिल करने के लिए किया जा सकता है। लोकतंत्र में गांधी जी के सिद्धांतों का उपयोग सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ने के लिए किया जा सकता है। उनके सिद्धांत नागरिकों को अपने अधिकारों के लिए खड़े होने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुधारने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मानवाधिकारों के लिए संघर्ष में, गांधी जी के सिद्धांतों का उपयोग उत्पीड़ित लोगों को अपनी आवाज सुनाने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किया जा सकता है। वे नस्ल, धर्म या लिंग के आधार पर भेदभाव के खिलाफ लड़ने के लिए भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। शांति के लिए संघर्ष में, गांधी जी के सिद्धांतों का उपयोग हिंसा के बिना संघर्षों को विराम देने के लिए किया जा सकता है। वे विपरीत पक्षों के बीच समझौते तक पहुंचने और शांतिपूर्ण समाधानों को खोजने के लिए मदद करते हैं।

गांधी जी के सिद्धांत वे शक्तिशाली उपकरण हैं जो दुनिया भर में लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद कर रहे हैं। वे लोकतंत्र, मानवाधिकार और शांति के लिए संघर्ष में एक प्रेरणा और मार्गदर्शक हैं। यही वजह है कि हाल में भारत में आयोजित जी-20 सम्मेलन में सभी शीर्ष नेता नई दिल्ली में महात्मा गांधी की समाधि राजघाट पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए गए। इनमें अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जो बाइडेन, ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री ऋषि सुनक और संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री एंटोनियो गुटेरेस शामिल थे।

भारत के स्वाधीनता संग्राम ने दुनिया भर के राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया है और महात्मा गांधी के सिद्धांतों का दुनिया के अन्य आंदोलनों पर असर रहा है। इनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं :

अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन

अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के नेतृत्व से काफी प्रभावित था। इस आंदोलन के सबसे प्रमुख नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने गांधी जी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों को अपनाया और उन्हें अफ्रीकी-अमेरिकियों के अधिकारों के लिए संघर्ष में लागू किया। किंग ने गांधी जी को 'आधुनिक दुनिया का सबसे महान व्यक्ति' कहा था।

उन्होंने गांधी जी के सिद्धांतों का गहराई से अध्ययन किया और उन्हें अपने आंदोलन में अपनाया। किंग ने लिखा है, 'गांधी जी ने हमें दिखाया कि अहिंसा एक शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है।' किंग ने पहली बार मोंटगोमरी बस बहिष्कार में गांधी के सिद्धांतों को लागू किया। इस आंदोलन में अफ्रीकी-अमेरिकियों ने अलबामा में बसों में भेदभाव के खिलाफ विरोध किया। किंग ने अफ्रीकी-अमेरिकियों से शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने और हिंसा का सहारा नहीं लेने का आह्वान किया। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप 1956 में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने बसों में भेदभाव को असंवैधानिक करार दिया। 1959 में किंग पत्नी कोरेटा स्कॉट किंग के साथ भारत यात्रा पर आए। इस यात्रा के दौरान, उन्होंने गांधी जी के परिवार और दोस्तों से मुलाकात की और गांधीवादी विचारों के बारे में अधिक जानने का प्रयास किया। किंग ने बाद में लिखा कि इस यात्रा ने उन्हें गांधी जी के सिद्धांतों को और अधिक गहराई से समझने में मदद की। किंग ने अपनी किताब, स्ट्राइड टुवर्ड फ्रीडम में गांधी जी की अहिंसा के बारे में कई शिक्षाओं का विस्तार से वर्णन किया है। किंग ने लिखा है कि 'अहिंसक प्रतिरोधी, न केवल अपने प्रतिद्वंद्वी को गोली मारने से इनकार करता है, बल्कि वह उससे नफरत करने से भी इनकार करता है।'

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन को महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों से काफी प्रेरणा मिली थी। इस आंदोलन के अग्रणी नेता, नेल्सन मंडेला ने गांधी जी को अपना प्रेरणास्रोत बताया और कहा था कि गांधी जी की वजह से ही उन्हें आंदोलन चलाने की प्रेरणा मिली है। मंडेला ने अपनी जीवनी में लिखा है, 'अहिंसक आंदोलन तब तक प्रभावी है, जब तक आपका विपक्ष उन्हीं नियमों का पालन करता है, जिनका पालन आप कर रहे हैं। मेरे लिए अहिंसा कोई नैतिक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक रणनीति थी।' मंडेला ने गांधी जी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों को अपनाया और उन्हें दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ अपने संघर्ष में लागू किया। उन्होंने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन, बहिष्कार और नागरिक अवज्ञा के तरीकों का उपयोग किया। मंडेला के नेतृत्व में रंगभेद विरोधी आंदोलन ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। 1994 में, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का अंत हो गया और मंडेला देश के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बने। मंडेला ने अपने राष्ट्रपति पद के दौरान सत्य और सुलह के माध्यम से देश को एक साथ लाने का प्रयास किया। उन्होंने अपने विरोधियों को माफ करने का आह्वान किया और एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज बनाने के लिए काम किया। मंडेला और गांधी के बीच एक समानता यह थी कि दोनों ने अहिंसा को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा, जिसका उपयोग सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। दोनों ने अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से अपने देश में समानता और न्याय के लिए संघर्ष किया।

म्यांमार में लोकतंत्र का संघर्ष

महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों ने दुनिया भर में जिन नेताओं को प्रेरित किया है, उनमें से एक आंग सान सू की भी हैं। सू की, जो म्यांमार की लोकतांत्रिक नेता हैं, ने गांधी जी के सिद्धांतों को अपनाया और उन्हें अपने देश में लोकतंत्र के लिए अपने संघर्ष में लागू किया। सू की ने कहा है कि गांधी जी और अन्य भारतीय नेताओं ने उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने कहा, 'महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू जैसे कई नेताओं ने मुझे लोकतांत्रिक म्यांमार की मेरी खोज के लिए प्रेरित किया।' सू की ने गांधी जी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा, जिसका उपयोग सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। उन्होंने कहा, 'मैं अहिंसा के मार्ग की ओर आकर्षित थी, लेकिन जैसा कुछ लोग मानते हैं कि मैं नैतिक आधार पर भी ऐसा महसूस करती थी, तो यह गलत है।' सू की ने म्यांमार में कई सालों तक सत्तारूढ़ सैन्य शासन के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया। सू की के नेतृत्व में, म्यांमार ने महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिनमें से एक नागरिकों के लिए अधिक स्वतंत्रता और अधिकारों को बढ़ावा देना है। सू की का मानना है कि गांधी जी के सिद्धांत म्यांमार के राजनीतिक संघर्ष के लिए अभी भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा, 'हम अपने पूर्वजों की जीत से प्रेरणा ले सकते हैं, लेकिन हम उन विचारों और रणनीति की तलाश में खुद को अपने इतिहास तक ही सीमित नहीं रख सकते हैं, जो हमारे अपने संघर्ष में सहायता कर सकें।'

श्रीलंका का स्वतंत्रता आंदोलन

श्रीलंका को 1948 में अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिली और इस आंदोलन को भी महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों से प्रेरणा मिली। वर्ष 1927 में, महात्मा गांधी ने श्रीलंका का दौरा किया, जिसे उस समय सीलोन के नाम से जाना जाता था। उन्होंने श्रीलंकाई स्वतंत्रता सेनानी चार्ल्स एडगर कोरिया के निमंत्रण पर यह यात्रा की थी। गांधी जी ने श्रीलंका में कई भाषण दिए और उनके विचारों ने कई उल्लेखनीय नेताओं को प्रभावित किया, जिनमें बौद्ध पुनरुत्थानवादी अनागारिका धर्मपाल भी शामिल थे। धर्मपाल ने गांधी जी के अहिंसा के सिद्धांतों को अपने आंदोलन में अपनाया। उन्होंने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन और बहिष्कार का उपयोग करके ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। 1935 में, लंका समा समाज पार्टी (एलएसएसपी) की स्थापना की गई। यह पार्टी स्वतंत्रता की मांग करने वाली पहली पार्टी थी। इन आंदोलन के परिणामस्वरूप 1948 में श्रीलंका को अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिली।

घाना में लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना

महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों ने दुनिया भर में उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए संघर्ष करने वाले लोगों को प्रेरित किया। अफ्रीका में गांधी जी के विचारों ने विशेष रूप से घाना के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रभावित किया। घाना के पहले अफ्रीकी मूल के प्रधानमंत्री क्वामे न्क्रूमा ने गांधी जी के जीवन और उनकी शिक्षाओं से काफी प्रेरणा ली। न्क्रूमा ने गांधी जी को 'महान नेता और एक महान व्यक्ति' कहा। उन्होंने कहा कि गांधी जी के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों ने उन्हें घाना की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। न्क्रूमा ने 1945 में मैनचेस्टर में पांचवीं पैन-अफ्रीकी कांग्रेस का आयोजन किया। इस सम्मेलन में गांधी जी के अहिंसक आदर्शों को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में प्रशंसित किया गया। न्क्रूमा ने कहा कि गांधी जी के सिद्धांतों ने अफ्रीकी लोगों को यह विश्वास दिलाया कि वे अपने अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण तरीके से लड़ सकते हैं। 1957 में, घाना ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र हो गया। न्क्रूमा के नेतृत्व में, घाना ने एक लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना की। घाना की स्वतंत्रता अफ्रीका में उपनिवेशवाद के अंत की शुरुआत थी।

गांधी जी की राजस्थान यात्राएं

डॉ. गोरधन लाल शर्मा
राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बारे में कभी महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि 'आने वाली पीढ़ियां विश्वास नहीं करेंगी कि हाड़ मांस का कोई ऐसा इंसान भी धरती पर चला होगा।' उनका ऐसा ही असाधारण व्यक्तित्व था। अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए, पीड़ित मानवता के लिए ही वह सदा जिए। उनका पूरा जीवन अंधेरों से उजास का संवाहक रहा है। उन्होंने कहा था, 'जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहं तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी आजमाओ - जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो उसको याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना हितकारी होगा।' यही गांधी जी के रामराज्य यानी सुशासन का मूल जंतर है, जो आज भी प्रासंगिक है।

गांधी जी स्वयं 'वन मैन आर्मी' थे। उन्होंने अपने जीवन दर्शन से लाखों लोगों को अपने साथ जोड़ कर संपूर्ण भारत में एक बड़ा आंदोलन तैयार किया। गांधी जी ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भारत भ्रमण किया। राजस्थान से उनका खासा लगाव था। वे अपने जीवन काल में चार बार राजस्थान आए एवं स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े गांधीवादियों को मार्गदर्शन दिया। गांधी जी 1921, 1922 और 1934 के अलावा एक बार 1930 में गुप्त यात्रा पर अजमेर आए थे। गांधी जी का मानना था कि देशी राजा अंग्रेजी हुकूमत के सहारे ही टिके हैं, और अजमेर-मेरवाड़ा सीधे अंग्रेजी शासन के अधीन था। अतः उन्होंने अजमेर आकर अंग्रेजों से सीधे लड़ाई को चुना।

गांधी जी की पहली अजमेर यात्रा

अजमेर तथा ब्यावर नगर शुरू से ही राजनीतिक आंदोलनों के प्रमुख केंद्र बने हुए थे। गांधी जी ने जब देश में असहयोग आंदोलन का श्रीगणेश किया तो अजमेर उसमें आगे था। प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन पर अजमेर में जबरदस्त हड़ताल हुई। हिंदू-मुस्लिम एकता का गांधी जी का स्वप्न अजमेर ने चरितार्थ करके

दिखाया। अजमेर के हिंदू और मुसलमान दूध और शक्कर की भांति एक दूसरे के साथ घुल-मिल गए और दोनों ने असहयोग का झंडा ऊंचा किया। श्री चांदकरण शारदा और मौलाना मुईनुद्दीन असहयोग आंदोलन के नेताओं के रूप में सामने आए और जनता अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एकजुट हो गई।

गांधी जी जब पहली बार अजमेर आए तब मौलाना मोहम्मद अली भी उनके साथ थे। गांधी जी के अथक प्रयासों से अजमेर में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में खिलाफत आंदोलन वालों से समझौता हुआ। ख्वाजा साहब की दरगाह में महात्मा गांधी तथा मौलाना मोहम्मद अली के ओजस्वी भाषण हुए। अजमेर का माहौल हिंदू-मुस्लिम सौहार्द का एक श्रेष्ठ उदाहरण बन गया। गांधी जी ने पहली अजमेर यात्रा में कचहरी रोड स्थित श्री गौरीशंकर भार्गव के निवास स्थान पर प्रवास किया था।

गांधी जी की दूसरी अजमेर यात्रा

गांधी जी का दूसरी बार 8 मार्च, 1922 को अहमदाबाद से अजमेर आना हुआ। इस बार गांधी जी स्वामी कुमारानंद के निमंत्रण पर आए थे। गांधी जी जब अजमेर स्टेशन पर पहुंचे तो स्वामी कुमारानंद ने उनका स्वागत किया। गांधी जी श्री गौरीशंकर भार्गव के निवास स्थान फूल निवास में कचहरी रोड पर ठहरे थे। उस समय अजमेर में जमीयतुल उलेमा कॉन्फ्रेंस हो रही थी, जिसके मौलाना मुईनुद्दीन स्वागताध्यक्ष थे। इस कॉन्फ्रेंस में अन्य उलेमाओं के अलावा मौलाना हसरत मोहानी भी आए थे।

गांधी जी देश में अहिंसा के पक्ष में वातावरण बना रहे थे, किंतु उलेमा कॉन्फ्रेंस में इस आशय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया कि मजहब और इंसाफ की हिफाजत के लिए तलवार उठाना भी जायज होगा। गांधी जी दरगाह में उलेमाओं की बैठक में शामिल हुए। उन्होंने समझा-बुझाकर उलेमा कॉन्फ्रेंस के प्रस्ताव को बदलवाया। मुईनुद्दीन ने गांधी जी का समर्थन किया था। वापसी में मौलाना हसरत मोहानी गांधी जी के साथ ही अहमदाबाद गए थे। उन्होंने गांधी जी को वचन दिया था कि वह अहिंसा का पालन करते हुए कांग्रेस कार्यक्रम का समर्थन करेंगे।

गांधी जी 10 मार्च को साबरमती अहमदाबाद वापस लौट गए। उसी रात

उनको सरकार ने गिरफ्तार किया और मुकदमा चला कर छह वर्ष कैद की सजा दे दी। सरकार तो उन्हें अजमेर में ही गिरफ्तार करना चाहती थी, किंतु स्थानीय अधिकारियों ने इस अरुचिकर घटना को अपने यहां नहीं होने दिया। उन्हें अशांति फैल जाने की आशंका थी।

1930 में अजमेर की गुप्त यात्रा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक बार गुप्त यात्रा पर अजमेर आए थे। इस यात्रा की जानकारी उनके करीबियों को ही थी। रात में बापू शहर की तंग गलियों से गुजरते हुए रास्ता भटक गए और एक नोहरे में जा पहुंचे। वहां उनके प्रशंसक माणकचंद सोगानी ने उन्हें पहचान लिया और बापू ने रात उन्हीं के घर गुजारी। सोगानी वर्ष 1972 में अजमेर पूर्व से विधायक रह चुके हैं। दिवंगत सोगानी के पुत्र सुधीर सोगानी को आज भी उनके पिता की ओर से सुनाया गया वह किस्सा याद है। बात वर्ष 1930 की है, खजाने के नोहरे में स्थित उनके पुराने घर में रात करीब 11 बजे उनके पिता माणकचंद सोगानी झरोखे में बैठे थे। तभी अचानक उनकी नजर गांधी जी पर पड़ी। उन्होंने झरोखे से ही आवाज दी बापू आप यहां कैसे? वे नीचे उतरे और गांधी जी से बात की। तब पता चला कि गांधी जी खजाना गली से कहीं जा रहे थे, तो रास्ता भटककर नोहरे में आ गए।

गांधीवादी माणकचंद सोगानी ने गांधी जी को घर पर बुलाया और आग्रह किया कि आज रात आप यहीं विश्राम करें और वे मान गए। गांधी जी को घर में देखकर उनके दादा नेमीचंद सोगानी, चाचा निहालचंद और चाची अनूप कंवर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। घर में घुसते ही गांधी जी ने कुछ भी विशेष इंतजाम करने से मना कर दिया। गांधीजी ने दूध पिया और सो गए। तड़के ही घर से चले गए। जाते-जाते उन्होंने माणकचंद सोगानी को उनकी यात्रा का किसी से भी जिक्र नहीं करने की हिदायत दी, क्योंकि उस जमाने की अंग्रेज राज की पुलिस उनके परिवार को परेशान करती। इस घटना के कई दिनों बाद स्वतंत्रता सेनानी दिवंगत ज्वालाप्रसाद शर्मा ने माणकचंद सोगानी की प्रशंसा भी की। सोगानी ने अपने परिवार से भी आजादी के बाद यह किस्सा साझा किया।

गांधी जी की 1934 की अजमेर यात्रा

गांधी जी की तीन अजमेर यात्राओं में सबसे महत्वपूर्ण 1934 की यात्रा थी। अपनी नौ महीने की हरिजन यात्रा के सिलसिले में गांधी जी 4 जुलाई की रात को अजमेर शहर आए और यहां की दो दिन की यात्रा के बाद 6 जुलाई को ब्यावर पहुंचे। अजमेर से गांधी जी सवेरे मोटर से रवाना होकर ब्यावर पहुंचे। यहां उन्हें चंपालाल रामेश्वर क्लब की इमारत में ठहराया गया। जहां अब चंपानगर कॉलोनी है।

राजपूताना हरिजन सेवक संघ के निमंत्रण पर गांधी जी अजमेर पहुंचे। उस समय स्वागत समिति के अध्यक्ष हरविलास शारदा और रामनारायण चौधरी तथा कृष्णगोपाल गर्ग मंत्री थे। 5 जुलाई को गांधी जी महिलाओं की सभा में गए और कहा - अस्पृश्यता पाप है, यह प्रेम और दया की भावना के विपरीत है। इसलिए इस पाप का अंत होना चाहिए। इस सभा में सभी जातियों का प्रतिनिधित्व रहा।

गांधी जी के ब्यावर पहुंचने के साथ ही एक घटना घटी जो कि ऐतिहासिक बन गई। जब गांधी जी ब्यावर पहुंचे तो वहां एक 24 साल के युवा पं. चंद्रशेखर ने अपने साथियों के साथ गांधी जी को काले झंडे दिखाए। यह नौजवान काशी से शिक्षा प्राप्त संस्कृत का मूर्धन्य विद्वान था। इसके उपरांत पं. चंद्रशेखर गांधी जी से मिले और उनको शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। इसके जवाब में गांधी जी ने हंसते हुए कहा कि तुम घोषणा कर दो कि गांधी बिना शास्त्रार्थ के ही हार गया। यह घटना साधारण-सी लगती है, लेकिन ब्यावर की जमीन पर इतिहास रच गई। पं. चंद्रशेखर आगे चलकर पुरी के शंकराचार्य बने और स्वामी निरंजनदेव तीर्थ कहलाए। वे 1964 से 1992 तक शंकराचार्य रहे। इससे पूर्व वे अखिल भारतीय रामराज्य परिषद के मंत्री के अलावा 1955 से 1964 तक महाराजा संस्कृत कॉलेज जयपुर के प्राचार्य रहे।

ब्यावर प्रवास के दौरान गांधी जी द्वारा विधवा विवाह का समर्थन

उस जमाने में विधवा विवाह किसी क्रांति से कम नहीं था। यह कदम उठाने वाले साहसी व्यक्ति ब्यावर के गोविंद प्रसाद कौशिक थे। ब्यावर में यह पहला विधवा विवाह था। कौशिक की विधवा पुत्री शारदा का विवाह दिल्ली के गोपालचंद्र शर्मा के साथ हुआ। इसमें भिवानी हरियाणा के बड़े कांग्रेसी नेता नेकीराम शर्मा भी शामिल हुए। गांधी जी विवाह में तो शामिल नहीं हुए थे, लेकिन नेकीराम शर्मा नव दंपति को गांधी जी के पास आशीर्वाद दिलाने लेकर गए तो गांधीजी अत्यंत प्रसन्न हुए और नवविवाहित जोड़े को अपना आशीर्वाद दिया।

ब्यावर प्रवास के दौरान मिशन ग्राउंड पर गांधीजी की सभा हुई। इस सभा में स्थानकवासी जैन साधुओं ने गांधी जी को मानपत्र दिया और हरिजन कल्याण कोष के लिए धन संग्रह किया। दस्तावेज बताते हैं कि साधु चुन्नीलाल और लक्ष्मी ऋषि गांधी जी के मार्ग पर रचनात्मक कार्यों में लग गए। सभा में गांधी जी को जनता और हरिजनों ने मानपत्र भेंट किया और हरिजन कोष के लिए 1,172 रुपए और कुछ आने दिए। गांधी जी हरिजन बस्तियों में गए। ब्यावर से गांधी जी मारवाड़ जंक्शन होते हुए रेल से लूणी गडरा रोड होते हुए कराची रवाना हुए।

वैष्णव जन तो तैने कहिए जे पीर पराई जाणे रे

मोहनदास करमचंद गांधी एक बैरिस्टर से महात्मा, बापू और राष्ट्रपिता तक का सफर करने वाली वह शख्सियत है जिसने भारत भूमि को ब्रिटिश शासन से आजाद कराने से पहले रूढ़ियों-बंटवारों और असमानता वाले समाज को एक कर दिया। राजस्थान में कुएं-बावड़ी तक जातियों में बंटे हुए थे, गांधी जी के आते ही बड़ा तालाब सबका हो गया। गांधी अजमेर में हरिजनों से गले मिले और उनके हाथ का खाना भी खाया। आजादी की लड़ाई से हर आदमी को जोड़ने के लिए गांधी जी की यात्रा ने राजस्थान की सामाजिक सोच को बदला। यात्रा के दौरान गांधी जी ने सबके बीच प्रार्थना को दोहराया - वैष्णव जन तो तैने कहिए जे पीर पराई जाणे रे।

राजपूताना के हरिजन नेताओं ने बेगार प्रथा के बारे में बापू को बताया। गांधी जी राजस्थान चरखा संघ के कार्यकर्ताओं से मिले। इन कार्यकर्ताओं ने गांधी जी को बताया कि उनकी ओर से 1926 में अमरसर जयपुर में स्थापित की गई हरिजन पाठशाला इतने अच्छे से चल रही है कि सवर्णों के बच्चे भी अब इसमें पढ़ रहे हैं। इसी दिन गांधी जी ने हरिजन सेवकों को भी संबोधित किया। गांधी जी की इस यात्रा का प्रभाव ऐसा रहा कि जातियों का भेद आगे जाकर मिटता चला गया।

हरिजन सामाजिक सुधार एवं उत्थान के कार्य

गांधी जी की सोच थी कि आजादी की लड़ाई जीतने के लिए भारतीयों की एकजुटता जरूरी है। यहां हरिजनों और अन्य कई जातियों को छोटा मानकर भेदभाव-छुआछूत की स्थिति थी। गांधी जी हरिजन बस्तियों में गए। अजमेर के दिल्ली दरवाजा की बस्ती, तारागढ की ढाल की मलूसर बस्ती में गांधी जी ने देखा - हरिजनों की सड़ी गली झोंपडियां थीं। पानी के नाम पर 400 परिवारों के लिए एक नल। रैगरों के मोहल्ले में भी यही दुर्दशा थी। गांधी जी की इस यात्रा का पहला असर दिखा, यह दिखा कि अजमेर की तत्कालीन म्यूनिसिपल कमेटी ने हरिजनों और अन्य जातियों के लिए बड़ा तालाब खोल दिया।

राजपूताना हरिजन सेवक संघ ने गांधी जी को मानपत्र भेंट किया। इसके मुताबिक राजपूताना की तत्कालीन जनसंख्या 1 करोड़ 12 लाख 25 हजार 712 में हरिजनों की आबादी 15,65,407 थी। जो कुल आबादी का 14 प्रतिशत और हिंदू आबादी का 15.5 फीसदी थी।

गांधी जी को कार्यकर्ताओं ने हरिजनों के मंदिरों-स्कूलों में प्रवेश पर रोक, बेगार, पानी और अन्य सुविधाओं से वंचित रखना, कर्ज का बोझ जैसी लाचारी और शराब-मांस जैसी बुराइयों के बारे में बताया तो गांधी जी ने सबको सावचेत किया। स्वतंत्रता आंदोलन के नेता अर्जुनलाल सेठी सहित कई लोगों ने हरिजनों के उत्थान के लिए धन दिया। गांधी जी की राजस्थान हरिजन यात्रा की व्यवस्थाएं सवर्ण जातियों के लोगों ने की। सभा में सभी जातियां, सभी कौम के हजारों लोग शामिल हुए। बुराइयों को पहचान कर सुधार की शुरुआत हुई। हरिजन स्कूल खुले, जिनमें सभी जातियों के बच्चे पढ़ने लगे।

The books we should read to understand Mahatma Gandhi

Mahesh Pareek
Assistant Public Relation Officer

Mahatma Gandhi was a prolific writer himself and much has been written about him all over the world. These writings cover a variety of aspects, including his philosophy, his political views, and his personal life. Here, a brief introduction of some of the much talked about writings is given which inspired Mahatma Gandhi, penned down by him and written by other scholars about him which may help us to understand our Father of the Nation. All these books are a treat to the readers imparting an abundance of knowledge that this great visionary held.

BOOKS THAT INFLUENCED MAHATMA GANDHI'S IDEAS

Works of many notable personalities influenced Mahatma Gandhi's ideas. He wrote in his autobiography "The Story of My Experiments with Truth" that the three most important modern influences in his life were Leo Tolstoy's "The Kingdom of God Is Within You", John Ruskin's "Unto This Last", and the poet Shrimad Rajchandra. He was also inspired by Henry Thoreau's work "Civil Disobedience".

The Kingdom of God is Within You

"The Kingdom of God Is Within You" is a philosophical treatise written by Leo Tolstoy. It lays out a new organization for society focusing on universal love. In this book Tolstoy speaks of the principle of nonviolent resistance when confronted by violence. This book is cited by Mahatma Gandhi as one of the chief influences in the development of his philosophy of non-violence. He writes in "The Story of My Experiments with Truth" (Chapter 15) that Tolstoy's book "overwhelmed" him, and "left an abiding impression".

Unto This Last

"Unto This Last" is a book on economics by John Ruskin. Mahatma Gandhi found an important part of his social and economic ideas from this text. Mahatma Gandhi wrote of the "magic spell" cast on him by this book and he translated "Unto This Last" into Gujarati in 1908 under the title of "Sarvodaya" (Well Being of All).

Civil Disobedience

"Civil Disobedience" is a book by Henry David Thoreau. In this work Thoreau asserts that the judgment of an individual's conscience is not necessarily inferior to the decisions of a political body. Mahatma Gandhi was impressed by Thoreau's arguments and used this interpretation to suggest an equivalence between Thoreau's civil disobedience and his own Satyagraha.

Works of Shrimad Rajchandra

Shrimad Rajchandra was a poet, philosopher, and reformer from Gujarat. Mahatma Gandhi noted the impression of Shrimad Rajchandra in his autobiography calling him his "guide and helper" and his "refuge in moments of spiritual crisis". Notable works of Rajchandra are Stri Niti Bodhaka and Sad-bodh-shatak on ethical topics.

BOOKS OF MAHATMA GANDHI

Mahatma Gandhi penned down quite a few books including his autobiography and several articles himself. He wrote exhaustively on vegetarianism, health, religion, social reforms, poverty, character building, new education, the role of industrialisation, villages and social progress etc. He talked about many virtues in his writings like truth, non-violence, honesty, hard work, fearlessness, tolerance, sacrifice, and removal of untouchability. He also emphasised the importance of vows, labour, and the need to make Swadeshi a way of life. Mahatma Gandhi usually wrote in Gujarati, though he also revised the Hindi and English translations of his books. Like his character, his writing style was clear, precise, simple, and truthful yet forceful.

Hind Swaraj

One of Mahatma Gandhi's earliest publications, "Hind Swaraj", published in Gujarati in 1909. This book became the intellectual blueprint for the independence movement. In it he expresses his views on Swaraj, modern civilization, mechanisation, among other matters. "Hind Swaraj" takes the form of a dialogue between two characters, The Reader and The Editor. The Reader voices the common beliefs and arguments of the time concerning Indian Independence. The Editor explains why those arguments are flawed and interject his own arguments. In the dialogue that follows, Mahatma Gandhi outlines four themes that structure his arguments: 1. Home Rule is Self-Rule, 2. Passive resistance, 3. Self-reliance (Swadeshi) and 4. Critical of western civilization.

The Story of My Experiments with Truth

"The Story of My Experiments with Truth" covers Mahatma Gandhi's life from early childhood to 1921. In this book Mahatma Gandhi explores memories of his childhood and youth, his time in South Africa, followed by a narration of the activities he engaged in after his return to India. It provides a deep social and spiritual perspective of how he developed his life's principles and how he remained fierce

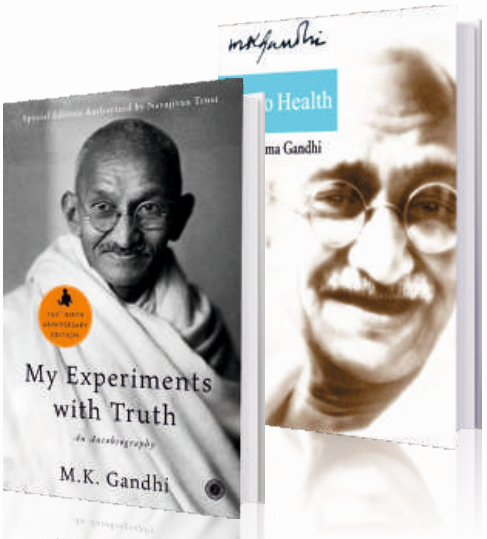

in his beliefs throughout. The book relates how Gandhi experimented on himself as he pursued his search for truth, truth being for him a synonym for God. The introduction reads, "What I want to achieve - what I have been striving and pining to achieve these thirty years- is self- realization, to see God face to face, to attain Moksha. I live and move and have my being in pursuit of this goal." In the last chapter he writes, "My life from this point onward has been so public that there is hardly anything about it that people do not know...." Mahadev Desai translated the book from Gujarati into English.

Key To Health

This booklet is a manual or a guide to health. It enables the reader to have a basic idea of health and covers various aspects of health including the human body, air, water, food, celibacy, tea, coffee, intoxicants, opium and tobacco. Mahatma Gandhi gave it the name "Key to Health", and said anyone who observes the rules of health mentioned in this book will find that he would have the real key to unlock the gates, leading him to good health.

COMPILATIONS OF MAHATMA GANDHI'S WRITINGS

Mahatma Gandhi edited or published newspapers like Harijan, Indian Opinion, Young India and Navajivan. In addition, he wrote many letters almost every day to individuals and newspapers. Many compilations of his letters, journal entries, speeches and articles have been published. A documentation project of Mahatma Gandhi's writings and speeches was carried out under "The Collected Works of Mahatma Gandhi" by the Government of India. The complete collection comprises 100 volumes and more than 50,000 pages of text.

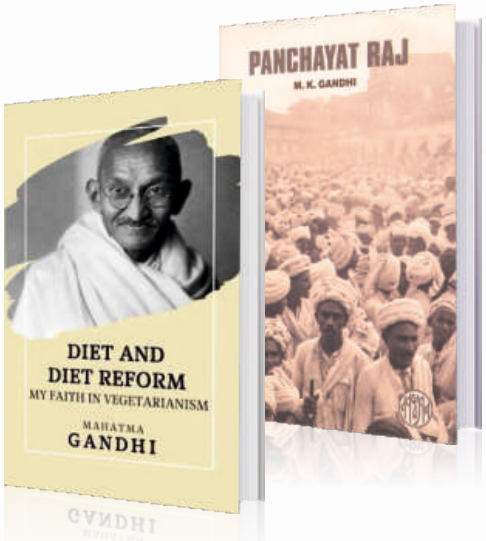

BOOKS ON MAHATMA GANDHI

A lot has been written about the life of the leader whose greatness was undefinable. Here are some of the popular books written by historians and scholars of Mahatma Gandhi looking at him in different perspectives:

Sabarmati To Dandi

In this book author Jyotsna Tiwari narrates the march on foot undertaken by Mahatma Gandhi and seventy-eight followers to breach the salt law in detail. This book contains comprehensive information about the Dandi March including speeches and letters of leaders.

The Making of A Social Reformer: Gandhi In South Africa, 1893-1914

This Surendra Bhana and Goolam H. Vadeh's work provides a good understanding of the day-to- day cultural, social and political issues facing the Indian community during Gandhi's stay in South Africa.

Prisoner of Hope

The author of this book Judith Margaret Brown is a British historian who was born in India and has deep interest in Indian politics. In this book she analyses the important events of the life of Mahatma Gandhi to identify Gandhi's impact, his choices and options, in the context of the time, place and circumstances. The inner dilemmas of the leader are dexterously explored in the text. Considerable space is given to Gandhi's views on matters other than politics like diet, personal hygiene, education and health.

Gandhi the Man: How One Man Changed Himself to Change the World

Author Eknath Easwaran's major goal in this book is to reveal the spiritual dimensions of Mahatma Gandhi's life. The book contains four major parts entitled 1. The Transformation, 2. The Way of Love, 3. Mother and Child, and 4. Gandhi the Man. The author highlights how we can all use Gandhi's teachings to make our families, workplaces, and communities more peaceful in today's world.

Gandhi: His Life and Message for the World

This is a straightforward biography of Mahatma Gandhi by Louis Fischer. The author deliberately limits himself to record Mahatma Gandhi's life with minimum analysis and interpretation. This book also traces the psychological factors which helped to produce Mahatma Gandhi.

Great Soul: Mahatma Gandhi and his Struggle with India

Pulitzer Prize-winning author Joseph Lelyveld's biography of Mahatma Gandhi splits between the times Gandhi spent in South Africa and his return to India as the Mahatma. It presents a more comprehensive picture of the great man.

Gandhi Before India

Using private papers of Gandhi's contemporaries and co-workers, newspapers and court documents of the time as his sources author Ramachandra Guha creates a narrative showing how Gandhi's formative years shaped his philosophy.

My Dear Bapu : Letters from C. Rajagopalachari to Mohandas Karamchand Gandhi, Devadas Gandhi and Gopalkrishna Gandhi

Bringing to light rare letters from the family archives and public repositories the editor of this work Gopalkrishna Gandhi reveals new aspects of the personal and public lives of two of the tallest figures in our modern history- Mahatma Gandhi and Chakravarti Rajagopalachari.

The Death and Afterlife of Mahatma Gandhi

In this book author Makarand R Paranjape looks into the assassination of Mahatma and its implications and looks for a deeper meaning behind his death.

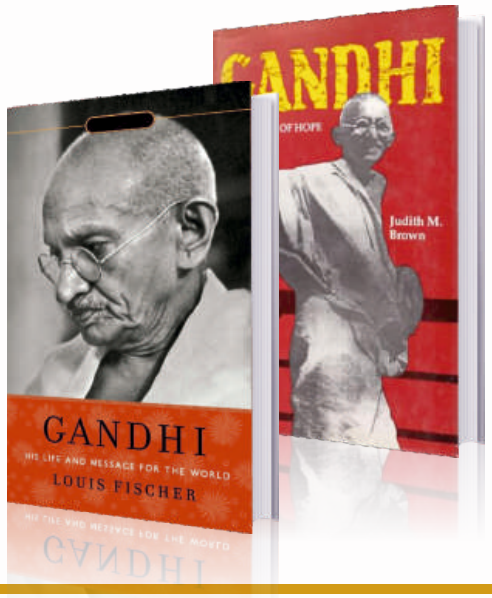

गांधीजी अतीत ही नहीं वर्तमान और भविष्य भी हैं

प्रोफेसर विकास नौटियाल
महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंसेज

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में स्वीकृत करना उनके चिंतन की वैश्विक प्रासंगिकता को उद्घाटित करता है। गांधी के जीवन का उद्देश्य एक वैज्ञानिक की भांति सत्य का अनुसंधान करना रहा था। उन्होंने एक सामाजिक वैज्ञानिक के समान अपने सिद्धांतों का साबरमती-वर्धा आश्रम रूपी प्रयोगशालाओं में परीक्षण कर जन आंदोलन एवं अन्य तकनीक के माध्यम से न केवल भारत को ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्त किया अपितु सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के निराकरण के अभिनव मार्गों को भी प्रशस्त किया। अपने चिंतन के वैज्ञानिक स्वरूप के कारण ही उनमें भारत में प्रचलित सनातन मूल्यों की समग्रता दिखाई देती है। इसी क्रम में वे स्वयं को सनातनी भी कहा करते थे। अनुसंधान की प्रक्रिया में ही उन्होंने पहले ईश्वर को सत्य माना उसके बाद अपने अनुभव एवं सत्य के साथ प्रयोग के आधार पर सत्य को ही ईश्वर कहा। गांधी चिंतन के अवयवों में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, सर्वोदय, स्वराज, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप, अभय, सर्वधर्म समभाव, छुआछूत निवारण महत्वपूर्ण माने गए हैं। अपने सत्य के अनुसंधान की यात्रा के कारण ही गांधी कह सके कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन एवं स्टीफन हॉकिंस के द्वारा गांधी के महत्व को समझ कर भविष्यपरक चित्रण करना उनकी प्रासंगिकता को ही इंगित करता है।

गांधी जी की शासन विधि

मानव जीवन में शासन विधि (Governance) का विकास उसकी विचारधारा के उत्तरोत्तर विकास से ही होता रहा है। वैश्विक स्तर पर होने वाले संकट, युद्ध, वैश्विक आतंकवाद, सामाजिक राजनीतिक संघर्षों की पृष्ठभूमि में कार्थेजिनियन शांति (जबरन स्थापित की जाने वाली शांति) के बजाय वास्तविक शांति की आवश्यकता है। इसके लिए सैनिकों के साथ-साथ शांतिवीरों की अधिक आवश्यकता है। वैश्विक एवं आंचलिक स्थानों पर होने वाले संघर्षों के निवारण के लिए गांधीय चिंतन एवं शासन विधि अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निवारक मानी गई है। इसी कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विविध शांति प्रतिष्ठानों एवं संस्थाओं की स्थापना की गई है। संयुक्त राष्ट्र की शांति की अवधारणा में महात्मा गांधी का चिंतन सम्मिलित किया जाता है। राजनीतिक दृष्टि से गांधी ने केंद्रीकरण की प्रवृत्ति के स्थान पर विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति पर अधिक बल दिया। उन्होंने राजनीति एवं शासन में जनता को ही सर्वोच्च माना। गवर्नेंस की दृष्टि से 1937 से ही कांग्रेस की सरकारों ने देश में गांधी की गवर्नेंस की संकल्पना के अनुरूप कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। इसी आधार पर ग्राम स्वराज, नीति निर्देशक तत्व, कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को स्वतंत्र भारत की राजव्यवस्था का भाग बनाया गया। विकेंद्रीकरण के गांधीय चिंतन के आधार पर ही भारत में पंचायत राज अधिनियम एवं नगरपालिका अधिनियम को लागू कर लोकतंत्र को आम जनता तक सुस्थापित किया गया। वर्तमान में गांधीय गवर्नेंस के मॉडल के आधार पर ही राजस्थान सरकार द्वारा जनकल्याण के लिए आरजीएचएस, चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा, छात्रवृत्तियों का एक वृहद संजाल, मुख्यमंत्री एकल नारी सम्मान पेंशन, वृद्धजन पेंशन, पालनहार, अनुप्रति कोचिंग, इंदिरा रसोई जैसी विविध जनकल्याणकारी योजनाओं का सूत्रपात किया गया है। इससे राजस्थान में शासन की प्रकृति अधिक संवेदनशील,पारदर्शी एवं जवाबदेह हुई है। गांधियन गवर्नेंस का और अधिक बेहतर अनुप्रयोग राजस्थान सरकार द्वारा हाल में बनाए गए महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट आफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंसेज में इस तरह के उपयोगी पाठ्यक्रम प्रारंभ कर किया जा सकता है।

ग्राम्य जीवन में नवपरिवर्तन

गांधी जी विकेंद्रीकरण के सिद्धांत के अंतर्गत ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग के विकास को महत्व प्रदान कर ग्राम्यजीवन में नवपरिवर्तन लाने के पक्षधर थे। इसी क्रम में उन्होंने सामाजिक जीवन में भी नवपरिवर्तन के लिए जाति व्यवस्था के उन्मूलन पर बल दिया। समाज में छुआछूत समाप्त करने के लिए उनके द्वारा हरिजन सेवक संघ जैसा एक अद्वितीय संगठन बनाया गया। उन्होंने एक जाति रहित समाज की वकालत की।

आंतरिक एवं बाहरी स्वच्छता

गांधी जी द्वारा यंग इंडिया में समग्र स्वच्छता पर बल देते हुए एक लेख श्रृंखला प्रकाशित की गई। उनका मानना था कि स्वच्छ शरीर में ही एक पवित्र आत्मा का वास हो सकता है। उन्होंने सत्याग्रह के समान स्वच्छाग्रह की अवधारणा पर भी बल दिया। वे उस काल में भी नदियों को स्वच्छ रखने पर बल देते थे। भारत सरकार द्वारा उनके विचारों के आधार पर स्वच्छ भारत मिशन एक आंदोलन के रूप में चलाया जा रहा है, किंतु गांधी जी की स्वच्छता की अवधारणा अधिक समग्र एवं व्यापक थी उनका मानना था कि स्वच्छता में ही प्रभुता है।

सतत विकास एवं ग्रीन प्लैनेट

गांधीजी आज के पर्यावरणविदों के समान पर्यावरण संकट को लेकर सजग थे। उनका मानना था कि इस पृथ्वी पर मानव की आवश्यकताओं के लिए संसाधन तो पर्याप्त है किंतु उसके लालच की पूर्ति के लिए नहीं। उन्होंने प्रकृति के प्रति भी अहिंसा पर बल दिया। हाल के दशकों में उनके चिंतन के आधार पर सुंदरलाल बहुगुणा, चंडी प्रसाद भट्ट, सरला बहन जैसे पर्यावरणविदों और उनके बाद इस परंपरा के लोग हिमालय बचाओ एवं अन्य पर्यावरण संबंधी आंदोलन चला रहे हैं। गांधी जी ने इस संबंध में सतत विकास पर बल दिया। उनके हिंद स्वराज को सतत विकास का घोषणा पत्र ही माना जाता है। आज के युग में जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों का पिघलना जैसे पर्यावरण संकटों के कारण मानव जीवन के समक्ष जो चुनौती खड़ी हुई है। उसका सामना करने के लिए गांधी की विचार एवं कार्य योजना प्रासंगिक है। गांधी ने 'की टु हेल्थ' पुस्तिका में स्वच्छ हवा, भोजन एवं जल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। आज के युग में इस संबंध में अनेक अंतरराष्ट्रीय मानदंड विकसित किए जा चुके हैं जिनकी सरल विवेचना गांधी की इस पुस्तिका में मिलती है। प्रकृति एवं नारीवादी संबंध को उन्होंने जिस रूप में विवेचित किया उसे ही आज 'इकोफेमिनिज्म' के रूप में समझा जा रहा है।

गांधी की विचारधारा वस्तुतः उनकी आत्मा की आवाज थी। सत्य एवं अहिंसा उनकी विचारधारा के दो स्तंभों के रूप में विकसित हुए। उन्होंने वैश्विक परिदृश्य एवं सार्वभौमिकता की पृष्ठभूमि में मानव गरिमा एवं उत्कृष्ट मूल्यों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना। इसी आधार पर उन्होंने मूल्य आधारित शिक्षा को वर्धा स्कीम के अंतर्गत प्रतिपादित किया, जिसमें मातृत्व विकास, मातृभाषा एवं उत्पादकता पर बल दिया गया। आधुनिक काल के संसाधनों के संकट स्थिति में वर्धा आश्रम प्राकृतिक संसाधनों का न्यूनतम उपभोग कर प्रकृति आधारित उत्कृष्ट जीवन जीने की दिशा को इंगित करता है। संकट के समय गांधी के विचार एक अभीष्ट हल प्रस्तुत करते हैं जो कि मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला, दलाई लामा, आंग सांग सू की के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में भी प्रतिबिंबित होता है। आज विश्व के 150 से अधिक देशों में गांधी की मूर्तियां, गांधी चिंतन के आधार पर अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र एवं अन्य स्मारकों का बना होना उनके वैश्विक रुप से प्रासंगिक होने को अभिव्यक्त करता है। गांधी के विचारों एवं मूल्यों के संबंध में यह स्पष्ट है कि वे भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण वैश्विक आत्मा की आवाज थे। आज हमारे इस ग्रह पृथ्वी को गांधीय मूल्यों के आधार पर बचाने एवं संवर्धित करने की अपूर्व आवश्यकता महसूस हो रही है।

सेवाग्राम आश्रम, वर्धा

वर्धा (महाराष्ट्र) में गांधी जी ने सेवाग्राम आश्रम स्थापित किया। सेवाग्राम में महात्मा गांधी ने बुनियादी तालीम और मानवता की बेहतरी से संबंधित कई महत्वपूर्ण प्रयोग किए। इससे पहले उन्होंने साबरमती में आश्रम की स्थापना की थी। ये आश्रम गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों और आंदोलन संचालन का केंद्र हुआ करते थे।

छाया : **राजेश कुमार शर्मा**

चंबल रिवर फ्रंट
ऑक्सीजोन सिटी पार्क

चंबल नदी पर कोटा में बने हेरिटेज रिवर फ्रंट में लगभग 6 किमी के भ्रमण में अलग-अलग देशों की प्रसिद्ध इमारतों के दर्शन होते हैं। नदी किनारे बने 26 घाट अलग-अलग निर्माण शैली एवं उद्देश्यों को अपने में समाये हैं। यहां देश की सबसे बड़ी नंदी की मूर्ति, वियतनाम के मार्बल से बनी विश्व की सबसे बड़ी चंबल माता की मूर्ति और विष्णु के दशावतार दर्शनीय हैं। इसके अलावा कोटा में ही 30 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित ऑक्सीजोन सिटी पार्क (द गार्डन ऑफ जॉय) में मनुष्य और प्रकृति के संतुलन को बेहद सुंदर और सृजनात्मक ढंग से दिखाया गया है।

आलेख: **हरिओमसिंह गुर्जर**,
उप निदेशक, जनसंपर्क

छाया : **आलोक शर्मा**

गांधी चिंतन के अग्रणी संस्थान

डॉ. राजेश कुमार शर्मा, निदेशक
गांधी अध्ययन केंद्र, राजस्थान विश्वविद्यालय

महात्मा गांधी ने अपने पत्र 'हरिजन' में लिखा है कि 'प्रजातंत्र का अर्थ मैं यह समझता हूं कि इस तंत्र मे नीचे से नीचे और ऊंचे से ऊंचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिलना चाहिए। लेकिन सिवाय अहिंसा के ऐसा हो ही नहीं सकता।' आधुनिक समय में अहिंसा के सबसे बड़े पैरोकार महात्मा गांधी से पहले भारतीय ग्रंथों में भी अहिंसा को सबसे बड़ा कर्तव्य माना गया है और यह 'सोऽहम एवं तत्त्वमऽसि' जैसी जीवन की आध्यात्मिक एकता में विश्वास को निरूपित करता है। अहिंसा को मनुष्य के बलिदानमय जीवन के पांच नैतिक सद्गुणों (सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा और शांति) में से एक बताया गया है।

आज जागतिक स्तर पर अहिंसा के विचार की मांग फिर जोर पकड़ने लगी है। महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा गांधी जैसे अनेक चिंतकों ने अहिंसा को परम धर्म माना है। भारतीय दर्शन में कहा गया है कि अहिंसा की साधना से वैर—भाव का लोप हो जाता है। वैर—भाव के निकल जाने से क्रोध आदि अनेक बुरी वृत्तियों का निरोध होता है। विश्व में अहिंसा को जीवन और समाज के सभी क्षेत्रों में स्थापित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गई है। इस चुनौती को महात्मा गांधी ने स्वीकार किया और उन्होने अहिंसक साधनों से सत्य की सिद्धि करने का प्रयास किया। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर विकराल होती समस्याओं का समाधान अहिंसा में ही निहित है जो पर पीड़ा महसूस करने तथा प्रेम को व्यापक करने से ही संभव हो सकता है। गांधी की अनुपम देन भी यही थी कि उन्होंने व्यक्तिगत आचार नियमों को सामाजिक और सामूहिक प्रयोग का विषय बनाया। उन्होने स्वयं कहा है कि वे कोई नए सिद्धांत का आविष्कार नहीं कर रहे हैं। उन्होंने जो कुछ भी दिया वह विभिन्न स्रोतों में उपलब्ध है और विभिन्न व्यक्तियों ने उसका प्रयोग भी किया है।

गांधीजी के शांति एवं अहिंसा के विभिन्न सैद्धांतिक पक्षों को सामाजिक धरातल पर प्रयोग किए जाने की मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की उत्कृष्ट इच्छाशक्ति के चलते राजस्थान राज्य में गांधी चिंतन एवं दर्शन के क्षेत्र में नवीन संस्थानिक प्रयासों के माध्यम से विश्वशांति की दिशा में नवीन आयाम स्थापित किए गए हैं। राजस्थान में विगत 5 वर्षों में गांधी चिंतन एवं दर्शन को साकार करने के व्यापक स्तर पर सफलतापूर्वक संस्थानिक प्रयास किए गए हैं जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं:

गांधी अध्ययन केंद्र, राजस्थान विश्वविद्यालय

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन दर्शन और आदर्शों को व्यापक बनाने के लिए सत्य, अहिंसा, शांति, सत्याग्रह, सर्वधर्म समभाव व सहिष्णुता आदि मानवीय गुणों की समाज में स्थापना के लिए राजस्थान विश्वविद्यालय का गांधी अध्ययन केंद्र सतत प्रयत्नशील है। गांधी अध्ययन केंद्र राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर के मध्य में स्थित है, जिसकी शुरुआत 1965 में दो छोटे कमरों से हुई थी। वर्तमान में केंद्र में एक पुस्तकालय, एक प्रार्थना स्थल, एक अद्भुत इको डोम और एक सुंदर उद्यान भी है। इस केंद्र के शांत वातावरण में लगभग 4,000 से अधिक पुस्तकें, महात्मा गांधी के भाषणों के अभिलेख, रिपोर्ट और लघु शोध प्रबंध उपलब्ध हैं।

यह विभिन्न अकादमिक शोध, समाज सेवा और सहयोगात्मक गतिविधियों में संलग्न राजस्थान का विख्यात केंद्र है। पहले इसे गांधी भवन के नाम से जाना जाता था, जिसकी स्थापना 1965 में हुई थी। उसके बाद 1985 में राजस्थान विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद ने गांधी भवन को गांधी अध्ययन केंद्र के रूप में प्रोन्नत किया गया।

केंद्र का मुख्य उद्देश्य

- महात्मा गांधी से संबंधित साहित्य और अन्य प्रासंगिक गांधीवादी विचारकों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं का अध्ययन।
- संघर्ष समाधान के शांतिपूर्ण तरीकों और तकनीक को समझना।
- स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गांधीवादी सिद्धांतों का अध्ययन करना।
- विकासशील समाजों के लिए उपयुक्त और मध्यवर्ती तकनीकों का निर्धारण करना।
- भारत के साथ-साथ दुनिया के अन्य हिस्सों में भी गांधीवादी तकनीकों का प्रयोग एवं क्रियान्वयन।
- सम्मेलन, संगोष्ठी एवं विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन करना, समृद्ध पुस्तकालय उपलब्ध कराना, गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रमों और अन्य संगठनों पर आधारित सामग्री प्रकाशित करना।
- विश्वविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों में भ्रातृत्व भाव को बढ़ावा देना और गांधीवादी संगठनों, सरकार एवं गांधीवादी परिप्रेक्ष्य का समर्थन करने वाले अन्य लोगों के बीच एक शैक्षणिक सेतु स्थापित करना।

महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंसेज

यह संस्थान मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की बजट घोषणा की अनुपालना में 100 करोड़ रुपए की लागत से टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज और महाराष्ट्र इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी स्कूल ऑफ गवर्नेंस की तर्ज पर शुरू किया गया है। बदलते सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए इस संस्थान को शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार के उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में विकसित करने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की शिक्षाओं को आत्मसात कर युवाओं को सामाजिक कार्यों में भूमिका निभाने के लिए तैयार करने में यह संस्थान निश्चित रूप से अग्रणी एवं महत्वपूर्ण साबित होगा। इस संस्थान का उद्देश्य शिक्षा और अनुसंधान के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन दर्शन और सामाजिक मूल्यों को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाना है।

शांति एवं अहिंसा विभाग, राजस्थान सरकार

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा 1 अक्टूबर, 2022 को शांति एवं अहिंसा विभाग का गठन किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम पर संपूर्ण भारतवर्ष में शांति और अंहिसा विभाग का गठन सबसे पहले राजस्थान राज्य में किया गया है। इसके माध्यम से शांति और अहिंसा के विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अलावा अनेक महापुरुषों, वीर शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित शांति और सद्भाव, सामाजिक एकता से संबंधित विभिन्न प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। विभाग द्वारा गांधी सद्भावना सम्मान जैसे विभिन्न पुरस्कारों का भी संचालन किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में गांधी अध्ययन केंद्र

राज्य के अधिकांश विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में गांधी अध्ययन केंद्रों की स्थापना का जो सकारात्मक प्रयास किया गया है, वह शांति एवं अहिंसा के लिए शिक्षा जगत में मील का पत्थर साबित हो सकेगा।

ये सभी संस्थान महात्मा गांधी के विचारों और जीवन दर्शन को लोगों में पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। उनके प्रयास हर तरह की देश, काल एवं परिस्थिति में मार्गदर्शन देते हैं। इन्हें जीवन में अपनाकर हम खुद को बेहतर इंसान बना सकते हैं और दुनिया को मौजूदा समय की बहुत सी समस्याओं से निजात दिला सकते हैं। लेकिन ऐसा करने के लिए हमें दूसरों की मुश्किलों को भी समझना होगा और अधिकार से पहले कर्तव्य के बारे में सोचना होगा। महात्मा गांधी ने भी 'यंग इंडिया' में लिखा है, कि 'अधिकारों की उत्पत्ति का सच्चा स्रोत कर्तव्यों का पालन है। यदि हम सब अपने कर्तव्यों का पालन करें, तो अधिकारों को ज्यादा ढूंढ़ने की जरूरत नहीं रहेगी। लेकिन यदि हम कर्तव्यों को पूरा किए बिना अधिकारों के पीछे दौड़ें, तो वह मृग मरीचिका के पीछे पड़ने जैसा ही व्यर्थ सिद्ध होगा। जितने हम उनके पीछे जाएंगे उतने ही वे हमसे दूर हटते जाएंगें।'

गांधी सद्भावना सम्मान

हाकम खां, आरएएस
उपनिदेशक, शांति एवं अहिंसा निदेशालय

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विचारों और अपनी जीवनशैली से संसार को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। उनके विचार आज भी सारे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। आज विविधताओं से भरे हमारे देश के जनमानस और खासतौर पर युवाओं की चेतना में गांधी जी के विचारों का व्यापक समावेश आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखकर राज्य सरकार उनके विचारों के प्रचार—प्रसार के लिए अनेक स्तर पर प्रयास कर रही है। राजस्थान में गांधी जी के विचारों को प्रसारित करने के लिए पहली बार आधिकारिक तौर पर एक अलग विभाग का निर्माण किया गया है। यहां महात्मा गांधी के सिद्धांतों और आदर्शों पर चलते हुए हिंसा मुक्त समाज की स्थापना के लिए शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना की गई है।

राजस्थान ऐसा करने वाला एकमात्र राज्य है। यह विभाग गांधी जी के विचारों को घर-घर तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है, ताकि आमजन सभी प्रकार की हिंसा के उन्मूलन के लिए प्रेरित हों। यह विभाग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, विभिन्न महापुरुषों, वीर शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों, शांति और समरसता, सामाजिक एकता और समता संबंधी सम्मान कार्यक्रमों का आयोजन करता है। यह विभाग गांधी सद्भावना सम्मान से संबंधित प्रस्ताव प्राप्त करने के साथ इसके चयन, वितरण, प्रबंधन और व्यवस्थाओं के लिए समिति बनाने आदि कार्य करता है। अहिंसा, सेवा भाव, संचय से पहले त्याग, सचाई, सामाजिक समरसता आदि को आचरण और कर्म में अपनाने वालों को सम्मानित कर हम इन मूल्यों को फिर से प्रतिष्ठित कर सकते हैं।

गांधीजी के सिद्धांतों के अनुपालन और योगदान के लिए मिलता है सम्मान

राज्य सरकार गांधी सद्भावना सम्मान के लिए हर साल पात्र व्यक्तियों, संस्थाओं और संगठनों से आवेदन पत्र आमंत्रित करती है। यह सम्मान महात्मा गांधी के मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुपालन, अनुशीलन के माध्यम से राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक योगदान के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। इस सम्मान के अंतर्गत 5 लाख रुपए की नकद राशि, प्रशस्ति पत्र एवं शॉल प्रदान किया जाता है।

यह सम्मान चयन समिति द्वारा मार्गदर्शी सिद्धांतों के आलोक में चयन प्रक्रिया के उपरांत संबंधित आवेदक को प्रदान किया जाता है। प्राप्त आवेदनों में यदि चयन समिति को कोई आवेदक उपयुक्त पात्र नहीं मिलता है तो चयन समिति स्वयं की ओर से अभिलेखीय पुष्टि के साथ नाम प्रस्तावित कर सकती है। चयन समिति पैनल तैयार कर मुख्यमंत्री राजस्थान को प्रस्तुत करती है और अंतिम निर्णय मुख्यमंत्री के स्तर पर लिया जाता है।

इस सम्मान के लिए विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार आवेदन भेजे जाने के उपरांत मृत्यु हो जाने पर अथवा उपयुक्त पात्र व्यक्ति जिसका निधन हो चुका है एवं जिसके परिवार में कोई सदस्य आवेदन के लिये उपलब्ध नहीं है अथवा आवेदन नहीं किया गया है, किंतु जो चयन समिति के पात्रता मानदंडों को पूरा करता है, ऐसे व्यक्ति को भी मरणोपरांत यह सम्मान प्रदान किया जा सकता है।

व्यक्ति, संस्थान और संगठन हैं पात्र

मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने में आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। आज समाज में सहिष्णुता, प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्तृत करने की जरूरत है। गांधी सद्भावना सम्मान के लिए व्यक्ति, संस्था अथवा संगठन पात्र होते हैं। राजस्थान का कोई भी व्यक्ति, प्रवासी राजस्थानी अथवा पंजीकृत संस्था सम्मान के पात्र हैं। राजस्थान में कोई पात्र आवेदक नहीं मिलने पर द्वितीय प्राथमिकता के रूप में भारत का कोई भी नागरिक, संस्था या संगठन पात्र होते हैं।

मूल्यांकन और मापदंड

कोई भी व्यक्ति, संस्था एवं संगठन सम्मान का पात्र तभी होता है जब चयन समिति यह सुनिश्चित कर ले कि आवेदक द्वारा महात्मा गांधी के मार्गदर्शी सिद्धांतों का अनुगमन और अनुशीलन किया गया है।

सम्मान के मापदंडों में यह विचारणीय होता है कि वंचित एवं निर्धन वर्ग के प्रति आवेदक ने किस प्रकार अपने श्रेष्ठ दायित्वों का निर्वहन किया है। इसके साथ ही उसने सामाजिक न्याय, शांति एवं सद्भावना लाने के लिए क्या विशिष्ट योगदान दिया है। चयन समिति यह भी सुनिश्चित करती है कि महात्मा गांधी के सिद्धांतों, साहित्य एवं विचारों का भौतिक रूप से, दृश्य एवं लेखन माध्यम से प्रचार-प्रसार किया गया है और उन प्रयासों से प्राप्त परिणामों पर भी विचार करती है।

इस सम्मान के लिए महात्मा गांधी पर आधारित मौलिक कृति (पुस्तक), फिल्म एवं वृत्तचित्र पर भी विचार किया जाता है, जिन्होंने सामाजिक समरसता एवं सद्भाव के संरक्षण और संवर्धन में योगदान दिया है।

वार्षिक रूप से मिलता है सम्मान

गांधी सद्भावना सम्मान महात्मा गांधी के विचारों को अमल में लाकर समाज में योगदान देने वाली विभूतियों के कार्यों को सम्मान देने का विशिष्ट प्रयास है। यह सम्मान वार्षिक रूप से प्रदान किया जाता है और यथासंभव हर साल 2 अक्टूबर (गांधी जयंती) पर दिया जाता है। यदि चयन समिति द्वारा कोई पात्र आवेदक नहीं पाया जाता है तो उस वर्ष के लिए पुरस्कार प्रदान न किए जाने के लिए स्वतंत्र हैं। सम्मान के लिए उसी कार्य पर विचार किया जाता है जो वर्तमान में संपादित किया जा रहा हो अथवा आवेदन की तिथि से पांच साल पहले से अधिक संपन्न नहीं किया गया हो। आवेदक द्वारा आवेदन पत्र पूर्ण भरकर दो प्रतियों में मय वांछित दस्तावेज, शासन उप सचिव शांति एवं अंहिसा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर में अथवा इसकी ई-मेल आईडी पर आवेदन की अंतिम तिथि तक प्रस्तुत करने होते हैं।

गांधी वाटिका से संरक्षित होगी राष्ट्रपिता की विरासत

राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा सांसद श्री राहुल गांधी एवं मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 23 सितंबर को जयपुर के सेंट्रल पार्क में बनी गांधी वाटिका का लोकार्पण किया। राज्य सरकार ने महात्मा गांधी के विचारों व मूल्यों से नई पीढ़ी को रूबरू करवाने के लिए यह अभिनव पहल की है। सेंट्रल पार्क में 85 करोड़ रुपए की लागत से बनी गांधी वाटिका की विषय वस्तु गांधीवादी विचारकों की समिति के मार्गदर्शन में तैयार की गई है। वाटिका के भूतल पर अंग्रेजों के भारत आगमन से लेकर गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास तक के कालखंड को पांच हिस्सों में अंकित किया गया है। वहीं प्रथम तल पर गांधी जी के भारत में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलनों एवं उनके दर्शन को प्रदर्शित किया गया है। द्वितीय तल पर विशेष पुस्तकालय, सेमिनार हॉल एवं कॉन्फ्रेंस कक्ष निर्मित किए गए हैं। भवन निर्माण में सादगी एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु विशेष रूप से मिट्टी की दीवारें तैयार की गई हैं। वाटिका में केलू की छत लगाई गई है। साथ ही, वाटिका में 14 हजार पेड़-पौधे लगाए गए हैं। वाटिका में कैफेटेरिया, खुला नाट्य मंच, विमर्श कक्ष जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी।

महात्मा गांधी सेवा प्रेरक

गांधी जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाते युवा सारथी

सविता सिंह
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

राज्य सरकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों व मूल्यों से नई पीढ़ी को रूबरू करवाने के लिए विभिन्न प्रयास कर रही है। इसी क्रम में गांधी दर्शन का प्रसार करने और उनके विचारों को आत्मसात करने के लिए राज्य सरकार द्वारा शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना की गई। साथ ही, प्रदेश में 2,500 महात्मा गांधी सेवा केंद्र खोलने की घोषणा की गई है। इनमें महात्मा गांधी सेवा-प्रेरक के रूप में युवाओं को जोड़ने का कार्य जारी है। राज्य के सभी जिलों के समस्त ब्लॉकों के सभी राजस्व ग्रामों एवं शहरी क्षेत्र के सभी वार्डो में महात्मा गांधी के शांति एवं सद्भाव का संदेश घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से 50 हजार महात्मा गांधी युवा सेवा प्रेरकों की नियुक्ति की जाएगी। ये प्रेरक लोगों को जनकल्याणकारी योजनाओं से अवगत कराने के साथ महात्मा गांधी पुस्तकालय एवं संविधान केंद्रों का संचालन भी करेंगे।

प्रतिमाह 4,500 रुपए मिलेगा मानदेय

आवेदन के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता कक्षा 12वीं अथवा समकक्ष है। इसमें महात्मा गांधी दर्शन प्रशिक्षण शिविर के प्रमाण पत्र धारक, स्काउट-गाइड, एनसीसी प्रमाण पत्र धारक, सुरक्षा सखी, पूर्व बजट घोषणा में चयनित महात्मा गांधी सेवा प्रेरक एवं महिला स्वयं सहायता समूह को प्राथमिकता दी जाएगी। आवेदन के लिए आयु न्यूनतम 21 वर्ष एवं अधिकतम 50 वर्ष तय की गई है। इनका कार्यकाल 1 वर्ष का रहेगा। इन प्रेरकों को प्रतिमाह 4,500 रुपए मानदेय के तौर पर दिया जाएगा।

चयन प्रकिया एवं प्रशिक्षण

प्रत्येक जिले में जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी चयन प्रक्रिया के नोडल अधिकारी होंगे। चयन के लिए उपखंड स्तर पर उपखंड अधिकारी की अध्यक्षता में समिति का गठन किया जाएगा। जिला स्तर पर जिला कलक्टर की अध्यक्षता में गठित समिति प्रेरकों का अंतिम अनुमोदन कर चयनितों की सूची शांति एवं अंहिसा निदेशालय को भेजेगी। चयनित प्रेरकों को गांधी दर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षित किया जाएगा। प्रेरकों की ऑनलाइन उपस्थिति, मॉनिटरिंग एवं भुगतान की कार्यवाही सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग के सॉफ्टवेयर से की जाएगी।

गांधीवादी सिद्धांतों से होगी प्रदेश की प्रगति

वर्तमान परिस्तिथियों में गांधी जी के मूल्यों एवं सिद्धांतों पर चलकर ही शांति व अहिंसा की स्थापना संभव है। उनके बताये हुए मार्ग पर आगे बढ़ते हुए ही लोकतंत्र को अधिक मजबूत बनाया जा सकता है एवं प्रदेश की प्रगति को सुनिश्चित किया जा सकता है। महात्मा गांधी के जीवन से शांति, अहिंसा, सत्य एवं अपरिग्रह जैसे आदर्शों को समाहित करने से समाज को एक नई दिशा मिल सकती है। गांधी सेवा प्रेरक राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में आमजन को जानकारी देकर इन योजनाओं से लाभांवित कराने में सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन से प्रेरित ये युवा भावी पीढ़ी को भी गांधी जी की विचारधारा से रूबरू करवाएंगे।

प्रगति की गति 10 गुना करने के लिए

राजस्थान मिशन 2030

अलका सक्सेना
अतिरिक्त निदेशक, जनसंपर्क

राजस्थान की प्रगति की गति को 10 गुना बढ़ाने और प्रदेशवासियों के सपनों का राजस्थान बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा राजस्थान मिशन-2030 की अपूर्व पहल की गई है। इसके लिए प्रदेश के प्रबुद्धजनों, विषय-विशेषज्ञों, हितधारकों, युवाओं, विभागीय कर्मचारियों, समाज के सभी वर्गों के साथ ही आमजन के सुझावों, आकांक्षाओं व अपेक्षाओं को सम्मिलित कर विजन डॉक्यूमेंट राजस्थान मिशन-2030 तैयार किया जा रहा है। इस मिशन के अंतर्गत हर अनिवार्य क्षेत्र के लिए मानक तैयार करने पर कार्य किया गया है। इन मानकों में तय लक्ष्यों को समय पर पूरा करने की कार्ययोजना पर गंभीरता से और तेजी से काम कर राजस्थान को देश के अग्रणी राज्यों में शामिल कराया जाएगा।

राजस्थान का विजन डॉक्यूमेंट 2030 तैयार करने के लिए हितधारकों से सीधे संवाद, वेबसाइट, टोल फ्री नंबर, सभी के लिए वीडियो मैसेज कॉन्टेस्ट और युवाओं की मिशन में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राजस्थान के समस्त स्कूलों एवं कॉलेजों में राजस्थान मिशन 2030 विषयक निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित कर उनके सुझाव और विचार लिए गए। इसी तरह राज्य के हर जिले, कस्बे, ग्राम का प्रतिनिधित्व मिशन डॉक्यूमेंट में सुनिश्चित करने के लिए संभाग और जिला स्तर पर संवाद कार्यक्रम आयोजित किए गए एवं विभागीय अधिकारियों से भी सुझाव लिए गए। ग्राम स्तर तक आमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके साथ ही मिशन 2030 डॉक्यूमेंट निर्माण की कार्ययोजना के अनुरूप राजीव गांधी युवा मित्रों द्वारा फेस टू फेस सर्वे किए गए।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने भी विभिन्न हितधारकों और विशेषज्ञों के साथ संवाद किए। वृहद स्तर पर प्राप्त सुझावों को संपादित कर पहले विभागीय डॉक्यूमेंट जारी किए गए हैं और अब मुख्यमंत्री राजस्थान आर्थिक सुधार सलाहकार परिषद के नेतृत्व में राज्य का विजन-2030 डॉक्यूमेंट तैयार किया जा रहा है।

ढाई करोड़ से अधिक लोगों के बहुमूल्य सुझाव

विजन-2030 दस्तावेज में उन सभी लोगों के उपयोगी सुझाव और विचार शामिल किए जा रहे हैं जो राजस्थान को देश का अग्रणी राज्य बनाने के लिए राजस्थान मिशन-2030 अभियान के दौरान सरकार को मिले है। मिशन के दौरान विभिन्न माध्यमों से कुल ढाई करोड़ से भी अधिक फीडबैक सरकार को प्राप्त हुए हैं। विजन दस्तावेज में इन वृहद संख्या में प्राप्त उपयोगी बहुमूल्य सुझावों और विचारों को शामिल किया जा रहा है। राजस्थान मिशन-2030 के अंतर्गत जनकल्याण एप के माध्यम से भी फेस टू फेस सर्वे किया गया है जिसके तहत 1.5 करोड़ से अधिक प्रदेशवासियों ने अपने सुझाव दिए। वहीं मिशन-2030 की वेबसाइट के माध्यम से ढाई लाख से अधिक प्रदेशवासियों एवं विभागीय अधिकारियों-कर्मचारियों से सुझाव प्राप्त हुए। इसी क्रम में विभागीय हितधारकों के साथ परामर्श, आईवीआर सर्वे, इंटरैक्टिव वीडियो सर्वे एवं फॉर्म के माध्मय से लगभग 80 लाख से अधिक सुझाव प्राप्त हुए।

आमजन की सहभागिता के लिए हर संभव प्रयास

राज्य सरकार ने इस महत्वपूर्ण मिशन में आमजन की सहभागिता बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किए और व्यापक जन भागीदारी सुनिश्चित की गई। इसके लिए खासतौर पर निम्न गतिविधियां चलाई गईं:

हितधारकों से सीधा संवाद

परामर्श शिविरों, संवाद सत्रों, आमुखीकरण कार्यशालाओं और विशेष ग्राम सभाओं में फेस टू फेस सर्वे के माध्यम से हितधारकों से सुझाव लेकर संकलित किए गए। इनमें आमजन के साथ ही अधिकारियों व कर्मचारियों से भी महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए। मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने भी विशेषज्ञों, अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों, युवाओं, महिलाओं, विद्यार्थियों और आमजन से संवाद किया। प्रदेश की प्रगति में प्रवासी राजस्थानियों की भागीदारी को अहम मानते हुए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने विजन 2030 दस्तोवज के लिए 18 सितंबर को हैदराबाद में प्रवासी राजस्थानी समुदाय और हितधारकों से संवाद किया। इस दौरान वैज्ञानिक, चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ता, उद्योगपति, चार्टर्ड अकाउंटेंट, विद्यार्थी, प्रवासी राजस्थानी, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों और हितधारकों ने अपने सुझाव दिए।

स्कूलों एवं कॉलेजों में निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताएं

स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों के सुझाव मिशन-2030 में शामिल करने के लिए राज्य भर के स्कूलों एवं कॉलेजों में निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके तहत 10 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने 2030 तक राज्य को सर्वश्रेष्ठ राज्य की श्रेणी में शामिल करने के लिए निबंध के जरिए सुझाव दिए। राजस्थान मिशन 2030 के तहत शिक्षा विभाग द्वारा सभी निजी एवं राजकीय सेकेंडरी एवं सीनियर सेकेंडरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए 8 सितंबर, 2023 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम से जूनियर कक्षा 9 से 10 एवं सीनियर कक्षा 11 व 12 के 4 वर्गों में प्रतियोगिता आयोजित की गई। पूरे राजस्थान में 9,19,774 विद्यार्थियों ने निबंध प्रतियोगिता में भाग लिया और 2030 के राजस्थान के विजन पर अपने विचार और सुझाव दिए।

वीडियो कॉन्टेस्ट

आमजन ने प्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने के लिए हजारों की संख्या में वीडियो बनाकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा किए। उचित मापदंडों के आधार पर वीडियो की जांच-परख के इनमें से चुनिंदा वीडियो को प्रतिदिन 1 लाख से 1 हजार रुपए के पुरस्कार भी दिए गए।

जीडीपी 30 लाख करोड़ से अधिक करने का लक्ष्य

राजस्थान मिशन 2030 के अनुसार राजस्थान की जीडीपी को 30 लाख करोड़ रुपए से अधिक तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। हाल में 11.04 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर के साथ राजस्थान अग्रणी राज्यों में शामिल हुआ है। अक्षय ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में भी राजस्थान अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। क्रूड ऑयल उत्पादन में राजस्थान का देश में दूसरा स्थान है। इन्वेस्ट राजस्थान समिट और नई नीतियों से निवेश में बढ़ोतरी हुई है। एमएसएमई एक्ट के तहत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। प्रदेश में निवेश प्रोत्साहन के लिए रिप्स-2019 एवं 2022 लाई गई है। पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है जिससे इस उद्योग से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि हुई है।

अब तक सभी विभागों के मिशन-2030 विजन डॉक्यूमेंट बनकर प्रदेश के विजन डॉक्यूमेंट राजस्थान मिशन-2030 तैयार करने के लिए प्राप्त हो चुके हैं।

कोई भी भूखा न सोए
की संकल्पना हो रही साकार

प्रदेशभर में शुरू हुईं
1000 ग्रामीण इन्दिरा रसोइयां

देवेंद्र प्रताप सिंह
जनसंपर्क अधिकारी

राज्य सरकार 'कोई भूखा न सोए' के संकल्प को चरितार्थ करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। राजस्थान में शहरों में सार्वजनिक, धार्मिक, व्यावसायिक स्थलों एवं कच्ची बस्तियों के आस-पास इन्दिरा रसोई खुलने से मजदूरों, विद्यार्थियों, कामकाजी लोगों को मात्र 8 रुपये में पौष्टिक भोजन मिल रहा है। इसी क्रम में इन्दिरा रसोइयों का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 10 सितंबर को टोंक जिले के निवाई में इन्दिरा रसोई योजना (ग्रामीण) की शुरुआत की। अब 5 हजार से अधिक आबादी वाले ग्रामीण कस्बों में यह योजना शुरू की गई है। इन्दिरा रसोई योजना (ग्रामीण) के तहत अब पूरे प्रदेश में 1000 ग्रामीण इन्दिरा रसोइयां संचालित की जा रही हैं। ग्रामीण रसोइयों के साथ अब पूरे राज्य में इन्दिरा रसोइयों की संख्या 2,000 हो गई है।

राजीविका समूह की महिलाएं कर रही हैं ग्रामीण रसोइयों का संचालन

मुख्यमंत्री ने जयपुर में 18 अगस्त, 2023 को सखी सम्मेलन के दौरान ग्रामीण कस्बों में 1000 इंदिरा रसोइयों का संचालन राजीविका के माध्यम से कराने की घोषणा की थी। ग्रामीण क्षेत्रों में सभी 1,000 रसोइयों का संचालन राजीविका समूह की महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। इनके माध्यम से राजीविका की 10,000 से भी अधिक महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। राज्य स्तर पर इंदिरा रसोई योजना ग्रामीण का कंट्रोल रूम पंचायती राज विभाग में स्थापित किया गया है।

ग्रामीण क्षेत्र में 7.30 करोड़ भोजन थालियां परोसने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री ने प्रदेश के नगरीय निकायों में करीब 1000 इंदिरा रसोइयों

के सफल संचालन के बाद उपयोगिता को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्र में भी 1000 रसोइयां प्रारंभ करने की बजट 2023-24 में घोषणा की थी। इस योजना में वर्षभर में 1,000 रसोइयों से ग्रामीण क्षेत्र में जरूरतमंदों को करीब 7 करोड़ 30 लाख भोजन थालियां परोसने का लक्ष्य रखा गया है।

परोसी गई 15 करोड़ थालियां

प्रदेश में वंचित तबके के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही इस योजना के तहत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की तकरीबन 2000 इन्दिरा रसोइयों से अब तक 15 करोड़ से अधिक पौष्टिक एवं स्वादिष्ट भोजन की थालियां आमजन को परोसी जा चुकी हैं। 'कोई भूखा न सोए' के संकल्प के साथ शुरू की गई इस योजना के माध्यम से कोरोना काल में 72 लाख लोगों को सरकार द्वारा निःशुल्क पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया गया। इन्दिरा रसोई योजना में भामाशाहों द्वारा भी भोजन प्रायोजित किया जा सकता है। प्रदेश में 500 से अधिक स्थानीय सेवाभावी संस्थाओं के द्वारा 'न लाभ न हानि' के आधार पर रसोइयों का संचालन किया जा रहा है। कोरोना के दौर में राज्य सरकार के प्रयासों के साथ-साथ स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी सेवा भाव से आगे बढ़कर सहयोग किया। इस योजना से स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिल रहा है।

भोजन की गुणवत्ता की नियमित मॉनिटरिंग

इन्दिरा रसोई योजना में परोसे जा रहे भोजन की गुणवत्ता एवं योजना में पारदर्शिता की नियमित मॉनिटरिंग की जाती है। जनप्रतिनिधि भी रसोइयों में जाकर भोजन करते हैं ताकि गुणवत्ता की सुनिश्चितता हो सके। इससे यहां नियमित भोजन करने आने वाले लोगों का मान-सम्मान भी बढ़ता है। उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रदेश के विभिन्न जिलों के इन्दिरा रसोई संचालकों को सम्मानित भी किया जा रहा है।

₹8 में सम्मानपूर्वक पौष्टिक भोजन

इन्दिरा रसोई योजना से गरीब एवं जरूरतमंद लोगों को मात्र 8 रुपए में सुविधापूर्ण वातावरण में सम्मानपूर्वक पौष्टिक भोजन मिल रहा है। इस योजना का लाभ विद्यार्थियों एवं श्रमिकों सहित सभी वर्ग के लोगों को मिल रहा है। यह महंगाई के दौर में बाहर से आने वाले विद्यार्थियों एवं कार्मिकों एवं हर जरूरतमंद के लिए एक वरदान साबित हो रही है। इन्दिरा रसोई योजना-ग्रामीण में राज्य सरकार द्वारा नवीन रसोइयों की स्थापना के लिए 5 लाख रुपए की एकमुश्त राशि तथा 17 रुपए प्रति थाली अनुदान दिया जा रहा है। इन्दिरा रसोई ग्रामीण में उपलब्ध प्रमुख सुविधाएं इस प्रकार हैं :

- दोपहर एवं रात्रि में पोषक, स्वादिष्ट एवं मात्र 8 रुपए में किफायती भोजन उपलब्ध
- साफ-सुथरा, स्वस्थ, हवादार आधुनिक सुविधायुक्त वातावरण, सुसज्जित भवन, पर्याप्त कार्मिक
- स्वच्छ एवं स्मार्ट यथासंभव यंत्रीकृत किचन
- सब्जी वार्मर, चपाती वार्मर की मदद से गर्म खाना परोसा जाएगा - पेयजल, इंटरनेट, विद्युत एवं घरेलू गैस कनेक्शन, वाटर कूलर-आरओ सिस्टम
- सम्मानपूर्वक बिठाकर खिलाने के लिए टेबिल कुर्सी एवं अन्य फर्नीचर
- उपयुक्त सूचना संकेतक
- असंतुष्टि होने पर शिकायत की सुविधा
- दान व सहभागिता के लिए लागत मूल्य पर भोजन प्रायोजित करने की सुविधा
- प्रायोजक के नाम का प्रदर्शन, अभिनंदन पत्र एवं प्रशस्ति पत्र
- कार्मिकों की समय-समय पर स्वास्थ्य जांच
- भोजन हेतु लाभार्थी की पहचान के लिए कोई दस्तावेज नहीं मांगा जाएगा
- मेन्यू का साप्ताहिक आधार पर निर्धारण एवं प्रदर्शन
- भोजन नकद राशि के अलावा पेटीएम, फोन-पे से भुगतान कर प्राप्त करने की सुविधा
- प्रत्येक रसोई पर प्राथमिक उपचार, अग्नि सुरक्षा उपकरण एवं सेनेटाइजर की सुविधा

मुख्यमंत्री कामधेनु पशु बीमा योजना

प्रति परिवार दो दुधारू पशुओं का 40-40 हजार रुपए का निःशुल्क बीमा

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 6 सितंबर को राज्य के पशुपालकों को मुख्यमंत्री कामधेनु बीमा योजना की सौगात दी। इस तरह की पहल करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य है। इससे पहले लंपी से गौवंश की मृत्यु पर भी राज्य सरकार ने 40 हजार रुपए का मुआवजा पशुपालकों को दिया था। राज्य सरकार किसानों और पशुपालकों के हितों को प्राथमिकता देते हुए नई-नई योजनाएं लागू कर रही है।

भारत में पशुधन की संख्या दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले सबसे अधिक है। ग्रामीण आर्थिक संरचना को मजबूत बनाने और ग्रामीणों को खुशहाल जीवन देने में पशुधन का महत्वपूर्ण योगदान है। राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी पशुपालन की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। पशुपालन व्यवसाय में ग्रामीणों को रोजगार प्रदान करने तथा उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने की भी अपार संभावनाएं हैं।

पशुगणना 2019 के अनुसार राजस्थान में कुल 568.01 लाख पशुधन हैं। देश के कुल पशुधन का 10.06 प्रतिशत पशुधन राज्य में उपलब्ध हैं जिनमें देश का 7.24 प्रतिशत गौवंश और 12.47 प्रतिशत भैंस वंश है। इस तरह राज्य की बड़ी जनसंख्या पशुपालन पर निर्भर है। पशुओं खासकर दुधारू पशुओं के बीमार होने से किसानों की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ उनके रोजगार पर भी असर पड़ता है। पशुओं के बीमार होने से उनसे होने वाली आमदनी तो बंद हो ही जाती है साथ ही उनकी दवा का खर्च भी सिर पर आता है। छोटे और सीमांत किसानों के पास इतने पैसे नहीं होते कि वे उनकी दवा का खर्च उठा सकें।

रचना सिद्धा
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

उष्ट्र संरक्षण योजना

ऊंट रेतीले प्रदेश में बहुत कम पानी में भी बहुत दिनों तक रह लेता है और लंबी दूरी तय कर लेता है इसीलिए इसे रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। पश्चिमी राजस्थान के रेतीले इलाकों में ऊंट न केवल आवागमन, बल्कि खेती का भी प्रमुख साधन रहा है। राजस्थान के इतिहास में ऊंटों की कई गौरव गाथाएं सुनने को मिलती हैं। यही कारण है कि पश्चिमी राजस्थान के सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में ऊंटों का विशेष स्थान है। राज्य में ऊंट की घटती संख्या को रोकने और ऊंट प्रजनन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इसके संरक्षण और संवर्द्धन हेतु बजट घोषणा 2022-2023 के अंतर्गत वर्ष 2022-23 से राज्य में उष्ट्र संरक्षण योजना प्रारंभ की गई है। इसके लिए वार्षिक बजट में 2.60 करोड़ रुपए का प्रावधान रखा गया है।

इस योजना का एक मुख्य उद्देश्य ऊंट पालकों को आर्थिक सहायता प्रदान करना भी है। योजना के तहत ऊंटपालकों को टोडियों के जन्म पर दो किस्तों में कुल दस हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि के रूप में आर्थिक सहायता ऊंट पालन के लिए प्रदान की जा रही है। आवेदक को टोडियों के जन्म से दो माह पूरे होने की अवधि में आईओएमएमएस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करना होता है। योग्य आवेदकों को प्रोत्साहन राशि की प्रथम किस्त पांच हजार रुपये उनके बैंक खाते में सीधे हस्तांतरित कर दी जाती है। दूसरी किस्त के रूप में शेष पांच हजार रुपए की राशि टोडियों के एक साल की आयु पूरा कर लेने के बाद में दी जाएगी। दूसरी किस्त के लिए आवेदक को दोबारा आवेदन करना होगा। यहां यह बात ध्यान देने वाली है कि आवेदक को पशु चिकित्सक द्वारा मादा ऊंट और उसके टोडिया का पंजीयन एवं उसके पहचान के लिए उनके कान पर टैग लगवाना होगा। राज्य सरकार की इस योजना से ऊंटपालकों को आर्थिक संबल तो मिल ही रहा है, साथ ही ऊंटों के संरक्षण और संवर्द्धन को नई दिशा मिलेगी।

80 लाख दुधारू पशुओं का निःशुल्क बीमा

मुख्यमंत्री कामधेनु पशु बीमा योजना शुरू करने का मुख्य उद्देश्य राज्य के पशुपालक किसानों को दुधारू पशुओं की असमय मृत्यु होने पर बीमा कवर प्रदान कर उन्हें आर्थिक नुकसान से राहत पहुंचाना है। इस योजना के माध्यम से पशुपालकों को उनके पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य और सुरक्षा की गारंटी मिल रही है। इस योजना के माध्यम से राज्य सरकार द्वारा राज्य के 40 लाख पशुपालक किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। योजना के माध्यम से 80 लाख दुधारू पशुओं का निःशुल्क बीमा कराया जा रहा है। प्रीमियम राशि का शत प्रतिशत भुगतान राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री कामधेनु पशु बीमा योजना के तहत दुधारू पशुओं की असमय मृत्यु होने पर प्रति पशु बीमा दिया जाएगा। यह बीमा कवर एक परिवार के दो दुधारू पशुओं के लिए 40-40 हजार रुपए है। एक परिवार के केवल दो दुधारू पशुओं के लिए ही यह योजना लागू है। दुग्ध उत्पादन के आधार पर पशु का मूल्य निर्धारित होगा। योजना के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली बीमा राशि सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में भेजी जाएगी।

ऐसे करवाएं पंजीयन

आवेदक 18 वर्ष से अधिक आयु का किसान या पशुपालक होना आवश्यक है। योजना में पंजीयन करवाने के लिए आवेदक के पास जनाधार कार्ड होना चाहिए। आवेदक को बीमित धनराशि का दावा करने के लिए अपने नजदीकी पशुपालन विभाग के कार्यालय में जाना होगा। विभाग के पास एक संबंधित दावा प्रपत्र होता है। दावा प्रपत्र भरकर और पशु बीमा से संबंधित सभी दस्तावेज संलग्न कर विभाग में जमा कराना होगा। इस योजना का लाभ लेने के लिए आवेदक के पास जनाधार कार्ड के साथ आयु प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, बैंक खाता विवरण, पशु बीमा के कागजात, पासपोर्ट साइज फोटो आदि दस्तावेज होने चाहिए।

बीते दिनों राज्य में चले मंहगाई राहत और प्रशासन गांवों के संग शिविर में बड़ी संख्या में किसान पशुपालकों ने कामधेनु पशु बीमा योजना के अंतर्गत अपना पंजीयन करवाया है। अब तक इस योजना के अंतर्गत 1 करोड़ 10 लाख पशुपालक पंजीयन करवा चुके हैं।

सरकार का यह प्रयास अपनी तरह का अनूठा प्रयास है जो राजस्थान के किसान पशुपालकों के लिए संजीवनी का काम करेगी। निश्चित ही कामधेनु पशु बीमा योजना राज्य के किसान पशुपालकों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। इस योजना के लागू होने से राज्य में पशुपालन को बढ़ावा मिलेगा, डेयरी प्रोडक्शन को प्रोत्साहित करने में सहायता मिलेगी और रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे।

पशुधन निःशुल्क आरोग्य योजना

पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा के लिए पशुधन निःशुल्क आरोग्य योजना भी संचालित की जा रही है जो पशुपालकों के लिए बहुत मददगार साबित हो रही है। इस योजना के अंतर्गत पशु स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आवश्यक दवाओं को निःशुल्क उपलब्ध करवाया जाता है। समय पर बीमार पशुओं के उपचार के फलस्वरूप पशुओं की मृत्यु दर भी कम होती है। इस योजना के अंतर्गत पशुओं विभिन्न बीमारियों से बचाव के पशुओं का टीकाकरण करवाकर बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण किया जा रहा है। विभागीय पशु चिकित्सा संस्थाओं में इस योजना के अंतर्गत पशुओं के उपचार के लिए 138 प्रकार की आवश्यक औषधियां, टीके एवं 20 प्रकार के सर्जिकल कंज्यूमेबल्स निःशुल्क उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

विमुक्त, घुमंतू और अर्धघुमंतू जनजाति के लिए विशेष प्रावधान

वंचित वर्गों के चहुंमुखी विकास से समावेशी विकास का सपना हो रहा साकार

महात्मा गांधी ने कहा था कि खुशी तब मिलेगी जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सामंजस्य में हो। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में राज्य सरकार ने भी हमेशा महात्मा गांधी के जनकल्याण संबंधी विचारों और मार्गों से प्रेरित होकर कार्य किया है ताकि राज्य हमेशा खुशहाल रहे। राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और गतिविधियों को यही विचार मार्गदर्शित करता है कि विकास की मुख्यधारा से वंचित वर्गों को भी उसमे शामिल होने का अवसर मिले। पिछड़े वर्गों द्वारा अपने उत्थान के लिए सरकार से संबल प्राप्त करना उनका हक है।

नवधा परदेशी
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

विमुक्त, घुमंतू एवं अर्धघुमंतु जनजाति के कल्याण के लिए प्रयास

विमुक्त, घुमंतू एवं अर्धघुमंतू जनजाति समुदाय (डीएनटी) ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी कारण से क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट-1871 जैसे अत्याचारी कानून द्वारा इस समुदाय ने बहुत समस्याओं का सामना किया है। आजादी के बाद 1952 में इस दमनकारी कानून को निरस्त कर विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्धघुमंतू जनजातियों पर हो रहे अन्याय को समाप्त किया गया। विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्धघुमंतू जनजाति समुदाय के उत्थान के लिए राज्य सरकार द्वारा निरंतर कदम उठाए जा रहे हैं।

संविधान की भावना के अनुरूप वंचित वर्गों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना राज्य सरकार का ध्येय है। हाल में 72वें मुक्ति दिवस के राज्यस्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने घोषणा की कि हर वर्ष 31 अगस्त को विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्धघुमंतू जनजाति दिवस मनाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्धघुमंतू जनजातियों के विकास के लिए 50 करोड़ रुपए के कोष की स्थापना की गई है। डीएनटी समाज की पारंपरिक कलाओं एवं उद्यम हेतु 5 करोड़ रुपए की राशि से डीएनटी रिसर्च एवं प्रिजर्वेशन सेंटर बनाया जा रहा है। साथ ही समाज के लोगों को ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध करवाने एवं कलाकारों को रोजगार एवं आर्थिक प्रोत्साहन देने का कार्य भी किया जा रहा है। समाज के विद्यार्थियों को आवास व शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए योजना लाई गई है।

डीएनटी वर्ग छात्राओं को स्कूटी के लिए पात्रता में राहत

राज्य सरकार ने विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्धघुमंतू वर्ग की छात्राओं को स्कूटी प्राप्त करने के लिए पात्रता में राहत दी है। अब वे उच्च माध्यमिक या समकक्ष

परीक्षा में 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर भी कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना के लिए पात्र होंगी। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने योजना के अंतर्गत ऐसी छात्राओं के प्राप्तांक सीमा में शिथिलता प्रदान कर प्राप्तांक में संशोधन के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। अभी तक इन वर्गों की छात्राओं के लिए राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की उच्च माध्यमिक अथवा समकक्ष परीक्षा में 60 प्रतिशत एवं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की उच्च माध्यमिक अथवा समकक्ष परीक्षा में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करने की अनिवार्यता थी। अब देवनारायण छात्रा स्कूटी वितरण योजना की तर्ज पर इन वर्गों की छात्राओं के लिए 50 प्रतिशत अंक की पात्रता निर्धारित की गई है।

सर्वकल्याण के ध्येय को किया साकार

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने अपने कार्यकाल में सर्वकल्याण के सपने को साकार करने की दिशा में हर संभव प्रयत्न किए हैं। विभिन्न वर्गों और जातियों के उत्थान के लिए आयोगों और बोर्ड का गठन किया गया है। वर्तमान में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के अधीन राजस्थान राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग, राजस्थान राज्य आर्थिक पिछड़ा वर्ग आयोग, राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग, विशेष योग्यजन आयोग, वरिष्ठ नागरिक बोर्ड, राजस्थान ट्रांसजेंडर कल्याण बोर्ड, किशोर न्याय बोर्ड, राजस्थान राज्य विप्र कल्याण बोर्ड आदि संचालित हैं जिनसे हर वर्ग को लाभ मिलना सुनिश्चित हुआ है। वर्षों से मुख्यधारा के विकास से वंचित रहे अनेक वर्ग अब राजस्थान के सर्वसमावेशी विकास में योगदान दे रहे हैं।

राजस्थान राज्य गुरु गोरखनाथ बोर्ड

इसी मंशानुरूप मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने हाल में राजस्थान राज्य गुरु गोरखनाथ बोर्ड का गठन किया है। इस बोर्ड का उद्देश्य जोगी, योगी और नाथ जाति के वर्ग की समस्याओं को पहचानना और उनके समाधान के लिए सहायता करना है। बोर्ड का मुख्य उद्देश्य जोगी, योगी और नाथ जाति के वर्गों की समस्याओं को पहचानना और समाधान करना, विशेषज्ञों द्वारा प्रमाणिक सर्वे रिपोर्ट के आधार पर इन वर्गों के लिए मूलभूत सुविधाएं प्राप्त करवाना, समाज के शैक्षिक एवं आर्थिक उन्नयन, समाज के परंपरागत व्यवसाय को वर्तमान तौर-तरीकों से आगे बढ़ाने के संबंध में सुझाव देना है। बोर्ड उन सुझावों को प्रस्तुत करेगा जो पिछड़ेपन को दूर करने और विकास में मदद करेंगे।

मिलेगी विकास हेतु नई दिशा

बोर्ड समाज के कल्याण के लिए विभिन्न योजनाओं को प्रस्तुत करेगा जो की समाज के कल्याण को बढ़ावा देंगे। साथ ही बोर्ड वर्तमान में संचालित योजनाओं के संबंध में विभिन्न विभागों से समन्वय कर समाज के विकास, रोजगार के नए अवसर प्रदान करने के लिए योजनाएं तैयार करेगा। यह नया प्रयास राजस्थान के समाज को नए दिशानिर्देश और सुधार की दिशा में प्रेरित करेगा। गुरु गोरखनाथ बोर्ड द्वारा किए गए प्रयास, योजनाएं और कदम समाज में नई ऊर्जा और उत्साह भरेंगे, जो अच्छे समाज के निर्माण में सहायक साबित होंगे। इन जनजातियों के परंपरागत व्यवसायों को भी प्रोत्साहन मिलेगा और वे आर्थिक प्रगति के अग्रिम पायदानों पर आ सकेंगें।

कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का लोकार्पण

प्रदेश की तरक्की के लिए होगा चिंतन-मनन

अरुण कुमार जोशी
अतिरिक्त निदेशक, जनसम्पर्क

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 22 सितंबर को विधानसभा के पास स्थित विधायक नगर (पूर्व) की भूमि पर निर्मित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का लोकार्पण किया। उन्होंने एचसीएम रीपा में बनने वाले ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट का शिलान्यास किया तथा विधानसभा में हुई विभिन्न गतिविधियों पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

यह आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त देश का सबसे भव्य और श्रेष्ठ कॉन्स्टीट्यूशन क्लब है। यहां पर विधानसभा में चुनकर आने वाले नए सदस्यों को पूर्व सदस्यों के अनुभव का लाभ मिल सकेगा। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त यह क्लब 4 हजार 950 वर्ग मीटर भूमि पर बनाया गया है। 1 लाख 84 हजार 480 वर्गफीट क्षेत्रफल में निर्मित इस क्लब के निर्माण पर 90 करोड़ रुपये की राशि व्यय होगी। क्लब में रेस्टोरेंट, कॉफी हाउस, स्विमिंग पूल, ऑडिटोरियम, मीटिंग हॉल, कॉन्फ्रेन्स हॉल, लाइब्रेरी, जिम, सैलून, बैडमिंटन एवं टेनिस कोर्ट, बिलियर्ड्स् व टेबल टेनिस, इंडोर गेम सहित अतिथियों के ठहरने के लिए गेस्ट रूम का भी प्रावधान किया जा रहा है।

जयपुर में स्थापित होगी राजस्थान स्टेट फैकल्टी डेवलपमेंट एकेडमी

राज्य सरकार उच्च शिक्षा में सुधार के लिए अहम फैसले ले रही है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इसी क्रम में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षणिक सुधार एवं उन्मुखीकरण के लिए जयपुर में राजस्थान स्टेट फैकल्टी डेवलपमेंट एकेडमी (RSFDA) स्थापित किए जाने की मंजूरी दी है। राजस्थान स्टेट फैकल्टी डेवलपमेंट एकेडमी के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सुधार एवं शिक्षकों के उन्मुखीकरण तथा गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षणों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थाओं से एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षणों का आयोजन एचसीएम-रीपा, आईजीपीआरएस, एचआरडीसी, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महात्मा गांधी विद्यापीठ-कनक भवन आदि संस्थानों में किया जाएगा।

अकादमी का भवन निर्मित होने तक इसका संचालन कनक भवन स्थित महात्मा गांधी विद्यापीठ-गांधी अध्ययन केंद्र में किया जाएगा। शीघ्र ही अकादमी को सोसायटी अधिनियम के तहत पंजीकृत करवाया जाएगा एवं तब तक राजसेस के तहत इसका संचालन होगा।

सूक्ष्म सिंचाई तंत्र के लिए 765.07 करोड़ रुपए की परियोजना को मुख्यमंत्री ने दी मंजूरी

प्रदेश में सूक्ष्म सिंचाई तंत्र को मजबूत करने के लिए राज्य सरकार निरंतर कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इसी क्रम में माइक्रो इरिगेशन फंड योजना के अंतर्गत उद्यान विभाग की 765.07 करोड़ रुपए की परियोजना को प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। मुख्यमंत्री ने बजट वर्ष 2023-24 में आगामी 3 वर्षों में 24 अतिदोहित भू-जल ब्लॉक्स के लगभग 1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को संपूर्ण रूप से सूक्ष्म सिंचाई के तहत सम्मिलित करने तथा धौलपुर कम्युनिटी लिफ्ट इरिगेशन स्कीम के अंतर्गत धौलपुर, राजाखेड़ा एवं सैंपऊ के 28 हजार 800 हेक्टेयर नहरी क्षेत्र को सूक्ष्म सिंचाई के तहत शामिल करने की घोषणाएं की थीं। एमआईएफ परियोजना के अंतर्गत उक्त दोनों घोषणाओं सहित अन्य कार्य सम्मिलित किए गए हैं। मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से राज्य में जल उपयोग क्षमता का संवर्द्धन हो सकेगा।

राजकॉम इन्फो सर्विसेज लिमिटेड में सृजित होंगे 53 नवीन पद

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राजकॉम इन्फो सर्विसेज लिमिटेड में

53 नवीन पद व पद सोपान सृजित करने की स्वीकृति प्रदान की है। श्री गहलोत की इस स्वीकृति से कंपनी के कामकाज में सुगमता होगी, पद सोपान सुव्यवस्थित होगा तथा कार्मिकों को पदोन्नति के बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे। मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से राजकॉम इन्फो सर्विसेज लिमिटेड में पदों की संख्या 22 से बढ़कर 75 हो जाएगी। निदेशक (तकनीकी) का 1, ग्रुप महाप्रबंधक (तकनीकी निदेशक) के 2, महाप्रबंधक (अतिरिक्त निदेशक) के 4, प्रबंधक (सिस्टम एनालिस्ट) के 2, उप प्रबंधक (एसीपी) के 4 एवं सहायक प्रबंधक (प्रोग्रामर) के 40 नवीन पद सृजित किए गए हैं। इन पदों को राजकॉम इन्फो सर्विसेज लिमिटेड के सेवा नियमों के अनुसार पदोन्नति एवं प्रतिनियुक्ति से भरा जाएगा।

जल संरक्षण उपकर निधि से 634.18 करोड़ की राशि संबंधित विभागों को होगी आवंटित

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जल संरक्षण उपकर निधि से 634.18 करोड़ की राशि संबंधित विभागों को आवंटित किए जाने की स्वीकृति प्रदान की है। यह राशि जल संरक्षण संबंधी कार्यों पर व्यय की जाएगी। श्री गहलोत की इस स्वीकृति से जल संसाधन विभाग को 521.38 करोड़ एवं जल ग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग को 112.80 करोड़ की राशि आवंटित की जाएगी। यह राशि बजट घोषणाओं से संबंधित विकास कार्यों हेतु आवंटित की गई है।

बूंदी में राजा बूंदा मीणा और जोधपुर में महर्षि नवल पैनोरमा का होगा निर्माण

राज्य सरकार महापुरुषों के जीवन और उनके आदर्शों से नई पीढ़ी को अवगत करवाने के लिए विभिन्न निर्णय ले रही है। इस क्रम में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने बूंदी जिले में राजा बूंदा मीणा पैनोरमा तथा जोधपुर जिले में महर्षि नवल पैनोरमा के निर्माण हेतु 4-4 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्रदान की है। उक्त कार्य पर्यटन विभाग के द्वारा पर्यटन विकास कोष से करवाए जाएंगे।

राजा बूंदा मीणा ने बूंदी की स्थापना की थी। इनके पैनोरमा के निर्माण हेतु बूंदी के ग्राम बंदी में 12,100 वर्ग मीटर भूमि आवंटित की गई है। महर्षि नवल ने दलितों के उत्थान और उन्हें एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इनके पैनोरमा के निर्माण के लिए जोधपुर के ग्राम केरू में 3,200 वर्ग मीटर भूमि आवंटित की गई है। इन पैनोरमा में राजा बूंदा मीणा तथा महर्षि नवल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रदर्शित किया जाएगा। इससे नई पीढ़ी को उनके आदर्शों को आत्मसात करने का अवसर मिल सकेगा।

चंबल नदी पर 256.46 करोड़ रुपए की लागत से होगा हाई-लेवल ब्रिज का निर्माण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कोटा जिले में चंबल नदी पर हाई-लेवल ब्रिज के निर्माण के लिए 256.46 करोड़ रुपए की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। इस पुल का निर्माण राज्य राजमार्ग संख्या-120 पर स्थित गोठड़ा कलां गांव में किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने पूर्व में उक्त कार्य के लिए 165 करोड़ रुपए की बजट घोषणा की थी, जिसके विरुद्ध अब 256.46 करोड़ रुपए की बढ़ी हुई वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इस हाई-लेवल ब्रिज का निर्माण होने से आमजन को आवागमन में सुविधा होगी तथा उन्हें अपने गंतव्य के लिए कम दूरी तय करनी पड़ेगी।

शिक्षा विभाग के द्वारा विभिन्न नवाचारों का शुभारंभ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 5 सितंबर को बिड़ला सभागार में आयोजित राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षा विभाग के विभिन्न नवाचारों का शुभारंभ किया। उन्होंने शाला दर्पण शिक्षक एप का लोकार्पण तथा नये फीचर्स से युक्त शाला संबलन 2.0 एप का अनावरण किया। साथ ही, राज्य में 12 हजार उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ई-एजुकेशन उपलब्ध करवाने के लिए स्कूल आफ्टर स्कूल प्रोग्राम का शुभारंभ भी किया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 'मिशन ज्ञान' के सहयोग से बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए स्कूल समय पश्चात सोशल मीडिया के माध्यम से लाइव कक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने राज्य के 300 महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में स्थापित की गई रोबोटिक्स लैब्स का शुभारंभ किया। इन लैब्स के माध्यम से विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकी क्षेत्र का ज्ञान स्कूली स्तर से ही उपलब्ध हो सकेगा और वे निजी स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे। उन्होंने विद्यालयों में ई-कक्षाओं के संचालन के लिए मिशन स्टार्ट कार्यक्रम तथा राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल कंप्यूटरीकरण प्रोग्राम का शुभारंभ किया।

बीकानेर में होगी आई-स्टार्ट इनोवेशन स्कूल हब की स्थापना

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने बीकानेर में आई-स्टार्ट इनोवेशन स्कूल हब की स्थापना के लिए 52.26 करोड़ रुपए के वित्तीय प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। प्रस्ताव के अनुसार, आई-स्टार्ट इनोवेशन स्कूल हब का निर्माण जोधपुर के फिनटेक डिजिटल विश्वविद्यालय, जयपुर के भामाशाह डेटा सेंटर तथा ई-गवर्नेंस सेंटर बिल्डिंग की तर्ज पर किया जाएगा। आई-स्टार्ट इनोवेशन स्कूल हब का निर्माण कार्य सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग द्वारा कराया जाएगा। मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से क्षेत्र के युवाओं एवं विद्यार्थियों को

स्टार्टअप्स के लिए अनुकूल माहौल मिलेगा, वहीं स्थानीय स्तर पर व्यापक रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे। मुख्यमंत्री श्री गहलोत द्वारा वर्ष 2023-24 के बजट में बीकानेर में आई-स्टार्ट इनोवेशन स्कूल हब की स्थापना करने की घोषणा की गई थी।

मुख्यमंत्री निःशुल्क अन्नपूर्णा फूड पैकेट योजना में उचित मूल्य दुकानदारों को अब 10 रुपए प्रति पैकेट मिलेगी मार्जिन राशि

मुख्यमंत्री निःशुल्क अन्नपूर्णा फूड पैकेट योजना के अंतर्गत उचित मूल्य दुकानदारों को अब फूड पैकेट वितरण के लिए प्रति पैकेट 4 रुपए के स्थान पर 10 रुपए मार्जिन राशि मिलेगी। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इस प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की है।

मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से उचित मूल्य दुकानदारों को आर्थिक संबल मिलेगा। उल्लेखनीय है कि पूर्व में फूड पैकेट वितरण कार्य के लिए प्रति पैकेट 4 रुपए मार्जिन राशि निर्धारित की गई थी। मुख्यमंत्री ने 15 अगस्त, 2023 को योजना के शुभारंभ समारोह में यह मार्जिन राशि बढ़ाकर 10 रुपए प्रति पैकेट किये जाने की घोषणा की थी।

1.65 लाख छात्र-छात्राओं को मिलेगी सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग

राज्य सरकार युवाओं का क्षमता संवर्द्धन कर उन्हें रोजगारोन्मुख बनाने तथा उनके समग्र विकास के लिए अहम कदम उठा रही है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश के 1.65 लाख छात्र-छात्राओं को सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग दिये जाने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है।

मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से कॉलेज जाने वाले 1.20 लाख एवं स्कूली शिक्षा की कक्षा 11 व 12 के 45 हजार छात्र-छात्राओं को सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग उपलब्ध होगी। इस प्रशिक्षण पर 38.50 करोड़ रुपए का व्यय संभावित है जो युवा विकास एवं कल्याण कोष के तहत आरसीवीईटी कोष में उपलब्ध राशि से वहन किया जाएगा। ट्रेनिंग से विद्यार्थियों में कौशल विकास के साथ ही उनका व्यक्तित्व विकास भी हो सकेगा, जिससे उनके अकादमिक प्रदर्शन में वृद्धि होगी तथा रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे। पूर्व में राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत 50 हजार प्रशिक्षणार्थियों को सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग के लिए भी मुख्यमंत्री द्वारा स्वीकृति दी जा चुकी है।

अनुकंपा नियुक्ति के 26 प्रकरणों में शिथिलता

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राजकीय कार्मिक की मृत्यु के उपरांत आश्रित द्वारा अनुकंपा नियुक्ति के लिए आवेदन के 26 प्रकरणों में शिथिलता प्रदान की है। श्री गहलोत के इस संवेदनशील निर्णय से मृतक आश्रित परिवारों को संबल मिल सकेगा।

श्री गहलोत ने 23 प्रकरणों में आवेदन की विलंब अवधि में शिथिलन प्रदान करते हुए मृतक आश्रित परिवारों को राहत दी है। इसी प्रकार, 2 प्रकरणों में न्यूनतम आयु सीमा के साथ ही विलंब अवधि में शिथिलन प्रदान किया गया है। जबकि, 1 अन्य प्रकरण में अधिक आयु सीमा तथा आवेदन प्रस्तुत करने की विलंब अवधि में शिथिलन दिया गया है। उक्त प्रकरणों में सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए यह शिथिलता प्रदान की गई है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री द्वारा बीते करीब 4 साल में अनुकंपा नियुक्ति के 1,380 प्रकरणों में शिथिलता प्रदान कर आवेदकों को राहत प्रदान की जा चुकी है। इस अवधि में 3,821 मृतक आश्रितों को अनुकंपा नियुक्तियां भी दी गई हैं।

चित्तौड़गढ़ में सत्यव्रत रावत चूंडा पैनोरमा

राज्य सरकार महापुरुषों के जीवन और उनके आदर्शों से नई पीढ़ी को अवगत करवाने के लिए विभिन्न निर्णय ले रही है। इस क्रम में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने चित्तौड़गढ़ जिले में 4 करोड़ रुपए की लागत से सत्यव्रत रावत चूण्डा पैनोरमा के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की है। इस पैनोरमा में सत्यव्रत रावत चूंडा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रदर्शित किया जाएगा। मेवाड़ के महाराणा लाखा के ज्येष्ठ पुत्र सत्यव्रत चूंडा ने अपने पिता के वचन को निभाने के लिए राजगद्दी और राज्य की सीमाओं का त्याग कर दिया था। अपने वचन पालन एवं त्याग के कारण उन्हें मेवाड़ का भीष्म पितामह भी कहा जाता है। उनके जीवन पर आधारित पैनोरमा के निर्माण से नई पीढ़ी को उनके आदर्शों को आत्मसात करने का अवसर मिल सकेगा। सत्यव्रत रावत चूण्डा पैनोरमा निर्माण के लिए ग्राम बस्सी में जमीन भी आवंटित की जा चुकी है।

पार्ट टाइम कार्मिकों को भी मिलेंगे सेवानिवृत्ति परिलाभ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में राजस्थान पार्ट टाइम कॉन्ट्रेक्चुअल हायरिंग रूल्स-2023 का अनुमोदन, जयपुर में जेम बोर्स की स्थापना तथा विभिन्न संस्थाओं को भूमि आवंटन जैसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। साथ ही, जीव जन्तु कल्याण बोर्ड का नाम अमृता देवी राज्य जीव जन्तु कल्याण बोर्ड करने का भी बड़ा फैसला किया गया है।

मंत्रिमंडल ने राजस्थान पार्ट टाइम कॉन्ट्रेक्चुअल हायरिंग रूल्स-2023 के प्रारूप का अनुमोदन किया है। इसमें पार्ट टाइम कार्मिकों को सेवा समाप्ति पर 2 से 3 लाख रुपए तक का आर्थिक सहायता पैकेज मिलेगा। ये परिलाभ विभागों में कार्यरत पार्ट टाइम कार्मिकों को सेवा समाप्ति, मृत्यु एवं सेवानिवृत्ति पर दिए जाएंगे। इन नियमों के बनने से पार्ट टाइम कार्मिकों की भर्ती में पारदर्शिता आएगी और उन्हें आर्थिक संबल भी मिलेगा। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने वर्ष 2023-24 के बजट में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, कुक, फर्राश आदि जैसे पार्ट टाइम कार्यरत मानदेय कर्मियों को सेवानिवृत्ति पर आर्थिक सहायता देने के उद्देश्य से राजस्थान पार्ट टाइम कॉन्ट्रेक्चुअल हायरिंग रूल्स-2023 की घोषणा की थी।

जिला महिला विकास अभिकरणों के 9 परियोजना निदेशक अब माने जाएंगे राज्य कर्मचारी

मंत्रिमंडल ने राजस्थान सिविल सेवा (महिला विकास परियोजना में परियोजना निदेशकों, परियोजना अधिकारियों एवं अन्य अधिकारियों का विशेष चयन एवं सेवा की विशेष शर्तें) नियम, 1984 के अंतर्गत चयनित/नियुक्त कार्मिकों को नियुक्ति तिथि से नियमित किए जाने का निर्णय लिया है। इससे जिला महिला विकास अभिकरणों के 9 परियोजना निदेशकों को नियुक्ति तिथि से नियमित राज्य कर्मचारी माना जाएगा। साथ ही, उन्हें राज्य कर्मचारियों की तरह वेतन भत्ते एवं अन्य परिलाभ पारिणामिक लाभों सहित प्राप्त हो सकेंगे।

श्री अमरा भगतजी का 181वां जन्मोत्सव
विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 7 सितंबर को चित्तौड़गढ़ के नरबदिया में सर्व समाज सनातन चातुर्मास विकास समिति और अमरा भगत सेवा संस्थान द्वारा आयोजित श्री अमरा भगतजी के 181वें जन्मोत्सव तथा चातुर्मास कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में 143 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शिलान्यास-लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने पटवार मंडल सावा को उप तहसील बनाने, अनगढ़ बावजी मंदिर क्षेत्र परिसर में 25,000 वर्ग फीट का डोम बनाने तथा मंदिर तक पहुंचने के लिए सड़क का चौड़ाईकरण और लाइटिंग के कार्य सांवलिया सेठ मंदिर ट्रस्ट के माध्यम से कराए जाने की घोषणा की।

लोकार्पण

- सांवलिया जी मंदिर में 16 करोड़ की लागत से फसाड़ लाइटिंग-प्रोजेक्शन मैपिंग। सांवलिया जी मंदिर में 14 करोड़ रुपए लागत से मंदिर में सोने-चांदी की पिछवाई। सांवलिया जी मंदिर में 5 करोड़ रुपए लागत से श्रद्धालुओं के लिए नई भोजनशाला। घर बैठे दर्शन लाभ के लिए सांवलिया जी मंदिर की वेबसाइट का शुभारम्भ।
- चित्तौड़गढ़ के सैटेलाइट अस्पताल का शुभारम्भ
- चित्तौड़गढ़ के उपअधीक्षक कार्यालय ग्रामीण का शुभारम्भ
- पुलिस चौकी अभयपुर थाना विजयपुर का शुभारम्भ

शिलान्यास

- बस्सी, चित्तौड़गढ़ का उप जिला चिकित्सालय
- आईटीआई विजयपुर, चित्तौड़गढ़ का भवन
- सीएचसी चंदेरिया, चित्तौड़गढ़ का भवन
- राजकीय विधि महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़ का भवन
- चित्तौड़गढ़ के सिरोड़ी में 33 केवी जीएसएस का शिलान्यास
- चित्तौड़गढ़ के बस्सी में सत्यव्रत राव चूंडा पैनोरमा
- बाड़मेर के जालीपा में 3 करोड़ रुपए की लागत से सन्त ईश्वर दासजी पैनोरमा
- पाली के देसूरी में 3 करोड़ रुपए की लागत से बीकाजी सोलंकी पैनोरमा
- करौली में 4 करोड़ रुपए की लागत से कैलादेवी पैनोरमा
- जालोर में 4 करोड़ रुपए की लागत से वीरमदेव-कान्हड़ देव चौहान पैनोरमा
- अलवर के माचाड़ी में राजा हेमू पैनोरमा
- बून्दी में बून्दा मीणा पैनोरमा
- जोधपुर के सेतरावा में देवराजजी पैनोरमा
- जोधपुर में महर्षि नवल स्वामी पैनोरमा

नेत्रहीन विकास संस्थान को होगी निःशुल्क भूमि आवंटन

मंत्रिमंडल ने नेत्रहीन विकास संस्थान द्वारा संचालित प्रज्ञा चक्षु उच्च प्राथमिक विद्यालय, फलौदी को निःशुल्क भूमि आवंटन का फैसला किया है। इस निर्णय से विद्यालय में अध्ययनरत नेत्रहीन विद्यार्थियों को छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिल सकेगी।

जयपुर में बनेगा राज्य का पहला जेम बोर्स

मंत्रिमंडल ने जयपुर में जेम बोर्स की स्थापना व विकास के लिए लगभग 44 हजार वर्ग मीटर भूमि आरक्षित दर पर उपलब्ध करवाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। यह भूमि जेम बोर्स की स्थापना के लिए गठित जयपुर जेम एंड ज्वैलरी बोर्स (एसपीवी) को औद्योगिक आरक्षित दर से 3 गुना दर पर 99 वर्ष की लीज पर आवंटित की जाएगी। इससे रत्नों के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। लगभग 60 हजार लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर मिलेंगे। इससे राज्य के आर्थिक विकास और उन्नति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

जीव जंतु कल्याण बोर्ड का नाम अब अमृता देवी राज्य जीव जंतु कल्याण बोर्ड

राज्य जीव जंतु कल्याण बोर्ड का नाम अब अमृता देवी राज्य जीव जंतु कल्याण बोर्ड होगा। मंत्रिमंडल ने श्रीमती अमृता बिश्नाई द्वारा जीव जंतु व वन रक्षार्थ दिए बलिदान व जीवों के प्रति समर्पण भाव को आमजन तक पहुंचाने के लिए बोर्ड के नाम में संशोधन का अहम निर्णय लिया है। इससे आमजन को जीव-जंतु कल्याण के लिए प्रेरणा मिलेगी।

चाकसू में खुलेगा सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन पंचकर्म

राज्य सरकार द्वारा जयपुर ग्रामीण जिले के चाकसू में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन पंचकर्म की स्थापना की जाएगी। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने सेंटर के लिए 40 करोड़ रुपए की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। इसकी स्थापना से पंचकर्म के क्षेत्र में अधिक उत्कृष्टता के साथ कार्य हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने बजट वर्ष 2023-24 में चाकसू में सेंटर ऑफ

एक्सीलेंस इन पंचकर्म खोले जाने के लिए घोषणा की थी। पूर्व में राज्य सरकार द्वारा जोधपुर में इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन पंचकर्म के संचालन की स्वीकृति भी दे चुकी है।

ईएसआई में पंजीकृत कर्मचारियों को भी मिलेगा चिरंजीवी योजना का लाभ

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की पहल पर संचालित मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना प्रदेशवासियों के लिए वरदान साबित हो रही है। वर्तमान में इस योजना के तहत लगभग 1.44 करोड़ परिवारों को 25 लाख रुपए तक का स्वास्थ्य बीमा कवरेज निःशुल्क उपलब्ध करवाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने अब योजना के तहत लाभान्वितों का दायरा बढ़ाते हुए कर्मचारी राज्य बीमा योजना (ईएसआई) के अंतर्गत पंजीकृत बीमित कर्मचारियों एवं उनके आश्रित परिजनों को भी ईएसआई श्रेणी के तहत मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में शामिल करने की मंजूरी दी है।

श्री गहलोत की इस स्वीकृति से वर्तमान में ईएसआई के तहत पंजीकृत 13.36 लाख कर्मचारी एवं उनके 38.39 लाख परिजनों सहित कुल 51.85 लाख लोग मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत 25 लाख रुपए तक का निःशुल्क इलाज करा सकेंगे।

जोधपुर में जगशांति सभागार एवं स्किल डेवलपमेंट सेंटर का लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 28 अगस्त को जोधपुर के बासनी में मरुधरा इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के जगशांति सभागार एवं लता रमेश पारेख स्किल डेवलपमेंट सेंटर का लोकार्पण किया। उन्होंने यहां एंटरप्रेन्योर लोगो का अनावरण भी किया।

आधुनिक सुविधाओं वाले जगशांति सभागार से उद्यमियों को अपने सेमिनार व अन्य कार्यक्रम आयोजित करने में आसानी होगी। वहीं, इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के सदस्य हस्ती पेट्रोकेमिकल एंड शिपिंग लि. के रुचिर पारेख द्वारा लता रमेश पारेख स्किल डेवलपमेंट सेंटर के निर्माण से उद्यमियों और कर्मचारियों को उच्च प्रशिक्षण मिलेगा।

पर्यटन इकाइयों का कार्य सुगम बनाने के लिए विभिन्न प्रावधान

पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिये जाने की बजट घोषणा की क्रियान्विति में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने पर्यटन विभाग से प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों का प्रशासनिक अनुमोदन किया है। मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से पर्यटन इकाइयों का कार्य सुगम होगा।

श्री गहलोत द्वारा दी गई स्वीकृति से पूर्व में स्वीकृत दस्तावेजों के साथ-साथ अन्य दस्तावेजों के आधार पर भी पर्यटन इकाइयों के पक्ष में एंटाइटलमेंट सर्टिफिकेट जारी किया जा सकेगा। इसके तहत आरटीडीसी तथा आरएसएचसी की इकाइयों के कार्यकारी निदेशक की स्वघोषणा, राज्य सरकार के अधीन राजकीय संग्रहालय के लिए निदेशक पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग की स्वघोषणा, केंद्र सरकार के अधीन राजकीय संग्रहालय से संबंधित मंत्रालय के राज्य में पदस्थापित वरिष्ठतम अधिकारी की स्वघोषणा, रीको औद्योगिक क्षेत्रों में होटल प्रयोजनार्थ आवंटित भूखंडों के संबंध में भू आवंटन आदेश एवं ग्रामीण क्षेत्र में राजस्व विभाग/जिला कलक्टर द्वारा भू-संपरिवर्तन आदेश के आधार पर भी एंटाइटलमेंट सर्टिफिकेट जारी किया जाना प्रस्तावित है।

मुख्यमंत्री की स्वीकृति के अनुसार सभी इकाइयों से बिजनेस रजिस्ट्रेशन नंबर (BRN) लिया जाना अनिवार्य किया जाएगा। वहीं, 10 या अधिक कमरों के होटल, बजट होटल एवं मोटल को भी पर्यटन इकाई के रूप में सम्मिलित किया जाएगा। साथ ही, वित्त विभाग द्वारा फरवरी, 2022 में जारी अधिसूचना, जिसमें पर्यटन प्रयोजनार्थ संपरिवर्तित या उपयोग में ली जा रही भूमियों की बाजार दरों के संबंध में केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय या पर्यटन विभाग से अनुमोदन का प्रावधान किया गया है। साथ ही, नया स्पष्टीकरण प्रतिस्थापित कर RIPS-2022 के तहत ईसी का प्रावधान किया जाएगा।

न्यूनतम मजदूरी में 26 रुपए प्रतिदिन की बढ़ोतरी

राज्य सरकार श्रमिकों को आर्थिक एवं सामाजिक संबल देने के लिए निरंतर अहम निर्णय ले रही है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इसी क्रम में प्रत्येक श्रेणी के लिए न्यूनतम मजदूरी की दरों में 26 रुपए प्रतिदिन की बढ़ोतरी करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

मुख्यमंत्री की मंजूरी के बाद अब अकुशल श्रमिक को 259 रुपए के स्थान पर 285 रुपए प्रतिदिन या 7,410 रुपए प्रतिमाह, अर्द्धकुशल श्रमिक को 271 रुपए के स्थान पर 297 रुपए प्रतिदिन या 7,722 रुपए प्रतिमाह, कुशल श्रमिक को 283 रुपए के स्थान पर 309 रुपए प्रतिदिन या 8,034 रुपए प्रतिमाह तथा उच्च कुशल श्रमिक को 333 रुपए के स्थान पर 359 रुपए प्रतिदिन या 9,334 रुपए प्रतिमाह मजदूरी प्राप्त होगी। मजदूरों एवं कामगारों के आर्थिक हित को देखते हुए पुनरीक्षित दरों को 01 जनवरी, 2023 से प्रभावी किया गया है।

श्रम विभाग द्वारा न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 के तहत 56 नियोजनों में न्यूनतम मजदूरी की वर्तमान में प्रभावी दरों में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक जुलाई, 2021 से दिसंबर, 2022 तक हुई 687 अंकों की वृद्धि के अनुसार न्यूनतम मजदूरी दरों में प्रतिदिन 26 रुपए की वृद्धि करने का प्रस्ताव वित्त विभाग को भेजा गया था।

उल्लेखनीय है कि न्यूनतम मजदूरी की दरों में पिछली वृद्धि 7 रुपए प्रतिदिन की दर से एक जुलाई, 2021 से लागू की गई थी।

30 हजार हस्तशिल्पी एवं आर्टीजंस के लिए 30 करोड़ रुपए स्वीकृत

राज्य सरकार प्रदेश में हस्तशिल्प एवं हस्तशिल्पियों के प्रोत्साहन एवं संवर्द्धन के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश के 30 हजार हस्तशिल्पियों एवं आर्टीजंस को 10-10 हजार रुपए की सहायता राशि मंजूर की है। यह राशि राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रदर्शनियों एवं मेलों में उनके हस्तशिल्प उत्पादों के विपणन के लिए दी जाएगी। इस सहायता राशि में स्टॉल का किराया, दैनिक भत्ता एवं यात्रा भत्ता शामिल होंगे। इस हेतु 3 वर्ष के लिए 30 करोड़ रुपए का वित्तीय प्रावधान

किया गया है। इसमें 5 करोड़ रुपए वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए, 10 करोड़ रुपए वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए एवं 15 करोड़ रुपए वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए दिए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राज्य बजट 2023-24 में इस संबंध में घोषणा की थी।

442 करोड़ रुपए के 224 कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 24 अगस्त को मुख्यमंत्री निवास पर टीबी मुक्त राजस्थान सम्मेलन, टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान के द्वितीय चरण, चिकित्सा संस्थानों के शिलान्यास व लोकार्पण तथा 104-108 एंबुलेंस सेवाओं के शुभारंभ समारोह को संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने 'म्हारे गांव टीबी न पसारे पांव' क्षय रोग जागरूकता पोस्टर तथा पुस्तिका का विमोचन किया। साथ ही, श्री गहलोत ने वर्ष 2022 में टीबी उन्मूलन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रजत पदक प्राप्त करने वाले बारां, भीलवाडा, जालोर और जैसलमेर तथा कांस्य पदक प्राप्त करने वाले बांसवाडा, चित्तौडगढ़, राजसमंद और उदयपुर जिला कलक्टर को सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री द्वारा 29 टीबी मुक्त ग्राम पंचायतों के सरपंचों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रदेश में 442 करोड़ रुपए की लागत के 224 चिकित्सा संस्थानों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। श्री गहलोत ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप जिला अस्पतालों सहित कुल 122 करोड़ रुपए की लागत से बने 109 चिकित्सा संस्थानों का लोकार्पण किया। साथ ही, उन्होंने 320 करोड़ रुपए की लागत के 115 चिकित्सा संस्थानों का शिलान्यास भी किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 50 नई 108 एंबुलेंस तथा 20 नई 104 जननी एक्सप्रेस एंबुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

कार्यक्रम में अंगदान महाभियान के तहत प्रदेश में 1.43 करोड़ से अधिक लोगों के द्वारा अंगदान की शपथ लेने पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन एवं ओएमजी बुक ऑफ रिकॉर्ड द्वारा सर्टिफिकेट दिया गया। इस दौरान श्री गहलोत ने अंगदान महाभियान के दौरान सर्वाधिक अंगदान की शपथ लेने वाले जिलों के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर अंगदान महाभियान से संबंधित वीडियो फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया।

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए 16 छात्रावासों का होगा निर्माण

राज्य सरकार विभिन्न जिलों में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए 16 छात्रावासों का निर्माण कराएगी। इसके लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 16 करोड़ रुपए के वित्तीय प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की है।

श्री गहलोत की इस स्वीकृति से ब्यावर, गंगापुर सिटी, प्रतापगढ़ और झालावाड़ के भवानीमंडी में अनुसूचित जाति बालिका छात्रावास, दौसा के बहरावंडा, अलवर के मालाखेड़ा, श्रीगंगानगर के सूरतगढ़, ब्यावर के रायपुर, उदयपुर के कानौड़, कुचामन सिटी में सावित्रीबाई फुले अनुसूचित जाति बालिका छात्रावासों का निर्माण होगा।

चिकित्सा क्षेत्र में 32 कार्यों का शिलान्यास और 36 कार्यों का लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 23 अगस्त को 887 करोड़ रुपए की लागत से मेडिकल कॉलेजों से संबंधित चिकित्सा संस्थानों के 32 कार्यों एवं 3 नर्सिंग कॉलेजों के भवनों का शिलान्यास किया। साथ ही, 379 करोड़ रुपए के 36 कार्यों का लोकार्पण भी किया। उन्होंने 7.15 करोड़ रुपए लागत से तैयार 6 मोबाइल कैंसर निदान वैन को भी हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर सक्सेस स्टोरीज की पुस्तिका, कैंसर जागरूकता पोस्टर/पेम्पलेट का विमोचन किया गया है।

मुख्यमंत्री ने शिलान्यास व लोकार्पण समारोह से पूर्व मुख्यमंत्री निवास से कैंसर के अर्ली डिटेक्शन के लिए 7.15 करोड़ रुपए से तैयार 6 मोबाइल कैंसर निदान वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन वाहनों के जरिए प्रारंभिक स्तर पर ही आवश्यक टेस्ट किए जाएंगे। यह वाहन आरआरईसीएल, एचपीसीएल, हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, ग्रीन को, रिलायंस फाउंडेशन, एलएन मित्तल-एचईएमएल तथा रीन्यू पॉवर द्वारा सीएसआर के अंतर्गत उपलब्ध कराए गए हैं। नए तीन संभागों में हिंदुस्तान जिंक द्वारा 3 वाहन उपलब्ध कराए जाएंगे।

साथ ही, पचपदरा के कल्याणपुर और श्रीगंगानगर में अनुसूचित जाति बालक छात्रावास, जैसलमेर के फलसुण्ड, टोंक के उनियारा, चूरू के जैतासर और जोधपुर ग्रामीण के औसियां में अम्बेडकर अनुसूचित जाति बालक छात्रावासों का निर्माण कराया जाएगा।

प्रत्येक छात्रावास भवन के निर्माण में 1 करोड़ रुपए की लागत आएगी। इससे अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर वातावरण मिलेगा। वे अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

क्रमोन्नत तहसीलों एवं उप तहसीलों के लिए 62 पदों का होगा सृजन

राज्य की क्रमोन्नत 5 तहसीलों (रारह-भरतपुर, जसरासर-बीकानेर,

पापड़दा-दौसा, सरदारगढ़-राजसमंद, बारापाल-उदयपुर) एवं 3 उप तहसीलों (श्रीबालाजी-नागौर, भंडारी-सीमलवाड़ा डूंगरपुर, ओगणा-झाड़ोल उदयपुर) के लिए 62 विभिन्न पदों का सृजन किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इस संबंध में प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

प्रस्ताव के अनुसार, क्रमोन्नत तहसीलों में तहसीलदार, तहसील राजस्व लेखाकार, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, कनिष्ठ लेखाकार, सूचना सहायक, वरिष्ठ सहायक, ऑफिस कानूनगो एवं रिसोर्स परसन, पटवारी के 5-5 पदों एवं कनिष्ठ सहायक के 10 पदों सहित कुल 50 पद सृजित किए गए हैं। साथ ही, क्रमोन्नत उप तहसीलों में नायब तहसीलदार, वरिष्ठ सहायक, कनिष्ठ सहायक एवं अतिरिक्त ऑफिस कानूनगो के 3-3 पदों सहित कुल 12 पदों के सृजन को स्वीकृति दी गई है।

जयपुर में मेट्रो फेज 1-सी सहित 1410 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 21 सितंबर को जयपुर में 1410 करोड़ रुपये के विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया इस दौरान उन्होंने जयपुर में महत्वपूर्ण मेट्रो परियोजना के 980 करोड़ रुपये लागत के फेज 1-सी का शिलान्यास तथा जेडीए के लगभग 430 करोड़ रुपये लागत के 9 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

जयपुर मेट्रो फेज 1-सी का शिलान्यास

मुख्यमंत्री ने बड़ी चौपड़ से रामगंज के रास्ते ट्रांसपोर्ट नगर तक (2.85 किमी) फेज 1 सी का शिलान्यास किया। 980 करोड़ रुपए की लागत के इस फेज से दिल्ली रोड और आगरा रोड से जयपुर चारदीवारी को सीधी और सुगम कनेक्टिविटी मिल सकेगी।

लोकार्पण : 81 करोड़ रुपए की लागत से नेहरू उद्यान-लक्ष्मी मंदिर तिराहा अंडरपास एवं स्वतंत्रता सेनानियों की मूर्तियां, 85 करोड़ रुपए लागत से 1530 वाहनों हेतु रामनिवास बाग भूमिगत पार्किंग और आगरा रोड पर 113 हेक्टेयर भूमि पर 8 करोड़ रुपए लागत से सिल्वन पार्क।

शिलान्यास : 120 करोड़ रुपए की लागत से श्री गोविंद देव जी मंदिर क्षेत्र में विकास कार्य, ईदगाह क्षेत्र में 10 करोड़ रुपए लागत से सौंदर्यीकरण और विकास कार्य, उच्च न्यायालय के सामने 50 करोड़ रुपए लागत से दो मंजिला भूमिगत पार्किंग और 25-25 करोड़ रुपए की लागत से शिवदासपुरा, कानोता, बालमुकुंदपुरा में सैटेलाइट हॉस्पिटल।

राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में 63 प्रस्तावों पर लगी मुहर

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में 20 सितंबर को मुख्यमंत्री निवास पर राज्य मंत्रिमंडल की बैठक आयोजित हुई। बैठक में 63 प्रस्तावों पर मुहर लगी।

200 से अधिक सामाजिक संस्थाओं को भूमि आवंटित

मंत्रिमंडल ने प्रदेश में शैक्षणिक उत्थान तथा सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए 200 से अधिक सामाजिक संस्थाओं को छात्रावास, वृद्धाश्रम, सामुदायिक केंद्र व अन्य सामाजिक कार्यों हेतु रियायती दर भूमि आवंटित करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। इस प्रस्ताव के अनुमोदन से इन सभी संस्थाओं को अब आरक्षित दर की 10 प्रतिशत राशि पर भूमि आवंटित की जा सकेगी। साथ ही, मंत्रिमंडल ने पूर्व में स्वीकृत 45 ऐसे प्रकरणों में भी यह प्रावधान करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। जिन संस्थाओं ने राशि नहीं जमा करवाई है उन्हें भी 10 प्रतिशत आरक्षित दर पर भूमि आवंटित की जाएगी। अन्य प्रकरणों में भारतीय सेना, रेलवे, पावरग्रिड सीकर ट्रांसमिशन लिमिटेड व विभिन्न संस्थाओं को भी आरक्षित दर पर भूमि आवंटन का निर्णय लिया है।

एसीपी योजना में कार्मिकों को मिलेंगे पदोन्नति पद के वेतनमान

मंत्रिमंडल ने राजस्थान सिविल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम, 2017 में संशोधन को स्वीकृति दी है। इससे चतुर्थ श्रेणी सेवा, मंत्रालयिक सेवा, अधीनस्थ सेवा एवं राज्य सेवा के समस्त कार्मिकों को 9, 18, 27 वर्ष की संतोषजनक सेवा पूर्ण करने पर एसीपी योजना के अंतर्गत पदोन्नति पद का वित्तीय उन्नयन देय होगा। वर्ष 1992 के चयनित वेतनमान सम्बन्धी आदेश की तर्ज पर यह प्रावधान किया गया है। वर्तमान में चतुर्थ श्रेणी, मंत्रालयिक सेवा, अधीनस्थ सेवा एवं एकल पदों की सेवाओं के कार्मिकों को उक्त सेवा अवधि पूर्ण करने पर आगामी पे-लेवल में एसीपी का लाभ दिया जा रहा था। वहीं, इस संशोधन से अब राज्य सेवा के अधिकारियों को भी 10, 20, 30 वर्ष की सेवा अवधि के स्थान पर 9, 18, 27 वर्ष की सेवा पर पदोन्नति पद का पे-लेवल प्राप्त हो सकेगा।

कोविड के कारण अनाथ हुए बच्चों को मिलेगी सरकारी नौकरी

मंत्रिमंडल ने कोविड-19 के कारण अनाथ हुए बालक-बालिकाओं को वयस्क होने पर सरकारी नौकरी दिए जाने के लिए विभिन्न सेवा नियमों में संशोधन के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इस स्वीकृति से ऐसे अनाथ बालक/बालिका नियुक्ति प्राप्त कर सकेंगे, जिनके जैविक अथवा दत्तक ग्रहण

जोधपुर में 113 करोड़ रुपए के कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जोधपुर के पावटा में केंद्रीय आधुनिक बस स्टैंड के लोकार्पण समारोह को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने लगभग 113 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। जयपुर के बाद अब जोधपुर में अत्याधुनिक बस स्टैंड तैयार कर आमजन को समर्पित किया गया है।

50.15 करोड़ की लागत से बने केंद्रीय बस स्टैंड, पावटा में 12 टिकट काउंटर, एक पर्यटक सूचना केंद्र, वातानुकुलित वेटिंग लॉज सहित 21 बसों के लिए बोर्डिंग बेस तथा 6 बसों के लिए अलाइटिंग बेस होंगे। साथ ही, बस स्टैंड पर 6 लिफ्ट, एटीएम, पोस्ट ऑफिस, पुलिस चौकी, डिस्पेंसरी, पार्सल कार्यालय, क्लॉक रूम एवं ड्राय पेंट्री भी होंगे। इसके अतिरिक्त बस स्टैंड के प्रथम तल पर स्टोर एवं रेस्टोरेंट भी उपलब्ध होंगे।

आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस बस स्टैंड से यात्रियों एवं चालकों को आवागमन में सुविधा होगी। राज्य में महिलाओं को बस किराये में 50 प्रतिशत एवं परीक्षार्थियों को 100 प्रतिशत की छूट दी गई है। रक्षा बंधन के त्योहार पर महिलाओं को किराये में शत-प्रतिशत छूट दी गई है।

इस अवसर पर श्री गहलोत ने आरएसआरटीसी स्मार्ट कार्ड का विमोचन भी किया। इस दौरान उन्होंने बालिकाओं को इंदिरा गांधी स्मार्टफोन योजना के तहत स्मार्टफोन वितरीत किए। साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री निःशुल्क अन्नपूर्णा फूड पैकेट योजना के तहत राशन किट भी वितरित किए।

69 करोड़ 79.55 लाख रुपए के 5 कार्यों का लोकार्पण

1. केंद्रीय आधुनिक बस स्टैंड, पावटा, जोधपुर, लागत राशि लगभग 50.15 करोड़ रुपए
2. राजकीय युवा छात्रावास परिसर, जोधपुर में द्वितीय तल एवं भू-तल पर कमरों का निर्माण एवं प्रथम तल पर ऑडिटोरियम और एयर कंडीशन का निर्माण कार्य, लागत राशि 6.50 करोड़ रुपए
3. जनजाति कन्या छात्रावास (क्षमता 50) जनजाति कन्या बहुउद्देशीय छात्रावास (क्षमता 50) एवं अतिरिक्त आयुक्त कार्यालय, जोधपुर निर्माण कार्य, लागत राशि 12.90 करोड़ रुपए
4. मंडोर उद्यान में स्वर उद्यान, लागत राशि 24.55 लाख रुपए
5. मॉडल उप पंजीयक कार्यालय, जोधपुर

43 करोड़ 11.93 लाख रुपए के 8 कार्यों का शिलान्यास

1. रातानाडा गणेश मंदिर परिसर की तलहटी में मसाला चौक, पहाड़ी की ढलान पर स्टेप गार्डन एवं अन्य विकास कार्य, लागत राशि लगभग 3.36 करोड़ रुपए
2. मुख्य झालामंड रोड पर स्थित अर्बन हाट में सिविल कार्य, लागत राशि लगभग 3 करोड़
3. सूरसागर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड सं. 13 उतर नगर निगम में बापू कॉलोनी, मजदूर कॉलोनी एवं विभिन्न गलियों में सीवरेज लाइन व सीसी सड़क निर्माण कार्य, लागत राशि लगभग 1.48 करोड़ रुपए
4. अमृतलाल गहलोत स्टेडियम चैनपुरा, जोधपुर में सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक एवं स्केटिंग कोर्ट, वालीबॉल कोर्ट, योगा हॉल एवं अन्य विकास कार्य, लागत राशि लगभग 10.75 करोड़ रुपए
5. सामुदायिक सेवा केंद्र डिगाडी का निर्माण कार्य, लागत राशि 3 करोड़ रुपए
6. सामुदायिक सेवा केंद्र पूंजला का निर्माण कार्य, लागत राशि 3 करोड़ रुपए
7. नवीन डाक बंगले का निर्माण कार्य, लागत राशि 14 करोड़ रुपए
8. पी.आर.ओ. ऑफिस भवन जोधपुर मय ऑडिटोरियम का मरम्मत, नवीनीकरण एवं निर्माण कार्य, लागत राशि लगभग 4.50 करोड़ रुपए

करने वाले माता-पिता की मृत्यु कोविड के कारण 31 मार्च 2023 अथवा इससे पूर्व हो चुकी हो। साथ ही, ऐसे अनाथ बालक/बालिका, जिसके माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु पूर्व में हो चुकी हो तथा दूसरे की मृत्यु कोरोना के कारण 31 मार्च 2023 या उससे पूर्व हुई हो एवं अनाथ होने के समय जिसकी आयु 18 वर्ष से अधिक नहीं हो, के भी वयस्क होने पर पे मैट्रिक्स एल-9 तक के पदों पर नियुक्ति प्रदान की जा सकेगी।

राजस्थान बायोमास एवं वेस्ट टू एनर्जी नीति-2023 का अनुमोदन

मंत्रिमंडल ने बायोमास एवं वेस्ट से ऊर्जा उत्पादन एवं थर्मल पॉवर प्लांट में बायोमास की को-फायरिंग को प्रोत्साहन देने के लिए राजस्थान बायोमास एवं वेस्ट टू एनर्जी नीति-2023 का अनुमोदन किया है। इससे राज्य में अवशेष बायोमास एवं कचरे से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा, जिससे राज्य में अवशेष बायोमास को जलाने की आवश्यता नहीं होगी तथा ठोस कचरे का भी बेहतर निस्तारण हो पाएगा। इनसे सम्बन्धित उपक्रमों की निर्माण इकाइयों से राज्य में निवेश एवं रोजगार की संभावनाएं बढेंगी।

शेष एक सेवा नियम में ईडब्ल्यूएस को आयु सीमा में छूट

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के अभ्यर्थियों को अब राजस्थान स्टेट इंजीनियरिंग सर्विसेज में भी अन्य आरक्षित वर्गों के समान आयु सीमा में छूट मिलेगी। मंत्रिमंडल ने राजस्थान स्टेट इंजीनियरिंग सर्विसेज (डायरेक्ट रिक्रूटमेंट बाय कंबाइंड कंपटीटिव एग्जामिनेशन) रूल्स 1991 में 16 अप्रैल 2021 को जारी अधिसूचना के प्रावधान को लागू करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। उल्लेखनीय है कि उक्त सेवा नियम अप्रैल 2021 की अधिसूचना में शामिल होने से रह गया था। अब इस सेवा नियम में ईडब्ल्यूएस के पुरुष अभ्यर्थियों को आयु सीमा में 5 वर्ष एवं महिला अभ्यर्थियों को 10 वर्ष की छूट मिल सकेगी।

बीडीओ को मिलेंगे पदोन्नति के बेहतर अवसर

मंत्रिमंडल ने राजस्थान ग्रामीण विकास राज्य सेवा के अधिकारियों को पदोन्नति के बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए राजस्थान ग्रामीण विकास राज्य सेवा नियम-2007 में आवश्यक संशोधन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। इस स्वीकृति से इस सेवा के अधिकारी, जो वर्तमान में वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के पद पर कार्यरत हैं तथा राजस्थान ग्रामीण विकास राज्य सेवा में 10 साल की सेवा पूर्ण कर चुके हैं, उन्हें चयनित वेतन श्रृंखला के पद पर पदोन्नति प्राप्त हो सकेगी। साथ ही विभाग में चयनित वेतन श्रृंखला के लिए स्वीकृत रिक्त पदों पर योग्य अधिकारी उपलब्ध हो सकेंगे। इससे अधिकारियों की कार्यकुशलता में वृद्धि होगी तथा आमजन के कार्य सुगमता से हो सकेंगे।

राजस्थान सिविल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम, 2017 में संशोधन

विभिन्न राज्य सेवाओं में पदोन्नति के बेहतर अवसर उपलब्ध करवाने के लिए मंत्रिमंडल ने राजस्थान सिविल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम, 2017 में संशोधन के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इस स्वीकृति से पुरातत्व एवं संग्रहालय, रोजगार, आबकारी, वन, पर्यटन तथा उद्योग विभागों में अतिरिक्त पदोन्नति के अवसर एवं उनके वेतनमान उपलब्ध हो सकेंगे। साथ ही, मंत्रिमंडल ने अधीक्षक रेडियोग्राफर का विशेष वेतन 1000 रुपए से बढ़ाकर 1150 रुपए करने का निर्णय लिया है।

ग्रीन हाइड्रोजन नीति-2023 को मिली मंजूरी

मंत्रिमंडल ने राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति-2023 का अनुमोदन किया है। राज्य में ग्रीन हाइड्रोजन आधारित परियोजनाओं से वर्ष 2030 तक 2000 केटीपीए क्षमता के परियोजना स्थापना तथा इनसे सम्बधित उपक्रमों की निर्माण इकाईयों से राज्य में निवेश एवं रोजगार के लिए संभावनाएं बढ़ेगी। उल्लेखनीय है कि राजस्थान अक्षय उर्जा एवं सौर उर्जा क्षमता स्थापना में देश में प्रथम स्थान पर है। साथ ही राजस्थान में ग्रीन हाइडोजन के लिए अनुकूल परिस्थितियां मौजूद है।

फिजियोथैरेपिस्ट भर्ती योग्यता में अब बैचलर डिग्री भी मान्य

मंत्रिमंडल ने राजस्थान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधीनस्थ सेवा नियम-1965 के अंतर्गत फिजियोथैरेपिस्ट संवर्ग की योग्यता में संशोधन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। अब डिप्लोमा के साथ सीनियर सैकंडरी बॉयलोजी (साइंस) और राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त संस्थान से बैचलर इन फिजियोथैरेपिस्ट (बीपीटी) कोर्स को भी सीधी भर्ती के लिए मान्य किया गया है।

कन्हैयालाल हत्याकांड प्रकरण में साहस दिखाने वाले युवकों को नौकरी

उदयपुर के कन्हैयालाल हत्याकांड के मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार करवाने में सहयोग करने वाले दो युवक श्री प्रह्लाद सिंह चुण्डावत एवं श्री शक्ति सिंह चुंडावत को नियमों में शिथिलन प्रदान कर कनिष्ठ सहायक के पद पर सरकारी नौकरी दिये जाने का निर्णय किया है।

जोधपुर में स्थापित होगा राजस्थान राज्य क्रीड़ा संस्थान

मंत्रिमंडल ने बजट घोषणा के क्रम में जोधपुर में राजस्थान राज्य क्रीड़ा संस्थान की स्थापना के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। इससे राज्य में अत्याधुनिक खेल प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित हो सकेगा। खिलाडियों को उचित ढंग से व्यवस्थित खेल प्रशिक्षण दिया जा सकेगा।

आरएमएससीएल की सरचार्ज दर अब होगी 11 प्रतिशत

मंत्रिमंडल ने राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (आरएमएससीएल) द्वारा सरकार के लिए औषधियों एवं उपकरणों की खरीद कर आपूर्ति किए जाने से प्राप्त 5 प्रतिशत सरचार्ज/लाभांश को बढ़ाकर 11 प्रतिशत किए जाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। इस स्वीकृति से आरएमएससीएल की कार्य योजनाओं में विस्तार के अन्तर्गत बजट घोषणा के क्रम में चिकित्सा संस्थानों का निर्माण किया जा सकेगा।

आरडीपीएल का संचालन अब राज्य सरकार के अधीन

मंत्रिमंडल ने राजस्थान ड्रग एंड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (आरडीपील) को राजकीय उपक्रम के रूप में संचालित करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। इस स्वीकृति से अब जीवनरक्षक दवाइयों का उत्पादन सुगमता से किया जा सकेगा। निःशुल्क दवा योजना में सस्ती और गुणवत्तापूर्ण औषधियों की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। राज्य में रोजगार के नवीन अवसर सृजित होंगे।

शिल्प एवं माटी कला बोर्ड अब श्री यादे माटी कला बोर्ड

मंत्रिमंडल ने शिल्प एवं माटी कला बोर्ड का नाम श्री यादे माटी कला बोर्ड किए जाने का फैसला लिया है। बोर्ड मिट्टी से काम करने वाले दस्तकारों की

931.92 करोड़ रुपए के 409 विकास कार्यों का शिलान्यास-लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 6 सितंबर को भीलवाड़ा के गुलाबपुरा में भीलवाड़ा दुग्ध संघ के नवीन संयंत्र तथा अन्य विकास कार्यों के शिलान्यास-लोकार्पण समारोह को संबोधित किया। श्री गहलोत ने इस दौरान पशुधन सहायक का पदनाम पशुधन निरीक्षक करने, प्रथम श्रेणी के पशु चिकित्सा अधिकारियों को 5 हजार रुपए प्रतिमाह विशेष परियोजना भत्ता तथा पशुधन सहायक, पशुधन प्रसार अधिकारी का विशेष हार्ड ड्यूटी भत्ता 500 रुपए किए जाने की घोषणा की।

इस दौरान श्री गहलोत ने मुख्यमंत्री कामधेनु पशु बीमा योजना का शुभारंभ किया। इस दौरान इंदिरा गांधी गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना में 18.33 लाख लाभार्थियों को जुलाई माह की 77.68 करोड़ रुपए की सब्सिडी डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित की गई। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री द्वारा 173 दिव्यांगजनों को स्कूटी वितरित की गई।

705.76 करोड़ रुपए की लागत के कुल 259 विकास कार्यों का शिलान्यास

- 4 करोड़ रुपए की लागत से पंचायती राज विभाग के 2 विकास कार्य
- 138.15 करोड़ रुपए की लागत से दुग्ध एवं गोपालन विभाग के 3 विकास कार्य
- 194.94 करोड़ रुपए की लागत से स्वायत्त शासन विभाग का 1 विकास कार्य
- 4.50 करोड़ रुपए की लागत से उच्च शिक्षा विभाग का 1 विकास कार्य
- 19.96 करोड़ रुपए की लागत से शिक्षा विभाग के 39 विकास कार्य
- 245.22 करोड़ रुपए की लागत से सार्वजनिक निर्माण विभाग के 149 विकास कार्य
- 60.64 करोड़ रुपए की लागत से चिकित्सा विभाग के 27 विकास कार्य
- 4.73 करोड़ रुपए की लागत से वन विभाग के 3 विकास कार्य
- 21.61 करोड़ रुपए की लागत से पीएचईडी के 31 विकास कार्य
- 12 करोड़ रुपए की लागत से कला एवं संस्कृति विभाग के 3 विकास कार्य

226.15 करोड़ रुपए की लागत के कुल 150 विकास कार्यों का लोकार्पण

- 49.90 लाख रुपए की लागत से पंचायतीराज विभाग का 1 विकास कार्य
- 84.83 करोड़ रुपए की लागत से डेयरी एवं गोपालन विभाग के 3 विकास कार्य
- 1.82 करोड़ रुपए की लागत से एवीवीएनएल का 1 विकास कार्य
- 4.34 करोड़ रुपए की लागत से उच्च शिक्षा विभाग का 1 विकास कार्य
- 3.75 करोड़ रुपए की लागत से पशुपालन विभाग के 7 विकास कार्य
- 3.74 करोड़ रुपए की लागत से शिक्षा विभाग के 9 विकास कार्य
- 31.34 करोड़ रुपए की लागत से सार्वजनिक निर्माण विभाग के 8 विकास कार्य
- 19.21 करोड़ रुपए की लागत से चिकित्सा विभाग के 18 विकास कार्य
- 57.69 करोड़ रुपए की लागत से पीएचईडी के 99 विकास कार्य
- 15.21 लाख रुपए की लागत से स्वायत्त शासन विभाग का 1 विकास कार्य
- 5.23 करोड़ रुपए से कौशल नियोजन एवं उद्यमिता विभाग का 1 विकास कार्य
- 13.51 करोड़ रुपए की लागत से कृषि विभाग का 1 विकास कार्य

आय में वृद्धि, तकनीकी प्रशिक्षण एवं उन्नत किस्म के औजार उपलब्ध कराने, मेलों एवं प्रदर्शनियों से जोड़ने और आधारभूत सुविधाएं विकसित करने के लिए कार्य करेगा। साथ ही करमा बाई महिला राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) का नाम करमा बाई राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) किए जाने का निर्णय लिया गया है।

प्रगति के पथ पर राजस्थान का पर्यटन

ऐतिहासिक धरोहर, पुरा संपदा और रंग-बिरंगी संस्कृति राजस्थान के पर्यटन को एक विशेष रूप देती है। पर्यटन राजस्थान की अर्थव्यवस्था में एक अहम स्थान रखता है। अन्य आर्थिक क्षेत्रों की तुलना में पर्यटन में निवेश से सर्वाधिक रोजगार सृजित होता है। प्रदेश के आर्थिक विकास में पर्यटन के महत्व को देखते हुए राज्य सरकार ने कई बड़े नीतिगत निर्णय लिए हैं। पर्यटन के विकास की दिशा में अनेक कारगर कदम उठाए गए हैं। सरकार के इन फैसलों और प्रयासों का ही परिणाम है कि राजस्थान का पर्यटन निरंतर व्यापक रूप ले रहा है और दुनियाभर में आकर्षण का केंद्र बन गया है। राज्य सरकार ने प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए कई ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। इन निर्णयों से राज्य में पर्यटन गतिविधियों को न केवल गति मिली है, बल्कि निवेश के नए द्वार भी खुले हैं। साथ ही लाखों लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मिल रहा है। राज्य सरकार पर्यटन स्थलों को विकसित कर रोजगार के अधिकाधिक अवसर सृजित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। राज्य में विभिन्न धार्मिक एवं अन्य पर्यटन स्थलों पर सीएसएस के तहत विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। वर्ष 2023-24 के बजट प्रावधान के तहत प्रदेश में पर्यटन विकास के विभिन्न कार्य करवाए जा रहे हैं। इन कार्यों से न केवल पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा, बल्कि निवेश में वृद्धि और रोजगार के नवीन अवसर भी सृजित होंगे।

प्रदेश के युवाओं को अधिकाधिक रोजगार के अवसर मिलें, इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन क्षेत्र का व्यापक संवर्धन किया जा रहा है। पर्यटक सहायता बल एवं पर्यटकों की सहायता के लिए 500 पर्यटक मित्र सहित 5,000 स्थानीय और 1,000 राज्य स्तर के गाइड के चयन और प्रशिक्षण की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

प्रवीण प्रकाश चौहान
जनसंपर्क अधिकारी

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना

राज्य सरकार द्वारा राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2019 (RIPS-2022) में दिए गए अतिरिक्त लाभ से पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। वर्ष 2020 में 5 करोड़ के नवीन निवेश करने वाली पर्यटन इकाइयों को थ्रस्ट सेक्टर का दर्जा दिया गया है। नीति के तहत 25 लाख कैपिटल सब्सिडी या 5 वर्ष तक 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान दिया जाएगा। साथ ही नवीन पर्यटन इकाइयों को भूसंपरिवर्तन शुल्क में 100 प्रतिशत छूट एवं स्टांप ड्यूटी में 100 प्रतिशत छूट (75 प्रतिशत अग्रिम एवं 25 प्रतिशत इकाई प्रारंभ होने पर) दी गई है। नई राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (RIPS) -2022 लागू कर दी गई है। इस नीति से प्रदेश में नई इकाइयों की स्थापना करने के प्रति रुचि बढ़ेगी और रोजगार के नवीन अवसर भी सृजित होंगे।

निवेश से पर्यटन को लगेंगे पंख

राज्य सरकार द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में निवेश के लिए कई नवीन योजनाएं लागू की गई हैं। आवासीय परिसरों में 6 से 20 कमरों की गेस्ट हाउस योजना लागू की गई है। साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए स्वघोषणा के आधार पर 1 से 5 कमरों की होम स्टे पेईंग गैस्ट योजना भी शुरू की गई है। हेरिटेज प्रमाण पत्र प्रक्रिया को सरलीकृत किया गया है। इन योजनाओं से न केवल पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा मिलेगा।

नई पर्यटन नीति

राज्य में पर्यटन के उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु राज्य सरकार के विजन

के रूप में राजस्थान पर्यटन नीति 2020 लागू की गई है। नीति के तहत ग्रामीण पर्यटन और साहसिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। युवाओं को समुचित प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से धौलपुर, सवाई माधोपुर व झालावाड़ में होटल प्रबंधन और बारां में खाद्य शिल्प संस्थान का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है।

राजस्थान बनेगा आकर्षक निवेश हब

पर्यटन सेक्टर में राजस्थान एक आकर्षक निवेश हब के रूप में उभरा है। राजनिवेश पोर्टल के माध्यम से 10 करोड़ से अधिक निवेश की पर्यटन इकाई परियोजनाओं का समयबद्ध अनुमोदन किया गया है। फिल्म शूटिंग अनुमति ट्रेवल और टूर ऑपरेटर पंजीयन की प्रक्रिया को पूर्णतः ऑनलाइन किया गया है। इन्वेस्ट राजस्थान 2022 के तहत पर्यटन से जुड़े 11,415 करोड़ रुपए के 347 एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इससे लगभग 35,500 लोगों को रोजगार के अवसर मिल सकेंगे।

फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति

राज्य सरकार ने प्रदेश में फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति 2022 भी लागू की है। इसमें फिल्म शूटिंग अनुमति प्रक्रिया को समस्त स्तरों पर ऑनलाइन किया गया है। नीति के अंतर्गत देशी व विदेशी फिल्म निर्माताओं को 2 करोड़ तक की सब्सिडी एवं राज्य सरकार के अधीन स्मारकों व स्थलों पर फिल्म शूटिंग निशुल्क करने का प्रावधान है। राजस्थानी भाषा की फिल्मों को अधिकतम 25 लाख रुपए की सब्सिडी एवं स्वर्ण कमल, रजत कमल व विदेशी पुरस्कार प्राप्त राजस्थानी फिल्मों को 1 करोड़ तक की सहायता का प्रावधान किया गया है।

पर्यटन को उद्योग का पूर्ण दर्जा

टूरिज्म एवं हॉस्पिटैलिटी सेक्टर को इंडस्ट्री सेक्टर के रूप में पूर्ण मान्यता दी गई है। अब इससे भविष्य में इस क्षेत्र पर इंडस्ट्रियल नॉर्म्स के अनुसार ही गवर्नमेंट टैरिफ एवं लेवी देय होंगे। पर्यटन विभाग द्वारा इन इकाइयों को योजनान्तर्गत एंटाइटलमेंट सर्टिफिकेट जारी किया जाता है। एंटाइटलमेंट सर्टिफिकेट के आधार पर पर्यटन इकाइयां राज्य सरकार के संबंधित विभागों से औद्योगिक टैरिफ एवं लेवी के लाभ प्राप्त करने के लिए पात्र हो जाती हैं।

राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना, 2022

राज्य सरकार द्वारा योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में बिना भू-संपरिवर्तन व भवन अनुमोदन के कृषि पर्यटन इकाइयों, कैम्पिंग साइट, कैरावैन पार्क व ग्रामीण गेस्ट हाउस की स्थापना की जा रही है। इन इकाइयों को स्टांप ड्यूटी में 100 फीसदी छूट, 10 वर्ष तक एसजीएसटी का 100 प्रतिशत पुनर्भरण एवं 25 लाख तक के ऋण पर 9 फीसदी ब्याज सब्सिडी दी जा रही है।

पर्यटन विकास कोष का गठन

मुख्यमंत्री ने पर्यटन संबधी कार्यों को गति देने के लिए पर्यटन विकास कोष की राशि को 1,000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 1,500 करोड़ रुपए किया गया है। इनमें से 60 प्रतिशत राशि आधारभूत सुविधाओं को विकसित करने एवं शेष 40 प्रतिशत करोड़ राशि राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन गतिविधियों की ब्रांडिंग व प्रचार-प्रसार पर खर्च की जाएगी।

लाइट एंड साउंड शो कर रहे है पर्यटकों को आकर्षित

मुख्यमंत्री की बजट घोषणानुसार नाइट टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर लाइट एंड साउंड शो विकसित किए जा रहे हैं।

लोक कलाकारों को आर्थिक संबल

मुख्यमंत्री की बजट घोषणा अनुसार लोक कलाकारों को दिए जाने वाले मानदेय व अन्य भत्तों में 25 प्रतिशत तक की वृद्धि की गई है। इससे लोक कलाकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ ही उन्हें आर्थिक संबल भी मिल रहा है।

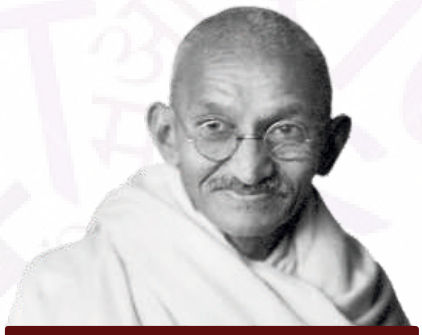

स्वराज की भाषा

प्रोफेसर सर्वदमन मिश्र
राजकीय महिला महाविद्यालय, अजमेर

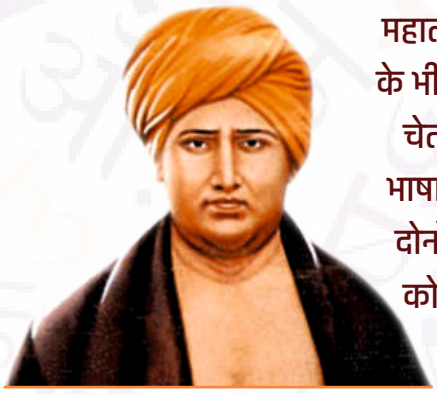

स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी दोनों ही इस बात के भी बड़े पैरोकार थे कि राष्ट्रीय चेतना का निर्माण स्वयं की भाषा के बिना नहीं हो सकता। दोनों ने ही खासतौर पर हिंदी को अपने माध्यम के रूप में चुना।

स्वराज शब्द पर किसी भी तरह के चिंतन में आधुनिक भारत के दो प्रमुख परिवर्तनवादियों का जिक्र जरूर होता है। एक ने भारत की मुख्य धार्मिक परंपरा में आमूल परिष्करण का प्रयास किया और दूसरे ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध चल रहे एक मंथर से राजनीतिक आंदोलन को सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय जनान्दोलन में कायान्तरित कर दिया। इन दोनों में जहां स्वामी दयानंद सरस्वती 'स्वराज' के विचार के पहले प्रयोक्ता हैं, वहीं महात्मा गांधी 'स्वराज' के विचार में नए अर्थ गुंफन करने वाले हैं। दोनों ही इस बात के भी बड़े पैरोकार थे कि राष्ट्रीय चेतना का निर्माण स्वयं की भाषा के बिना नहीं हो सकता। दोनों ने ही हिंदी को अपने माध्यम के रूप में प्रधानत: चुना। अंतर बस इतना है कि दयानंद सरस्वती का बल एकरूपता पर था, जबकि गांधी जी वैविध्य के पोषक थे, इसलिए भारतीय भाषाओं के समान संवर्धन-संरक्षण पर उनका बल था। 1920 में भाषायी आधार पर प्रांतीय कमेटियों का गठन उन्हीं के हस्तक्षेप का परिणाम था। भारत में दिए गए गांधी जी के प्रारंभिक वक्तव्यों में सबसे उल्लेखनीय 1916 का वह भाषण हैं जो उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के अवसर पर दिया था। गांधीजी को अंग्रेजी में बोलने के लिए कहा गया और उन्होंने तत्क्षण ही विडंबना को भांप लिया। गांधीजी ने अपने वक्तव्य की शुरुआत में कहा - "यह हमारे लिए अत्यंत अपमान और शर्म की बात है कि आज शाम, इस पवित्र शहर में, इस महान कॉलेज के साये में, मुझे अपने देशवासियों को उस भाषा में संबोधित करने के लिए मजबूर किया गया है जो मेरे लिए विदेशी है।" (It is a matter of deep humiliation and shame for us that I am compelled this evening, under the shadow of this great college, in the sacred city, to address my countrymen in the language that is foreign to me.) ब्रिटिश भारत में पहली बार ही ऐसा हुआ था कि किसी ऐसे मंच से जहां शासन की भी सहभागिता हो, अंग्रेजी का विरोध किया गया हो। गवर्नर लॉर्ड हार्डिंग स्वयं उद्घाटनकर्ता के रूप में उपस्थित थे, ऐनी बेसेंट आयोजनकर्ताओं में से एक थीं। ऐनी बेसेंट ने गांधीजी को रोकने का प्रयास भी किया लेकिन गांधीजी ने अडिग और अविरल रूप से एक लंबा वक्तव्य दिया और राष्ट्र निर्माण के बहुतेरे पहलुओं को छूआ।

भारतीय नेताओं में राष्ट्र निर्माण की सबसे बेहतर समझ गांधीजी की थी। वे पश्चिम से आक्रांत और अभिभूत हुए बिना सच्चे स्वराज के संधान में जुटे थे। गांधीजी मानते थे कि 'राष्ट्रीय आंदोलन स्वत्व की पहचान और उससे तादात्म्य की प्रक्रिया है और राजनीतिक स्वतंत्रता उसमें अनुषंगी मात्र है।' 1909 में हिंद स्वराज में उन्होंने लिखा, "सच्चा स्वराज तभी संभव होगा जब हम अंग्रेजों की नकल छोड़कर अपना मौलिक नैसर्गिक मुहावरा गढ़ेंगे।" इसीलिए राजनीतिक स्वराज की पूर्व शर्त के रूप में उन्होंने स्वयं पर राज (Rule Over Self) को देखा। सामाजिक-सांस्कृतिक परिष्करण और उसके उपरांत बने एक आत्मविश्वासी एवं निर्भीक समाज के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता स्वयं सिद्ध हो सकती है, ऐसा वे निरंतर याद दिलाते थे। वस्तुत: राष्ट्रीय आंदोलन में जो सामाजिक-धार्मिक सुधार की धारा थी, वह एक निर्भीक एवं आत्मविश्वासी समाज बनाने का गांधीवादी प्रकल्प ही था।

कोलवी की गुफाएं

कोलवी की गुफाएं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध झालावाड़ जिले में स्थित हैं। ये गुफाएं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। मौजूदा समय में इन गुफाओं की संख्या 90 है जो पहले 100 से अधिक थीं। इनकी खोज 1853 ई. में डॉ. इम्पे ने की थी। 1864 में जनरल कनिंघम ने अपनी रिपोर्ट में इन गुफाओं का जिक्र किया था। इन गुफाओं को महाभारत काल से भी जोड़ा जाता है। इनका निर्माण गांव के दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ी की ऊंची चोटी पर पहाड़ी को काटकर उत्तर-दक्षिण-पूर्व दिशाओं में किया गया है। छठी से आठवीं शताब्दी के मध्य निर्मित अधिकतर गुफाएं नष्ट हो चुकी हैं लेकिन दक्षिण दिशा में स्थित गुफाएं अच्छी स्थिति में होने के साथ-साथ पुरातत्व महत्त्व की भी हैं। यहां पर 5 कक्ष, तीन स्तूप और दो मंदिर दर्शनीय हैं। स्तूप और मंदिरों को चक्रों और घंटियों से सजाया गया है।

आलेख और छाया : **अनुप्रिया**
जनसंपर्क अधिकारी

Postal Regd. No. Jaipur City/413/2023-25
Registered with Registrar of Newspapers for India under R. No. 56175/1991

तस्वीर बदलाव की

वॉचटॉवर

राजस्थान सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम और अन्य योजनाओं की विस्तृत जानकारी
https://jankalyan.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।
@DIPRRajasthan

प्रकाशक व मुद्रक - सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक, पुरुषोत्तम शर्मा द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के लिए, शासन सचिवालय, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित
सम्पादक - श्रीमती अलका सक्सेना, मैसर्स रेनबो ऑफसेट प्रिन्टर्स, बी-3, सुदर्शनपुरा, जयपुर से मुद्रित, 'राजस्थान सुजस' - पृष्ठ संख्या 60, लागत मूल्य 33.30 रुपये • 1,00,000 प्रतियां